अध्याय-1

हमारा अतीत

bfrgkl ge vrhr dh tkudkjh nrk gSA vrhr dk tkuuk blfy, t:jh gS fd vrhr dk tkudj gh ge orZeku dk le> ldr gS vkj Hkfo"; d fuekZ.k d fy, lkp ldr gSA bfrgkl ekuo lekt dh lkefgd Lefr gSA ;fn dkbZ lekt viu bfrgkl dk ugh tkurk gS rk mldh gkyr oSlh gh gS tSl fdlh ,Sl O;fDr dh ftldh ;knnk'r xqe gk pqdh gSA

आप जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । हम सभी समाज में रहते हैं । यह समाज हमारे माता–पिता, परिवार, गांव, शहर, देश से होकर पूरे विश्व तक फैला है ।आपने पढ़ा होगा कि आज की दुनिया एक "वैश्विक गाँव" **(global village)** है ।क्या हमारा समाज सदा से ऐसा ही था या इसका धीरे–धीरे विकास हुआ ? इस सवाल का जवाब हमें इतिहास से मिलता है ।आप यह भी जानते होंगे कि इतिहास का संबंध अतीत के उस काल से है जिसके बारे में हमें लिखित साक्ष्य मिलते हैं ।इसके अलावा अतीत का एक काल वह भी है जिसके बारे में हमें लिखित जानकारी पुस्तकों या रचनाओं में नहीं मिलती बल्कि जमीन के नीचे दबे पुराने अवशेषों, वस्तुओं, सिक्कों और अभिलेखों में मिलती है । यह काल पूर्व ऐतिहासिक काल कहलाता है ।बहुत से ऐसे समाज भी हैं विशेषकर कबायली या जनजातीय समाज हमारे साथ इसी युग में जी रहे हैं लेकिन उनका इतिहास कभी लिखा नहीं गया । उनके बीच जो किंवदंतियां, किस्से–कहानियाँ रीति–रिवाज प्रचलित हैं उन्हीं के माध्यम से हम ऐसे समाज का इतिहास जानते हैं ।तो आप को यह अंदाज हुआ होगा कि इतिहास को जानने के साधन या स्रोत अनेक हैं और विभिन्न प्रकार के हैं ।

इन्हीं तमाम साधनों या स्रोतों के आधर पर इतिहासकार हमें अतीत के बारे में जानकारी देते हैं ।मनुष्य की उत्पत्ति कैसे हुई, उसने कैसे साथ मिलकर रहना आरंभ किया

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

कैसे अपने जीवन की जरूरतें पूरी की, कैसे शिकार करके और कन्द–मूल इकट्ठा करके अपना भोजन पाया, कैसे खेती करना सीखा, गुफाओं से निकलकर मकान बनाकर उनमें रहना शुरू किया कपड़े पहनना आरंभ किया आग के उपयोग को जाना, औजार–हथियार बनाये, दूरस्थ स्थानों तक यात्राा के लिए सवारी का उपयोग सीखा, व्यापार किया, मुद्रा का उपयोग आरंभ किया, राज्यों और साम्राज्यों का गठन किया, उनका शासन चलाने के लिए नियम–कानून बनाए कैसे साम्राज्य संगठित हुए और धीरे–धीरे बिखर गये। उत्थान और पतन का चक्र किस प्रकार चलता रहा इन सब बातों की जानकारी आप इतिहास से प्राप्त करते हैं। आपकी पाठ्य–पुस्तक इसी संबंध में आपको जानकारी प्रदान करेगी ।

सबसे पहले आप इतिहास की पृष्ठभूमि अर्थात् उसकी बुनियादी बातों को समझेंगे। किसी भी मानव–समूह या समाज का विकास एक निर्धारित स्थान पर होता है। इस विकास में स्थानीय परिस्थितियाँ, भौगोलिक स्थिति, पर्यावरण की विशेषताएँ सभी का योगदान होता है । कभी आपने विचार किया है कि नदी–घाटियों में ही आरंभिक सभ्यताओं का विकास क्यों हुआ ?आप ध्यान देंगे कि नदियों के किनारे ही उपजाऊ भूमि का बाहुल्य था, यहां खेती का काम आसान था, नदियों के रास्ते व्यापार कि भी सुविधा थी, ऐसी ही अनेक परिस्थितियाँ सभ्यता के विकास में सहायक होती है । पर्यावरण हमारे रहन–सहन खान–पान, वेष–भूषा को प्रभावित करता है। चूंकि अभी आप भारत के प्राचीन इतिहास के बारे में पढ़ रहे हैं इसलिए भारत में कहां–कहां आरंभिक सभ्यताओं का विकास हुआ और वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ क्या थीं ? इसे जानना आपके लिए जरूरी है । फिर आप कालक्रम के संबंध में जानेंगे। इतिहास की प्रक्रिया बहुत लम्बे काल तक फैली है। सुविधा के लिए हम इसे छोटे–छोटे कालों में बांट देते हैं । ऐसा क्यों किया जाता, किस आधार पर किया जाता है, यह आप जानेंगे। फिर आप यह भी देखेंगे कि अतीत की जानकारी किन साधनों से आप प्राप्त करते हैं और तुलनात्मक रूप से इनका क्या महत्व और उपयोगिता है ।

तीसरे अध्याय में आप मनुष्य के जीवन के उस चरण के बारे में पढ़ेंगे जब वह संगठित होकर रहने लगा था अर्थात् एक समाज का विकास तो होने लगा था मगर सभ्यता की किरण

© DSERT, WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अभी नहीं फूटी थी। इन मनुष्यों का जीवन सरल था परन्तु कठिन भी । कंद—मूल जमा करके या शिकार करके ये अपनी जरूरतों को पूरा करते थे। फिर इन्होंने अपनी सुविधा के लिए पत्थरों के औजार और हथियार बनाने शुरू किए। अब शायद आपको इनका महत्व आसानी से समझ में नहीं आए, मगर यह मनुष्य द्वारा पहला आविष्कार था। उसी तरह आग का उपयोग मनुष्य ने सीखा। यह भी एक बहुत महत्वपूर्ण 'खोज' थी क्योंकि मनुष्य के जीवन में मौलिक परिवर्तन आया । अब वह अपना खाना पकाकर खाने लगा। आग से खुद को ठण्ड से और जानवरों से बचाने लगा। उसके जीवन का स्तर पहले से उन्नत हुआ।

चौथे अध्याय में आप संगठित समाज की जीवन—शैली को समझ सकेंगे । खेती तो मनुष्य ने सीख ली थी। अब पशुपालन, व्यापार और यातायात में प्रगति आई। स्थिर और सुखी जीवन ने सोच—विचार के लिए अवसर प्रदान किया। जीवन के अर्थ और महत्व को समझने, मृत्योपरान्त जीवन की कल्पना करने की क्षमता बढ़ी। मृतकों के दाह—संस्कार के तरीके सोचे गए । मिट्टी में शव को गाड़ने की प्रथा चली जिसके साक्ष्य इस युग से मिलने लगते हैं ।

पांचवें अध्याय में आप 'हड़प्पा संस्कृति' के बारे में पढ़ेंगे । यह वह चरण है जब मनुष्य ने अन्य अर्थों में सभ्य जीवन आरंभ कर लिया था, मगर लिपि विकसित न होने के कारण अपने इतिहास के लिखित साक्ष्य उसने नहीं छोड़े हैं । पुरातत्व या जमीन के नीचे गड़ी वस्तुओं की खोज और अध्ययन से इस 'संस्कृति' की विशेषताएँ हम जानते हैं । अब नगरों का विकास हुआ, प्रशासन तंत्र, नगर—निर्माण को योजनाबद्ध रूप, व्यापार, कला, धर्म आदि जीवन के अनेक क्षेत्रों में मनुष्य ने एक उन्नत जीवन शैली को अपनाया। इन लोगों को लिपि की भी जानकारी थी। अनेक मुहरों पर उनके लेख मिले हैं लेकिन अभी तक उनको पूरी तरह पढ़ा नहीं जा सका है, इसलिए हमें पुरातात्विक सामग्री पर ही निर्भर करना पड़ता है ।

छठे अध्याय में आप वैदिककाल के संबंध में पढ़ेंगे । वैदिक युग बौद्धिक और आध्यात्मिक प्रगति का काल रहा। वेदों की रचना हुई जो आरंभ में लिखित रूप में नहीं थे । इसीलिए इनके लिए श्रुति शब्द का भी प्रयोग होता है । कालांतर में इनको लिखा गया । हड़प्पा संस्कृति के विपरीत इस चरण के लिए 'वैदिक सभ्यता' शब्द का प्रयोग किया जाता है क्योंकि

© RSTPPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अब धार्मिक और बौद्धिक रूप से मनुष्य एक उन्नत परिपक्व और 'सभ्य' अवस्था में जा चुका था । विकास का क्रम चलता रहा और पूर्व वैदिक से उत्तर वैदिक काल के बीच जीवन का सरल रूप ज्यादा विकसित और जटिल बनता गया।

सातवां अध्याय उस चरण को दर्शाता है जब भौतिक जीवन और बौद्धिक जीवन दोनों में हुई प्रगति का एक समन्वित रूप सामने आया। राज्यों के विकास का क्रम आरंभ हुआ और इससे संबंधित सैनिक, प्रशासनिक और राजनयिक गतिविधियां आरंभ हुई। दूसरी ओर धर्म और दर्शन के क्षेत्र में नये विचार उत्पन्न हुए । बौद्ध और जैन धर्म के रूप में नयी विचारधराएँ उत्पन्न हुई जिनका प्रभाव भारत ही नहीं विदेशों पर भी पड़ा। इस बौद्धिक विकास के संबंध में आप आठवें अध्याय में पढेंगे । आप को शायद यह पता नहीं हो कि इस चरण में बिहार का क्षेत्र, भारत का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र बना । विश्व के प्रथम गणराज्य की और भारत के पहले साम्राज्य की स्थापना बिहार में हुई। इसी तरह बौद्ध और जैनधर्म की उत्पत्ति का केन्द्र भी बिहार ही था। अध्याय–9 में आप मौर्य साम्राज्य का इतिहास पढ़ेंगे । विशेषकर अशोक महान् की उपलब्धियों से आप परिचित होंगे जिसने पहली बार एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की और भारत के पड़ोसी राज्यों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए। आगे चलकर इन्हीं संबंधों से भारत के सांस्कृतिक प्रभाव का विदेशों में विस्तार हुआ।

दसवां अध्याय मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद भारत की राजनैतिक स्थिति को दर्शाता हैं विशाल साम्राज्य के स्थान पर अब छोटे–छोटे क्षेत्रीय राज्य भारत में स्थापित हुए। इनमें कुछ ऐसे भी राज्य थे जिसकी स्थापना विदेशी मूल के शासकों ने की थी। इसके फलस्वरूप सांस्कृति आदान–प्रदान की प्रक्रिया और समृद्ध हुई। इसी काल में दक्षिण भारत में भी सभ्यता के विकास के साक्ष्य हमें मिलते हैं ।

ग्यारहवाँ अध्याय सुदूर क्षेत्रों में भारत के प्रभाव के विस्तार के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए सहायक हैं आप यह जान सकेंगे कि किस प्रकार बौद्धधर्म और उसके प्रभावाधीन कला और शिल्प के क्षेत्र में नई परम्पराओं का विकास हुआ।

बारहवें और तेरहवें अध्याय में आप भारत में होनेवाली राजनैतिक, प्रशासनिक, आर्थिक

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

और सांस्कृतिक प्रगति के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे । जबकि अन्तिम अध्याय में आप कुछ प्रमुख इतिहासकारों के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

बच्चो उपर्युक्त उदाहरणों से आपको यह अनुमान हुआ होगा कि इतिहास का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण और उपयोगी है आपने देखा होगा कि मानव समाज के विकास का क्रम एक लम्बे समय तक फैला है। इसमें उत्थान और पतन दोनों बारी–बारी से प्रस्तुत होते हैं । इसके पीछे अनेक कारण होते हैं। इतिहास हमें उन कारणों का बोध कराता है और तभी हम अपने अतीत को जान पाते हैं अतीत की जानकारी हमें अपने वर्तमान और भविष्य को बेहतर बनाने में सहायता प्रदान करती है, यही कारण है कि इतिहास को समझना हमारे लिए आवश्यक है और अनिवार्य भी ।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

Developed by: ABSOL www.absol.in

अध्याय-2

क्या, कब, कहाँ और कैसे?

lkuh dk loky&lkuh viuh lgyh fidh d lkFk Vyhfotu n[k jgh FkhA Vyhfotu ij fn[kk;k tk jgk Fkk fd ekuo /kjrh ij gtkjk lky l jg jgk gA lkuh lkpu yxh vkj fidh l ckyh bru o"kk igy D;k gvk ;g dkb dl tku ldrk g \ fidh tk lkuh l ikp o"k dh cMh Fkh bl i'u dk mÙkj fuEu rjhd l nuk 'k: fd;kA

gtkjk lky igy D;k gvk] ;g dl irk yxk, \

कल क्या हुआ था ?यह जानने के लिए हम रेडियो, टेलीविजन या फिर अखबार की मदद लेते हैं। दस–बीस साल पहले क्या हुआ–यह हम अपने माता–पिता, दादा–दादी या नाना–नानी से जान लेते हैं। लेकिन हजारों वर्ष पहले क्या हुआ था? इसकी जानकारी हम इतिहास से प्राप्त करते हैं। यथा–हमारे पूर्वज कौन थे? वे कहाँ रहते थे? वे क्या खाते थे और कैसे कपड़े पहनते थे? अतीत से लेकर वर्तमान तक जानकारियाँ हमें इतिहास से ही मिलती है ।

vè;:u का काल fu/kkj.k dl dj \

अतीत से लेकर वर्तमान तक विभिन्न घटनाओं का तिथि क्रमानुसार अध्ययन एवं विश्लेषण ही इतिहास का विषय है। इस काम में आसानी के लिए इतिहास को काल खण्डों में बांटा जाता है । सामान्यतः तीन कालखण्ड निर्धारित किए जाते हैं–प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक । किन्तु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ऐतिहासिक प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है और यह विभाजन इस प्रक्रिया में कहीं भी बाधा नहीं बनते ।

प्रत्येक ऐतिहासिक युग की अपनी विशेषताएँ होती है । भारत में प्राचीन काल मानव जाति के आरंभिक क्रियाकलापों से आठवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध(700–750ई०)तक निर्धारित किया

© DSERT WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

जाता है। इसके आरंभिक चरण को पूर्व ऐतिहासिक काल भी कहा जाता है, क्योंकि उस युग की घटनाओं का कोई क्रमबद्ध लिखित इतिहास उपलब्ध नहीं है । इस काल में मनुष्य ने आग एवं पहिया का उपयोग सीखा, खेती एवं पशुपालन सीखा और इसी समय गांव एवं कस्बों तथा शहरों का विकास हुआ। छठी शताब्दी ई.पू. से सुसंगठित राज्यों का निर्माण आरम्भ हुआ और कालान्तर में विशाल साम्राज्यों की स्थापना हुई। छठी शताब्दी ई. तक आते–आते इन साम्राज्यों का विघटन होने लगा और पुनः छोटे–छोटे राज्य अस्तित्व में आने लगे ।

आठवीं शताब्दी के मध्य (750 ई0) तक ये राज्य धीरे–धीरे कमजोर पड़ने लगे परन्तु व्यापार एवं नगरों का फिर से विकास हुआ। ग्यारहवीं शताब्दी तक नये सैन्य साधन और उन्नत उत्पादन तकनीक का विकास हुआ। इस्लाम के माध्यम से नई विचारधारा का भारत में आगमन हुआ और पुनः भारत में विशाल साम्राज्यों का गठन संभव हुआ। सांस्कृतिक समन्वय भी हुआ और सामाजिक सामंजस्य भी स्थापित हुआ। यह प्रक्रिया अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पुनः पतनशील अवस्था में आ गयी। इसी के साथ दूसरा प्रमुख काल या मध्यकाल का अन्त हुआ ।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

आधुनिक काल का प्रारंभ अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से हुआ, जब पश्चिमी देशों के द्वारा नए विचार और नयी प्रशासनिक व्यवहार भारत में लायी गयी । इससे शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार–व्यवस्था एवं आवागमन में विशेष प्रगति हुई। दुर्भाग्यवश यह नयी प्रशासनिक व्यवस्था विदेशियों द्वारा स्थापित की गयी थी जो हमारे देश के आर्थिक संसाधनों का लाभ प्राप्त करना चाहते थे । इस व्यवस्था को 'उपनिवेशवाद' कहते हैं । इसके अन्तर्गत किसी उन्नत देश किसी दूसरे कमजोर देश पर अधिकार कर उसका आर्थिक शोषण करता है । स्वाभाविक था कि भारतीयों में इसके विरुद्ध एक चेतना जगी। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से भारत में इस औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलन सक्रिय हुआ जो सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों से प्रेरित रहा । सन् 1947 में भारत को आजादी मिली और एक नया संविधान बना। इस संविधान के द्वारा जनता को अपने प्रतिनिधियों द्वारा शासन का अधिकार मिला। यही

काल भारत के आधुनिक इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है ।

ekuo tkfr d bfrgkl dk ge dSl tkurs gS\

मानव जाति के इतिहास की जानकारी हमें कई स्रोतों से मिलती है । इनमें से एक स्रोत अतीत में लिखी गयी पुस्तकें हैं। इन पुस्तकों को हम ढूंढ़कर पढ़ते हैं। इनमें राजाओं एवं आम लोगों के जीवन, धार्मिक विचार एवं मान्यताएँ, औषधियों तथा विज्ञान आदि सभी प्रकार के विषयों की चर्चा मिलती है। ये पुस्तकें हाथ से लिखित होने के कारण 'पाण्डुलिपि' कही जाती है। ये पाण्डुलिपियां प्रायः ताड़पत्रों अथवा भोजपत्रों पर लिखी मिलती है। बहुत सी पाण्डुलिपियाँ अब नष्ट हो चुकी है। कुछ पुस्तकालयों एवं संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। पटना की खुदाबख्श लाइब्रेरी एवं पालीगंज स्थित भरतपुरा के गोपाल नरायण सिंह सार्वजनिक पुस्तकालय में ऐसी अनेक पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। संग्रहालय और अन्य संस्थाओं में भी आप पाण्डुलिपियां देख सकते हैं । इसके अतिरिक्त लिखित स्रोतों में अनेक महाकाव्य, कविताएँ एवं नाटक आदि हैं। इनमें से कुई संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं जबकि अन्य प्राकृत, तमिल एवं कन्नड़ आदि में है ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

rkM+i=ksa ij fy[kh x;h ik.Mqfyfi

vfHkys[k

हम अतीत की जानकारी अभिलेखों से भी प्राप्त करते हैं। 'अभिलेख' पत्थर अथवा धातु की सतहों पर नुकीले औजारों द्वारा उत्कीर्ण किए होते हैं। इन अभिलेखों में राजाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण लोगों के आदेश और उपलब्धियाँ वर्णित इन्हें वैसी जगहों पर लगाया जाता

था जहाँ अधिक से अधिक लोग आते जाते थे। ताकि अधिक से अधिक लोग उसे देख सके और उसमें लिखित आदेशों का पालन कर सकें ।

इसके अतिरिक्त अतीत में बनायी गयी एवं इस्तेमाल में लायी गयी वस्तुओं के माध्यम से भी हम अतीत की जानकारी प्राप्त करने में सफल होते हैं। ऐसी वस्तुओं में पत्थर एवं ईंट से बनी इमारतों के अवशेष, औजार, हथियार, बर्तन, आभूषण, मूर्तियां, चित्रा और सिक्के आदि आते हैं । ये वस्तुएँ पुरातात्विक स्रोत के रूप में जानी जाती है अर्थात् काफी प्राचीन होने के कारण इनके अवशेषों को जमीन की खुदाई कराकर प्राप्त किया जाता है। पुरातात्विक वस्तुओं का अध्ययन करनेवाला व्यक्ति 'पुरातत्वविद्' कहलाता है।

fIDdk vkj e_

enHkkM

BSTBPC © WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

पुरातात्विक वस्तुओं में जानवरों, पक्षियों एवं मछलियों की हड्डियां भी मिलती हैं जिससे अनुमान लगाया जाता है कि अतीत में किस आकार–प्रकार के जीव पाये जाते थे । अनाज एवं कपड़ों के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिससे पता चलता है कि अतीत में लोगों के पास खाने के लिए कौन–कौन से अनाज थे और लोग किस प्रकार के कपड़े पहनते थे ?

Mkå ?kuj u iVuk d dEgjkj uked LFkku e [knkb }kjk plæxIr ek;
d jktegy d LrEHk fudky gA bI [knkb e Iku d cyk d VdM
ikIr g, gA bI I ex/ IkekT; dh Ief) ,oHkO;rk ij idk'k iMrk gA

इस तरह पाण्डुलिपियों, अभिलेखों सिक्कों तथा पुरातत्व से संबंधित अन्य स्रोतों के आधार पर पुरातत्वविद् एवं इतिहासकार अतीत का अध्ययन करते हैं और इन्हीं स्रोतों के माध्यम से वे अतीत की व्याख्या करते हैं ।

^fIDd* 'kkIdk }kjk tkjh fd, tkr Fk ftIij jktdh; fpUg] /kfed
fpUg ;k dkbl fyfi vfdr gkrh FkhA fIDdk dk vè;;u ^eæk 'kkL=*
dgykrk gA

खुदाई में मिली वस्तुओं के विश्लेषण में समय का निर्धारण करना बहुत महत्वपूर्ण है। वैसे तो समय निर्धारण के लिए कई विधियां अपनायी जाती है लेकिन जो सामान्यतः प्रचलित है, वह है 'रेडियो कार्बन विधि' या 'कार्बन–14 पद्धति।

jfM;k dkcu fof/k%

तिथि निर्धारण की यह काम भौतिकशास्त्री करते हैं । सारी वस्तुओं में एक प्रकार का रेडियोधर्मी पदार्थ होता है जो कार्बन–14 कहलाता है । रेडियोधर्मी वे पदार्थ होते हैं जिनमें से निश्चित दर में छोटे–छोटे कण निकलते हैं। जब मनुष्य पशु या पौधा जिन्दा होते हैं तब वो जिस मात्रा में वायुमण्डल से कार्बन–14 लेते हैं, उसी मात्रा में रेडियोधर्मिता के कारण मरने के बाद उसे खो देते हैं। जब कोई मर जाता है तब वह वायुमण्डल से कोई कार्बन–14 नहीं लेता है। यद्यपि वह इसे एक निश्चित दर पर खोता रहता है। भौतिकशास्त्री इसी निहित कार्बन–14 की मात्रा का पता लगाकर उस जीव की आयु निश्चित करते हैं।

frfFk;k dk eryc%

प्राचीन काल में हमारे देश में तिथियों की गणना विक्रम संवत और शक संवत के आधार पर होती थी, लेकिन अब पूरे विश्व में एक मानक के रूप में तिथियों की गणना मुख्यतः ईसाई धर्म प्रवर्तक ईसा मसीह के जन्म की तिथि से की जाती है। इसमें ईसा मसीह के जीवन को शून्य वर्ष माना जाता है। उनके जन्म के पूर्व की सभी तिथियों के आगे अंग्रेजी में बी. सी. (बिफोर क्राइस्ट) और हिन्दी में ई.पू. (अर्थात् ईसा पूर्व) लिखते हैं। इसी प्रकार ई. की शुरूआत उनके जन्म के वर्ष से है। जैसे यदि कहीं 2009 ई. (ए.डी.–एनो डोमिनीं) लिखा देखते हैं तो इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के बाद के 2009वें वर्ष से है। इसी प्रकार यदि वही 2500 ई.पू. लिखा हुआ मिलता है तो इसका अर्थ है ईसा मसीह के जन्म के 2500 वर्ष पहले का समय।

तिथि निर्धारण को इस ग्राफ से समझा जा सकता है–

ई.पू. (**B.C.**) ईसा मसीह का जन्म सन् ई. (**A.D.**)

50,000	10,000	1000	500	100	0	100	500	1000	1500	2000	2010
BC	**BC**	**BC**	**BC**	**BC**		**AD**	**AD**	**AD**	**AD**	**AD**	**AD**

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

Hkkxkfyd i"BHkfe %

प्राचीनकाल से लेकर अब तक के भारत के इतिहास को समझने के लिए सर्वप्रथम उसकी भौगोलिक रूपरेखा की जानकारी आवश्यक है। भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत को मुख्यतः चार भागों में बांटा जा सकता है–

(1) उत्तर के पर्वतीय प्रदेश, जो तराई के जंगलों से प्रारंभ होकर हिमालय के शिखर तक फैले हुए हैं। इसमें कश्मीर, कांगड़ा, कुमायूं तथा सिक्किम के प्रदेश सम्मिलित हैं ।

(2) उत्तर का मैदान जो अपनी उपजाउ भूमि और अधिक पैदावार के लिए प्रसिद्ध है। इसमें सिन्धु, गंगा–यमुना और सहायक नदियों से सिंचाई का काम होता है। यह देश का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र है ।

(3) दक्षिण के पठार के अन्तर्गत उत्तर में नर्मदा एवं ताप्ती नदी बहती है। इस भाग में विन्ध्य तथा सतपुड़ा की पहाड़ियां हैं जो उत्तर भारत को दक्षिण भारत से पृथक् करती है ।

(4) सुदूर दक्षिण के मैदान में गोदावरी कृष्णा तथा कावेरी के उपजाउ डेल्टा वाले प्रदेश मिले हैं ।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

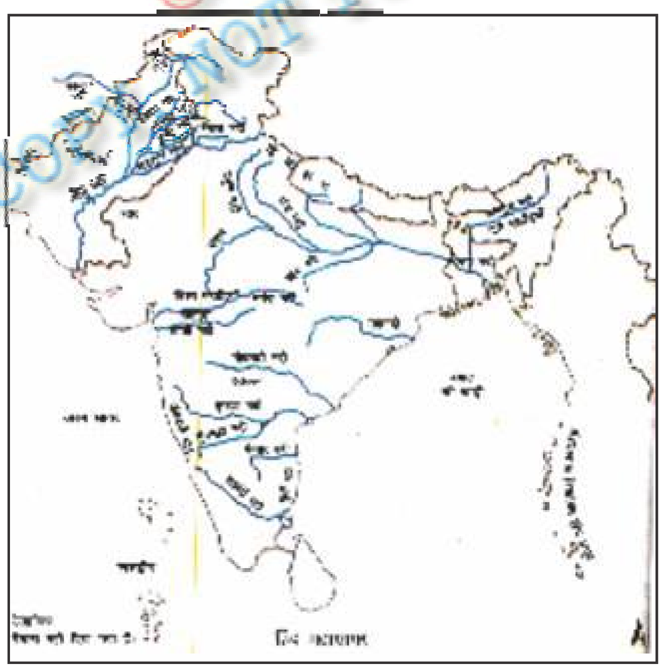

भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत श्रृंखला भारतीय उपमहाद्वीप को पश्चिमी तथा मध्य एशिया से अलग करते हैं। लेकिन इन पर्वतों में अनेक दर्रे (रास्ते) हैं जैसे– खैबर, बोलन एवं गोमल दर्रा । इन दर्रो के माध्यम से भारत का सम्पर्क अपफगानिस्तान तथा ईरान से बना रहता था। दर्रे पहाड़ियों के बीच के संकरे रास्ते होते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में ही मेहरगढ़ जैसे स्थान हैं जहाँ लगभग छः हजार ई.पू. में लोगों ने सबसे पहले 'गेहूं' तथा 'जौ' जैसी फसलों को उपजाना आरम्भ किया। भेड़–बकरी तथा गाय–बैल जैसे पशुओं को पालतू बनाना शुरू किया। उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में ही सिन्धु एवं इसकी सहायक नदियां बहती हैं । सहायक नदियां आगे चलकर एक बड़ी नदी में मिल जाती है। लगभग 4700 (2500 ई.पू.) साल पहले इन्हीं नदियों के किनारे नगरीय सभ्यता का विकास हुआ ।

उपमहाद्वीप के उत्तर–पूर्व में गारो, खासी, जयन्तिया, मिश्मी और नागा पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों के नाम पर ही यहां के आदिवासी मानव समूह की पहचान है।

भारतीय उपमहाद्वीप के बीच विन्ध्य पर्वत विभाजक रेखा है। विन्ध्य के दक्षिण में ब्रह्मगिरि स्थल पर लगभग तीन हजार साल पहले लोगों ने 'महापाषाणी' संस्कृति का निर्माण किया था। महापाषाणी संस्कृति में मृतक को दफनाकर उसके चारों तरफ बड़े–बड़े पत्थर गाड़ दिए जाते थे ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

विन्ध्य पहाड़ियों के उत्तर–पूर्व एवं ब्रह्मपुत्र नदी के पश्चिम में गंगा एवं उसकी सहायक

0;kikjhd ekxZ ,oa df"k LFky dk n'kkZrk Hkkjr dk ekufp=

नदियां बहती हैं विन्ध्य पहाड़ियों के उत्तर में स्थित कोलडिहवा एवं चोपानीमांडो ऐसे स्थल हैं जहाँ सबसे पहले चावल (धान) उपजाया जाता था ।

उत्तर भारत में बहनेवाली नदी गंगा के दक्षिण का क्षेत्र प्राचीनकाल में 'मगध' नाम से जाना जाता था। यहाँ के शासक बहुत ही शक्तिशाली थे और उन्होंने यहाँ एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी।

भौगोलिक रूपरेखा के इस विवरण से स्पष्ट है कि इस उपमहाद्वीप में यद्यपि अलग–अलग क्षेत्रों में लोग अपने–अपने ढंग से मानव समाज का निर्माण कर रहे थे, परन्तु ये कभी भी एक–दूसरे से अलग नहीं रहे। ये लोग ऊँचे पर्वतों, पहाड़ियों, रेगिस्तानों, नदियों तथा समुद्रों में जोखिम उठाकर एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र की यात्रा करते थे और उपयोगी वस्तुओं का विनिमय (खरीद–बिक्री) करते थे।

इसके अलावे लोगों को शिक्षा देने के लिए धार्मिक गुरु भी हमेशा भ्रमण करते रहते थे । यहाँ तक कि भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर के लोग भी खैबर, बोलन एवं गोमल के रास्ते भारत आते रहे । इस आवागमन से हमारी सांस्कृतिक परम्परा समृद्ध हुई।

©BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

n'k dk uke %

हम अपने देश के लिए प्रायः इण्डिया तथा भारत जैसे नामों का प्रयोग करते हैं । इण्डिया शब्द 'इण्डस' से निकला है जिसे संस्कृत में 'सिन्धु' कहा जाता है। लगभग 2500 वर्ष पहले उत्तर–पश्चिम की ओर से आनेवाले ईरानियों और यूनानियों ने सिन्धु को 'हिंदोस' अथवा 'इंडोस' कहा तथा इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को 'इण्डिया' कहा। फारसी में यही शब्द 'हिन्द' एवं ''हिन्दुस्तान' जैसे नामों की उत्पत्ति का कारण था। इसी तरह एक दूसरी मान्यता के अनुसार इस देश का नाम भारत 'भरत' नामक मानव समूह के नाम पर पड़ा जो उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में रहते थे। इसका उल्लेख ऋग्वेद (लगभग 1500 ई.पू.) में मिलता है।

अतः प्राप्त स्रोतों एवं साक्ष्यों के आधार पर आप प्राचीन भारत के इतिहास को आगे के अध्यायों में पढ़ेंगे। प्राचीन काल में भारत में मानव जीवन कैसा था ? प्रारंभिक समाज कैसा था? इसका क्रमिक विकास कैसे हुआ? यह सब आप अगले अध्याय में पढ़ेंगे ।

अभ्यास

vkb;s ;kn djsa

1. oLrqfu"B iz'u

(क) मनुष्य, पशु या पौधे के अवशेष की प्राचीनता का निर्धारण किस विधि से करते हैं ।

(i) कार्बन–14 पद्धति (ii) ताप संदीप्ति विधि

(iii) पौटैशियम–आर्गन विधि (iv) स्टोन हैमर विधि

(ख) उत्तर भारत को दक्षिण भारत से कौन पर्वत अलग करती है ।

(i) हिमालय पर्वत (ii) विन्ध्य पर्वत

(iii) पूर्वी घाट (iv) पश्चिमी घाट

(ग) चावल का प्राचीन प्रमाण कहाँ से मिला है ।

(i) कोलडिहवा (ii) महागिरि

(iii) मेहरगढ़ (iv) बुर्जहोम

2. [kkyh LFkkuksa dks Hkjsa

(क) .... क्षेत्र के अधीन विशाल साम्राज्य की स्थापना हुई ।

(ख) भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत को .... में विभाजित किया जा सकता है।

(ग) .... ने कुम्हरार नामक स्थान की खुदाई करवाई ।

(घ) आधुनिक काल का प्रारंभ .... से हुआ ।

(ड़) ....क्षेत्र में महापाषाणी संस्कृति का निर्माण हुआ ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

3. fuEufyf[kr dk lqefyr djs

खासी –	अनाज का प्रमाण
मगध–	दक्षिण भारत
महापाषाणीक संस्कृती–	प्रथम बड़ा साम्राज्य
चोपानीमांडो –	जनजाति

vkb;s ppk djs

1. इतिहास के अध्ययन से हमें कई तरह की जानकारी प्राप्त होती है?
2. पुरातत्त्व किसे कहते हैं?
3. इतिहास के अध्यन से अपने अतीत के बारे में क्या–क्या जानकारी मिलती है?
4. अतीत की जानकारी जिन–जिन स्रोतों के माध्यम से हो सकती है, उसकी एक सूची बनाएं।
5. देश का नाम भारत और इण्डिया कैसे हुआ ?
6. काल निर्धारण के कार्बन–14 पद्धति को बताएं ।

vkvk djds देखें :

4- iqjkrÙofonk }kjk [kqnkbZ e ikIr oLrqvk dh lwph cukb,A

5- Hkkjr d ekufp= ij fuEufyf[kr LFkkuk dk fn[kk,A

(1) नर्मदा नदी (2) गंगा नदी (3) विंध्य पर्वत (4) सतपुड़ा पहाड़ियाँ ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय-3

प्रारंभिक समाज

fjrs'k vkj çdk'k vki l e ckr dj jgs FkA

fjrs'k % çdk'k] ;g crkvks fd ekuo bl èkjrh ij dcl vk,\

çdk'k % ejs ikik&eEeh dgrs gSa fd ge lHkh b'oj dh lrku gSa vkj mlh us ges èkjrh ij HkstkA

fjrs'k % yfdu esus rks dy dks v[kckj es i<k gS fd bl धरती पर thou dh mRifÙk lolçFke leæ es gbl vkj fO छोटे जीव i cM thok dk fodkl gvk ftसमें मानव Hkh है।

çdk'k % rc gekjs iolt dkSu थे, देखने में कैसे लगते Fks vkj ekuo dk çkjfHkd thou कैसा था?

मनुष्य जिस तरह से आज रहता है उससे तो आप परिचित है। लेकिन क्या आपने सोचा है, कि हमारे पूर्वज हजारों वर्षों पहले कैसे रहते थे? उस समय दुनिया भर में कहीं भी खेती नहीं होती थी। न कहीं गाँव थे, न शहर। आज से 150 साल पहले तक लोगों का मानना था कि पृथ्वी पर आरंभ से ही जीवन था। पेड़ पौधे और मनुष्य को बनाने वाला ईश्वर था। लेकिन बाद में वैज्ञानिकों ने इस बात की खोज की, कि पृथ्वी पर करोड़ों वर्ष पहले जीवन की उत्पत्ति हुई और उसका स्वरूप धीरे–धीरे बदलता रहा। कहा जाता है कि मनुष्य जिस रूप में आज हैं वह लाखों वर्षों के क्रमबद्ध विकास का परिणाम है।

vkjfHkd ekuo ds ckjs esa tkudkjh dSls feyrh gS\

हजारों साल पहले जो लोग रहते थे, उनके बारे में हम ठीक–ठीक तो नहीं जानते है। लेकिन उस समय की बची हुई चीजों को देखकर और अपनी सूझबूझ से कुछ अनुमान जरूर कर सकते है। इस काम में पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा उस समय के लोगों के द्वारा प्रयोग में लाए

© CBSE/PPCP NOT TO BE PUBLISHED WEBCOPY

जाने वाले औजारों (पत्थरों से बनायी गई) कलाकृतियों एवं उनके निवास स्थानों का जो पता लगाया गया है, वह सहायक है। इस विषय में आप पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं। उस समय के लोगों की जीवन–शैली को जानने के लिए आज भी उसी माहौल में रह रहे शिकारी समाज के लोगों का विद्वानों ने अध्ययन किया है। आज भी दुनिया के कई जगहों में शिकारी समाज के लोग रहते है। भारत में केरल, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश तथा झारखण्ड आदि प्रदेशों में ऐसे लोग रहते है।

Hkkjr e vkjfHkd ekuo dgk jgr Fk \

भारत में पुरातत्ववेताओं को अतीत की कई मानव बस्तियाँ मिली है। दिए गए मानचित्र में त्रिकोण वाले स्थान वहीं है। इन सभी स्थलों से शिकारी मानव के कई निशान मिले है।

जैसे पत्थर के औजार गुफाओं पर बने चित्र और जानवरों तथा लोगों की हड्डियाँ। गुफा ही उनका बसेरा था। मध्य प्रदेश में भीमबेटका, बुढ़नी, पंचमढ़ी, भेंडाघाट और महेश्वर उन स्थलों के उदाहरण है। कई पुरास्थल नदियों और झीलों के किनारे पाए गए है।

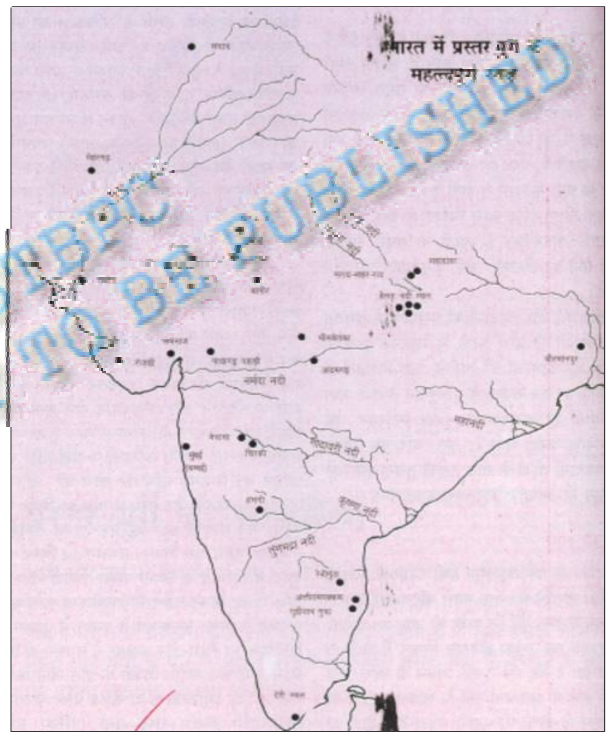

ekufp= egRoiw.k iqjkLFky

©BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

vkjfHkd ekuo dh thou 'kyh

दुनिया में जगह जगह वे लोग जंगलों में बीस–तीस लोगों के छोटे–छोटे झुण्ड में रहा करते थे। जंगल में हिरण, भैसा, शेर, खरगोश आदि जानवरों का शिकार करते थे।नदियों एवं तालाबों में मछली पकड़ते थे। मधुमक्खी के छत्तों से शहद भी इकट्ठा करते थे। वे जंगली पेड़ों के फल तोड़ लाते पौधों की मीठी जड़े और कंद–मूल (आलू, शकरकन्द जैसे) खोद लाते

और जंगलों में अपने आप उगे जंगली अनाज को काट लाते। वे ज्यादातर कन्द, फल आदि खाते साथ ही थोड़ा बहुत मांस भी। मांस उनका मुख्य भोजन नहीं था क्योंकि उनलोगों के जैसे औजार मिले है उससे बड़ी संख्या में जंगली जानवरों का शिकार करना बहुत कठिन रहा होगा। दूसरे, जानवर उनसे ज्यादा शक्तिशाली और तेज दौड़ने वाले भी थे।

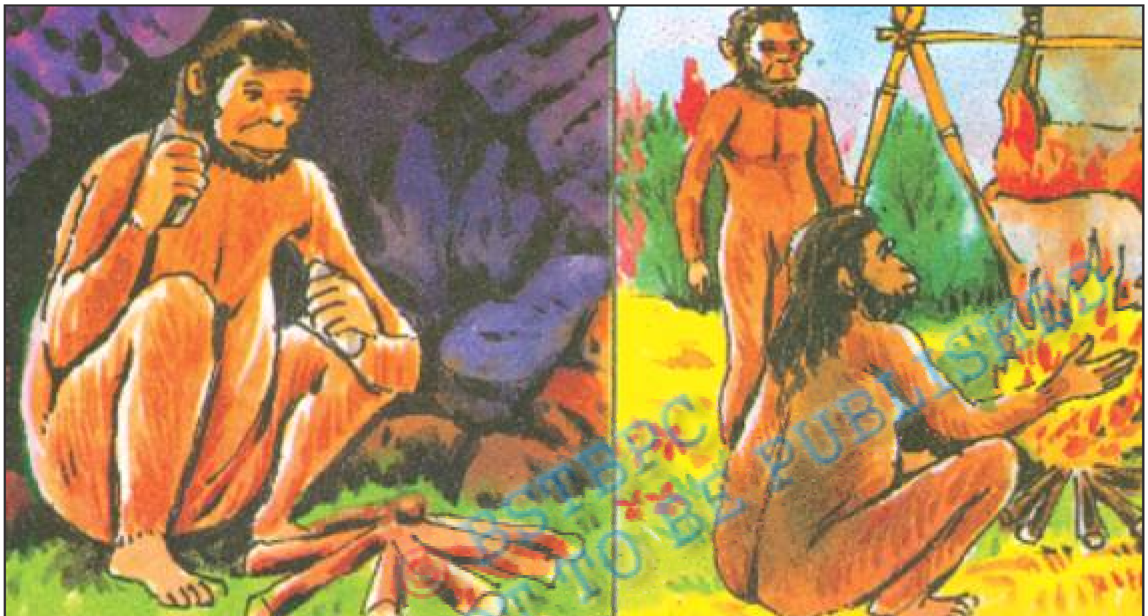

vkjfEHkd मानव }kjk vkx dk bLrseky

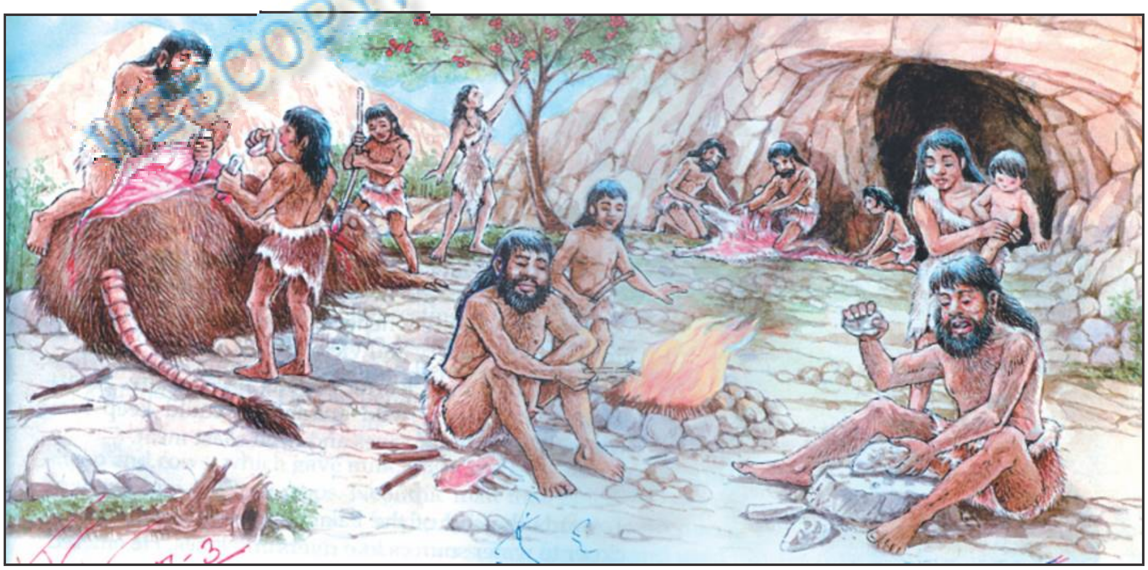

vkjfHkd ekuo dk thou

आरंभिक मानव को पहनने की चीजें भी जानवरों और पेड़ों से ही मिलती थीं। वे जानवरों की खाल साफ करके पहनते थे या पेड़ की पत्तियों और छाल से शरीर ढंक लेते थे। वे या तो पहाड़ी गुफाओं में रहते या पेड़ों की डालियों और पत्ती से छोटी–छोटी झोपड़ियाँ खड़ी कर लेते थे। वे लोग आग जलाना जान गए थे। उनके घरों में जो चूल्हे मिले हैं, उससे पता चलता है कि वे नियमित रूप से आग का इस्तेमाल करते थे। लोगों के झुण्ड में महिलाएं और बच्चे भी रहते थे। पुरुष शिकार के लिए जाते जबकि महिलाएं कंद–मूल, फल और अन्य जंगली अनाज इकट्ठा करतीं। समूह के लोग बच्चों का खास ख्याल रखते थे।

ckV dj [kkuk

आरंभिक लोग साथ–साथ शिकार करते थे क्योंकि अकेले जानवरों को मारना कठिन होता था। भोजन लोगों द्वारा समूह में ही इकट्ठा किया जाता था और उसे सब लोग मिल बांट कर खाते थे। यह बहुत जरूरी था, क्योंकि जंगल से क्या मिलेगा इसका पक्का भरोसा तो होता नहीं था। उस समय लोगों के कई समूह अलग–अलग क्षेत्रों में रहते थे। उनके बीच शिकार और भोजन प्राप्ति को लेकर छोटी–मोटी लड़ाइयाँ भी होती थीं। कुल मिलाकर उस समय के लोगों का जीवन बहुत आराम से बीतता होगा। मुख्य काम भोजन इकट्ठा करना था जो जंगल से प्राप्त हो जाता। इसके लिए उन्हें बहुत अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता था।

© RSTBPB WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

vkjfHkd ekuo के जीवन dk egRoi.k i{k bèkj&mèkj ?keuk

एक समूह में रहने वाले आरंभिक मानव एक सीमित क्षेत्र के भीतर घूमते–फिरते रहते थे। यह दायरा उनके निवास स्थल से चारों दिशाओं में होता। ये लोग छोटे–छोटे समूहों में बंटकर चारों दिशाओं में जाते, इसके पीछे एक निश्चित वजह होती थी। जैसे एक खास क्षेत्र में फलों–पौधों और जानवरों की संख्या और उपलब्धता सीमित रहती थी, जिसे वे समाप्त कर देते थे। अतः भोजन की तलाश में वे इधर–उधर घूमते थे। वे जानवरों के शिकार करने के क्रम में भी उनके पीछे–पीछे चले जाते। उन लोगों को पेड़–पौधों में फल–फूल आने का मौसम पता था। इसलिए लोग उनकी तलाश में उपयुक्त मौसम के अनुसार दूसरे क्षेत्रों में घूमते थे। संभवतः आस–पास के जल स्रोतो जैसे नदियों, झीलों आदि के सूख जाने के कारण

भी पानी की तलाश में इधर–उधर जाते होंगे। वे लोग अपनी यात्रा पैदल ही किया करते थे।

vkjfHkd ekuo d vkStkj

शिकारी मानव के पास कैसे–कैसे हथियार व औजार थे जरा सोचे। उस समय लोहा, ताँबा जैसी धातुओं के बारे में लोगों को पता नहीं था। अतः उनलोगों को आस–पास जो मिलता वह था, पत्थर, लकड़ी, जानवरों के सींग और हड्डियाँ, इन्हीं को नुकीला बनाकर वे औजार बनाते थे। वे पत्थर के टुकड़े, को घिसकर नुकीला और धारदार बना देते थे साथ ही वह आकार में भी हाथ से पकड़ने के लायक औजारों को बनाते थे। धीरे–धीरे वे इस कला में माहिर होते गए और पत्थर के बारीक औजार बनाने लगे। वे पत्थर के छोटे और बारीक टुकड़ों को किसी लकड़ी के हत्थे पर लगा कर तेज औजार का काम लेते थे। उस समय औजार बनाने के लिए अलग से कोई कारीगर नहीं था। समूह के सब लोग औजार बनाया करते थे। पत्थर और लकड़ी के औजारों का उपयोग शिकार,

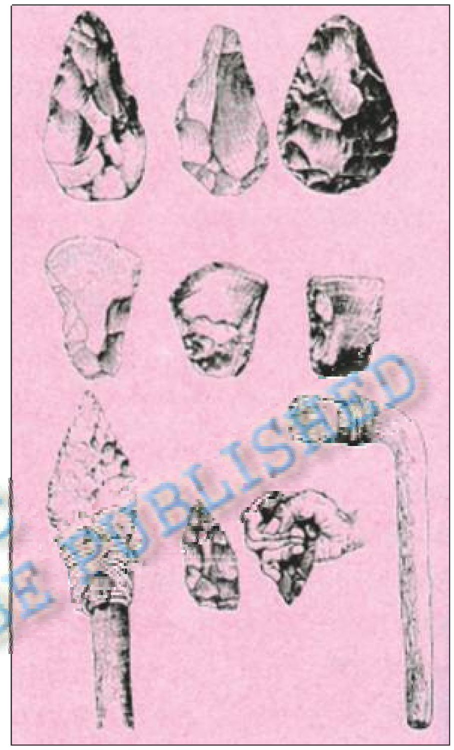

vkjfHkd ekuo d vkStkj

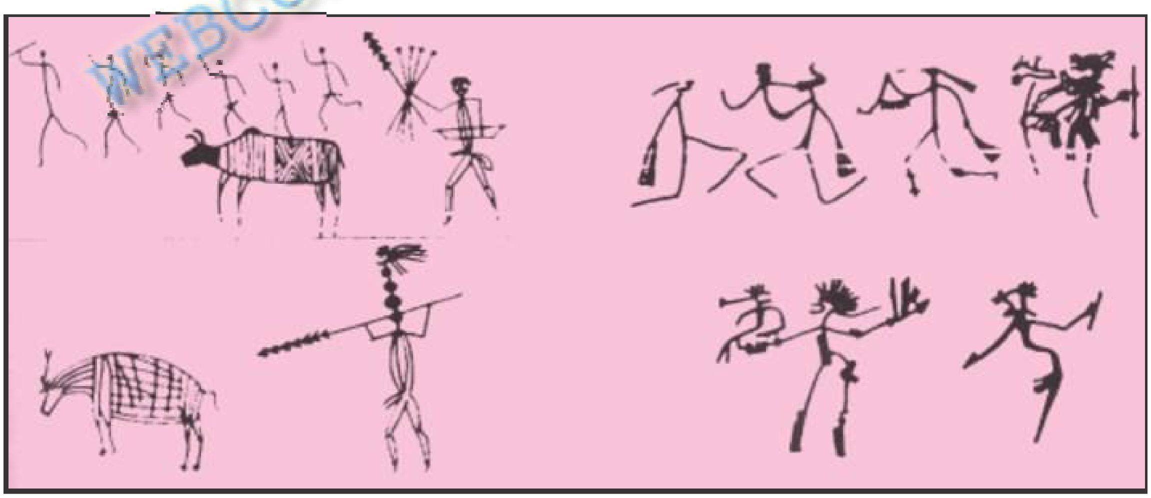

vkjfHkd ekuo }kjk cuk, x, fp=

© OBSTPPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

पेड़ों को काटने या उनकी छाल छीलने, जानवरों के खाल उतारकर पहनने लायक बनाने, इत्यादि कामों में करते थे। वे लकड़ी, सीप, हड्डी, हाथी–दांत आदि की मालाएँ भी बनाते थे।

fp= vkj ukp

शिकारी लोग गुफा के अंदर दीवारों पर रंगीन चित्र भी बनाया करते थे। वे रंगीन पत्थरों को घिस कर रंग तैयार करते थे और बांस के ब्रुश से चट्टानों पर चित्र बनाते थे। इन लोगों द्वारा बनाए चित्र भीमवेटका की गुफाओं में पाया गया है। चित्र में ज्यादातर पशुओं जैसे बैल, गाय, भैंस, हिरण इत्यादि के थे। चित्रों के बनाने के अलावा उनके जीवन मे एक और महत्वपूर्ण चीज नाच था। वे सब मिलकर देर तक नाचते थे।

iSlj k dk l{e&fujh{k.k

iSlj k fcgkj d s exj fty s e s fLFkr gSA ;gk¡ ij प्रारंभिक मानव l s lEcfU/kr iqjkuk LFky fey s gSA ;gk¡ से यूरोप (फ्रांस) में पाए tku s oky s vkjfEHkd ekuo d s vkStkjk s dh तरह के औजार मिले gSA iSlj k lHkor% vkokl vkSj fuek.k LFky था।

uke vkSj frfFk;k¡

uo ik"kk.k dkyhu gM~Mh d s vkStkj

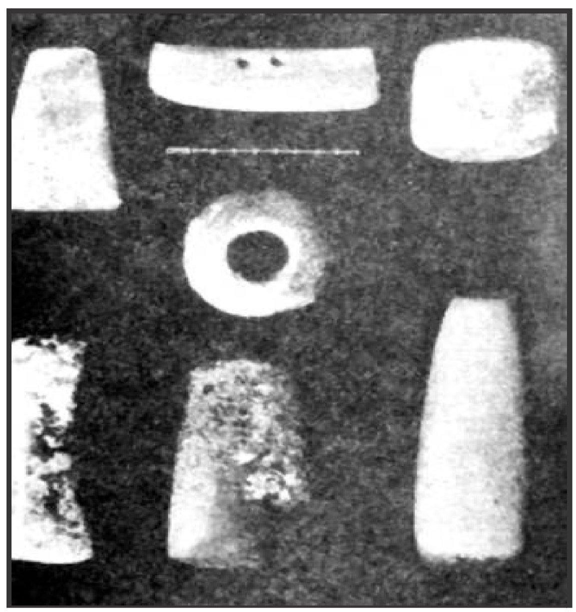

uo ik"kk.k dkyhu iRFkj d s vkStkj

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

जिस काल के मानव के बारे में आपने ऊपर पढ़ा है उनके जीवन में पत्थरों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण था। आप ने देखा कि पत्थर की गुफा, उसके औजार, उसी के आभूषण का प्रयोग वे करते। अतः इस काल को पुरातत्वविदों ने पाषाण (पत्थर) काल का नाम दिया है।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

eè;ik"kk.k vkj uoik"kk.k dky d vktkj

औजार बनाने के तरीकों में और जीवन शैली में आए परिवर्तनों के जो प्रमाण मिले है उस आधार पर पाषाण काल को तीन भागों में विभाजित किया गया है। आरंभिक चरण को पुरापाषाण काल (लगभग बीस लाख साल से 14000 साल पहले तक) कहते हैं। इस समय लोग शिकार और भोजन संग्रहक के रूप में अपना जीवन बिताते थे। आग का आविष्कार एवं स्थायी आवास इसी काल में उन्होंने शुरू किया।

e/; ik"kk.k dky

इस काल में पर्यावरणीय बदलाव आए और वातावरण में गर्मी बढ़ी जिसके कारण गेहू, जौ, मडुआ जैसे अनाज स्वयं उग आए तथा कई क्षेत्रों में घास वाले मैदान बनने लगे। घास पर आश्रित शाकाहारी जानवरों की संख्या इस वजह से बढ़ने लगी। इस समय लोगों द्वारा पत्थरों के और अच्छे औजार बनाए गये, जिसे लकड़ी पर लगाकार इस्तेमाल किया जाने लगा। इन परिवर्तनों के आधारपर इस काल को मध्य पाषाण काल कहा गया (लगभग 14000 साल पहले से 8000 साल पहले तक)।

पाषाण काल का अन्तिम चरण नवपाषाण युग के नाम से जाना जाता है। इस युग में मानव के जीवन उनके रहन–सहन तथा कला-कौशल में बड़ा बदलाव आया आप इसके विषय में अगले अध्याय में पढ़ेंगे। इसका काल 8000 साल से 3000 साल तक है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

vkb, ;kn djs&

1- oLrqfu"B ç'u&

(क) भारतीय उपमहाद्वीप में आरंभिक मानव के निशान किस राज्य से अधिक मिला है–

(i) बिहार (ii) उत्तर प्रदेश

(iii) मध्य प्रदेश (iv) गुजरात

(ख) प्रारंभिक औजार अधिकांशतः किस चीज से बने होते–

(i) लोहा (ii) पत्थर

(iii) ताँबा (iv) काँसा

(ग) आरंभिक मानव बस्तियों से जुड़ा पैसरा नामक स्थान बिहार के किस जिले में अवस्थित है–

(i) गया (ii) गोपालगंज

(iii) मुंगेर (iv) दरभंगा

(घ) पाषाण काल को कितने भागों में बाँटा जाता है?

(i) चार (ii) तीन

(iii) पाँच (iv) दो

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

2- [kkyh LFkku dks Hkjs&

(i) भीमवेतका .... राज्य में है।

(ii) आरंभिक मानव का मुख्य बसेरा .... था।

(iii) पाषाण काल के लोग मनोरंजन के लिए चित्र और .... करते थे।

(iv) .... साल पहले दुनिया की जलवायु गर्म होने लगी।

3- vkb, fopkj djs&

(i) मानव के आरंभिक काल को पाषाण युग क्यों कहा जाता है?

(ii) आरंभिक मानव इधर–उधर क्यों घुमते थे?

(iii) मध्यपाषाण काल में क्या बदलाव आए?

4- vkb, djds ns[ks

(i) आरंभिक मानव के खाद्य पदार्थों की सूची बनाएँ और आज के भोजन सामग्री से उसकी तुलना करने पर क्या बदलाव आपको दिखता है।

(ii) आज के जीवन में इस्तेमाल किए जाने वाले औजारों की तुलना आरंभिक मानव के औजारों से करें और दोनों में क्या अन्तर और समानता है बताएँ।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय-4

प्रथम कृषक एवं पशुपालक

'kcue Ldwy esa nksigj dk [kkuk* [kkus ds fy, cSBh gqbZ FkhA vkt mls [kkus esa pkoy] jktek ,oa vkyw dh lCth feyhA dy gh mlus iwNk Fkk fd ;s [kkus dh phtsa dgk¡ ls vkrh gSa\

> Printed as in the source (legacy font encoding): 'kcue Ldwy e Ånkigj dk [kkuk* [kku d fy, cBh gbZ FkhA vkt mlu [kku e pkoy] jktek ,o vkyw dh lCth feyhA dy gh mlu iwyko vkj lk;kchu dh lCth [kk;h FkhA og lkp jgh Fkh fd gekj ikl [kku d fy, bru lkj vukt] lCth] Qy ,o nèk dgk ls vkr g\

BSTBPC
WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

e/;kgu Hkkstu ds rgr Ldwy esa [kkrs cPps

आज हम विभिन्न प्रकार का भोजन करते हैं। अनाज से बने भोजन, सब्जी, दूध–दही, मक्खन, मांस–मछली आदि। यह हमें अधिकांशतः उगाई गई फसलों और पालतू पशुओं से मिलते हैं। परंतु आरंभिक मानव कुछ भी नहीं उगाते थे और सब कुछ जंगलों से बटोर लाते थे। इनमें जानवरों का शिकार और कंदमूल एवं फलों को इकट्ठा करने के तरीके शामिल थे। जो शिकारी एवं खाद्य संग्राहक लोग लाखों सालों से जंगली फल व अनाज बटोरते थे उन्हें

मालूम तो होगा कि कैसे बीज से पौधे उगता है। उन्होंने आस–पास ऐसे खूब सारे पौधों को उगते देखा होगा, फिर भी उन्होंने खेती शुरू नहीं की। इसका क्या कारण रहा होगा?जिन लोगों ने खेती शुरू की उनको क्या जरूरत पड़ी कि वे खेती करने लगे। इन बातों की पक्की जानकारी तो नहीं फिर भी उन दिनों के जो निशान और सबूत मिलते हैं उनसे हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

[krh dh 'k:vkr

कृषि के आरंभ होने का मतलब था कोई भी अनाज ऐसे स्थान पर उपजाया जाना जहाँ वह अपने आप नहीं उगता हो। सबसे पहले खेती किसने और कहाँ शुरू की ? अनुमान है कि खेती की शुरुआत ईरान और इराक देश की पहाड़ियों की तलहटी में हुई। आज से लगभग 8000 से 10000 साल पहले वहाँ रहने वाले लोगों ने सबसे पहले खेती करना शुरू किया। बाद में जगह–जगह लोगों के समूहों द्वारा खेती करनी शुरू हुई। अपने देश में खेती की शुरूआत आज से 5–6 हजार साल पहले पश्चिमोत्तर भारत में हुई। समूह की महिलाएँ पेड़–पौधों के बारे में बहुत जानकारी रखती थीं क्योंकि आम तौर पर जंगली फल दाने, जड़ें आदि इकट्ठा करने का काम वे ही किया करती थीं। वे पेड़ पौधों को करीब से देखते–देखते उनके बारे में काफी कुछ समझने लगी थीं। आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने इस जानकारी का उपयोग खुद पौधे उगाने में किया। ऐसा माना जाता है कि मध्य एशिया के क्षेत्र में रहने वाले शिकारियों के एक समूह ने दूसरे समूह को खदेड़ दिया हो। नई जगह पर, जहाँ वह गए उनलोगों को वे सारे जंगली फसल नहीं मिल पा रही थी, जिसके खाने के वे अभ्यस्त हो गए थे। अतः उन्होंने नए क्षेत्र में अपने साथ लाए कुछ बीजों को जमीन में डाल दिया। उसे नियमित पानी से सिंचित करने लगे। कुछ महीनों में उन पौधों में फल लग गए जिसे पुष्ट होने पर उनलोगों ने उसे काट कर उससे सारे अनाज निकाल लिया। ऐसे ही खेती की शुरूआत हुई। धीरे–धीरे अलग–अलग समूहों ने जंगलों को साफ कर उस पर भी बीजों को बोना शुरू किया इससे जमीन के छोटे टुकड़े पर वे लोग ज्यादा अनाज उपजाने लगे। इस तरह आरंभिक मानव के पास अनाज का एक भंडार हो गया जिसे वे संकट के समय इस्तेमाल

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

कर सकते थे। इसी के साथ उनकी जीवनशैली में बदलाव आया शिकार करने वाले और फल, अनाज इकट्ठा करने वाले लोग अपना निवास क्षेत्र बदलते रहते थे। मगर अब फसल की रखवाली के लिए खेतों के आस पास स्थाई रूप में रहना आवश्यक हो गया इस तरह आरंभिक गाँव बसे।

vkjfHkd ekuo }kjk Ñf"k dk;Z

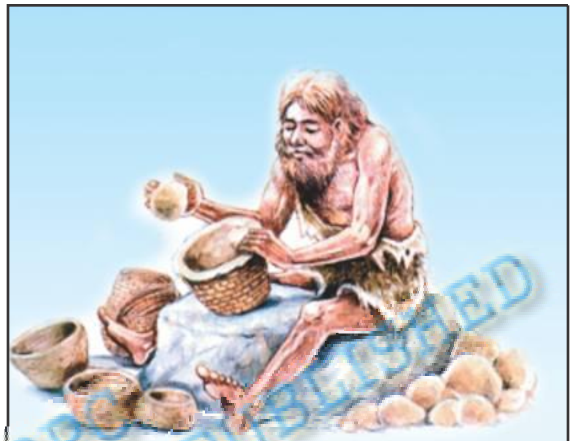

आरंभिक ekuo crZu cukrk

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

चूँकि फसल तैयार होने में 4–6 महीने लग जाते थे। इस प्रक्रिया में समूह के सभी लोग आपस में सहयोग करते थे। इस सहयोग से उनके बीच नाता–रिश्ता जिसका आधार आपसी संबंध था शुरू हुआ। स्थायी रूप से एक जगह रह कर फसलों को उपजाने के कारण लोग अब छप्पर वाली झोपड़ियों को बनाना शुरू किये। अनाज के भंडार को रखने के लिए उन्होंने मिट्टी के बर्तनों को बनाना आरंभ किया। धीरे–धीरे कताई–बुनाई शुरू हुई। मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल वे लोग भोजन बनाने एवं खाना खाने में भी करने लगे। शिकारी मानव के जीवन में ये सारे बदलाव हजारों वर्ष में संभव हो सकता था।

vkjfHkd ekuo dk vkokl

ekuo u tkuoj ikyuk 'k: fd;k

जिस समय खेती की शुरूआत हुई लगभग उसी समय पशुपालन भी शुरू हुआ। पशु पालने का काम वस्तुतः शिकारी संग्रहकर्ताओं ने ही पहले किया था। शुरू में जब वे लोग जानवरों का शिकार करते होंगे तो उन्हें पशुओं के बच्चे भी हाथ लग जाते थे। उसे वे पकड़ कर अपने रहने के ठिकाने पर लाते होगें ताकि बड़े होने पर उससे ज्यादा मांस प्राप्त हो सके। इस तरह आरंभिक मानव भेड़ों—बकरियों के नन्हे मेमनों को एवं नन्हे बछड़ों एवं बाछियों को अपने पास बांध कर रखने लगे। धीरे—धीरे उन्हें उन जानवरों की उपयोगिता समझ आई होगी। उन्हें यह लगा होगा कि जानवरों को मार कर खा लेने की बजाए यदि जिन्दा पाला जाए तो बहुत से नए फायदे मिल सकते हैं। आरंभिक मानव ने पशुओं को पालतू बनाते समय कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखा होगा। जैसे— ऐसे पशु को पालतू बनाया जाए जिनके लिए आसानी से भोजन उपलब्ध कराया जा सके। वह हिंसक न हो तथा नुकसान न पहुँचाए उन्हें अपने साथ इधर—उधर भी ले जाया जा सके साथ ही शिकार खोजने एवं भोजन ढूंढ़ने में उनसे मदद भी मिले। यही सब बातें सोचकर उसने सबसे पहले कुत्ता, फिर सुअर, भेड़, बकरी और अन्य जानवरों को पालना शुरू किया।

© DSERT NOT TO BE PUBLISHED WEBCOPY

vkjfHkd ekuo dk lkFk ikyrw i'kq

पशुओं को पालने से उन्हें कई तरह के लाभ मिलने लगे। पशुओं से उन्हें खाने की कई चीजें प्राप्त हुईं। उसके ताकत का प्रयोग उन्होंने धीरे–धीरे खेती के काम में भी करने लगे। इससे उन्हें एक जगह से दूसरी जगह जाने में, वस्तुओं को लाने ले जाने में काफी सहायता मिला। पशुओं से उसे जीवंत मांस मिला जिसका इस्तेमाल वे अपनी इच्छा के अनुसार कर सकते थे।

uoik"kk.k ;qx cnyko dk dky

नवपाषाणयुग मानव जीनव के विकास का वह समय है जिसमें मानव पहली बार शिकारी

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

uokik"kk.k ;qxhu LFky dk ekufp=

संग्रहकर्त्ता से पशुपालक एवं खाद्य उत्पादक बन गया। इसी काल में आरंभिक गाँव बसने लगे और एक सामाजिक संगठन का विकास हुआ। इस समय के लोग भी पत्थर के औजारों का ही इस्तेमाल करते थे लेकिन वे औजार आकार में छोटे, मजबूत और पहले से ज्यादा धारदार एवं चमकदार थे। पुरातत्वविदों को भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्रों से नवपाषाणकालीन कृषक और पशुपालकों के साक्ष्य मिले हैं। इसके अतिरिक्त बिहार के मुंगेर, चिरांद और झारखण्ड के बहुत सारे क्षेत्र भी नवपाषाण कालीन है। दिए गए मानचित्र में वे सभी स्थल दिखाए गए हैं।

नीचे की तालिका से आप यह जान सकते हैं कि कहाँ–कहाँ अनाज और पालतू जानवरों की हड्डियाँ मिली हैं जो नवपाषाणयुगीन है–

çkIr oLrq	iqjkLFky
xgw] tkS] HkM] cdjh	egjx< ¼ikfdLrान)
pkoy] tkuoj dh gfMM;k	कोfYMgवा (उत्तर प्रn'k½
pkoy] tkuoj d [kj d f़नशान	मेहरगढ़
xgw nygu] dÙk] भेड़, बकरी	cqtZgke ¼d'ehj½
xgw] puk] tk	fpjkn ¼fcgkj½
dkyk puk] Tokj] cktjk, गkM lqvj	iS;eiYyh ¼vkèk çns'k½

Iक्e fujh{k.k

e'हरगढ़

orZeku ikfdLrku e fLFkr egjx<] lHkor% og LFkku gS tgk lcls igys xgw] tk mxku vkj i'kq ikyu dk lk{; fey gSA ;gk ij jkfonk dk lkr Lrj çkIr gq, gSA igyk rhu Lrj uoik"kk.k dky dk gSA ;gk çR;d Lrj ls Ñf"k mRiknu vkj i'kvk e HkM&cdjh d ikyu d lk{; fey gSA ;gk ls vk;rkdkj ,o pkdkj ?kjk d lk{; Hkh fey gSA erdk d nQuku d lk{; Hkh ;gk l fey gSA

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

Lrj& [knkbl e fdlh ijkLFky l dbl Lrjk d feyu dk rkRi;l g] ogk ,d&,d dj dbl lLÑfr;k mfnr gbl vkj mld lekIr gku ij nlljh lLÑfr dk mn; gvkA

fpjkn

;g ijkLFky fcgkj d Nijk ftyk e gA ;gk l rhu Lrj feyl gA ;gk l iRFkj d vktkj d vykok cMh l[;k e gfM;k vkj lhx l cu vktkj fey gA ;gk d ?kj xky gkrl FkA ?kjk e pYg ,d leg e fey gA feêh d crlu dkQh lUnj g tk dky] dky&uhy] yky&èkl j jx d g ;gk l xg] èkku] e lj d lk{; ,o feêh d f[kyku Hkh fey gA

bl rjg uoik"kk.k ;xhu ekuo Ñf"k vkj i'kikyu dh शुरुआत के ckn LFkk;h :i l xkok dk clk dj jgu लगा। संक्षेप संग्राहक ekuo vukt mRiknd cu x,A xQk d LFkku पर अब मानव स्थायी ?kj cuk dj jgu yxA bl ;x d ykxk ने वस्त्र पहनना भी शुरू dj fn;kA ykxk d eju d ckn mldk erd lLकार होने yxkA dy feykdj bl ;x e ykxk dk thou LFkk;h vkSj सैभ्य बनाA

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

vkvk ;kn dj&

1- oLrfu'B ç'u&

(क) सबसे पहले किस जानवर को आदमी ने पालतू बनाया?

(i)	कुत्ता	(ii)	बंदर
(iii)	गाय	(iv)	बकरी

(ख) गेहूँ का प्राचीन साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है?

(i)	मेहरगढ़	(ii)	हल्लूर
(iii)	चिराँद	(iv)	पैच्यमपल्ली

(ग) चावल का प्रमाण भारत में कहाँ से मिला है?

(i)	कोल्डिहवा	(ii)	मेहरगढ़
(iii)	चिरौद	(iv)	पैसरा

lefyr dj&

चिराँद	—	उत्तर प्रदेश
मेहरगढ़	—	बिहार
बुर्जहोम	—	पाकिस्तान
कोल्डिहवा	—	काश्मीर

vkb, djds n[k&

(i) खेती की शुरूआत कैसे हुई?

(ii) मानव जीवन में खेती के बाद क्या परिवर्तन आया।

(iii) नवपाषाण कालीन औजारों की विशेषता क्या थी?

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

vkvk ppk djs&

(iv) पशुपालन से मानव को क्या–क्या लाभ हुआ

(v) नवपाषाणयुगीन जीवन और आरंभिक मानव के जीवन में क्या अन्तर था।

vkvk djds n[ks&

(I) नवपाषाणयुगीन मानव जिन फसलों से परिचित थे उनकी सूची बनाएँ और जिन फसलों से आप अभी परिचित हैं उसकी एक सूची बनाएँ, क्या आप नवपाषाणयुगीन फसलों से ज्यादा फसलों के बारे में जानते हैं।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

Developed by: ABSOL www.absol.in

अध्याय-5

प्रारंभिक शहर : प्रथम नगरीकरण

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED WEBCOPY

pkSiky

xk¡o के चौपाल में jgeku vkSj jktho

jgeku vkSj jktho xk¡o ds pkSiky esa cSBs gq, FksA xk¡o ds yksx viuh n'k ds ckjs esa ppkZ dj jgs FksA ,d us dgk fd Hkkjrh; laLÑfr dkQh iqjkuh gSA nljs us dgk fd vaxzstksa us gesa lH; cuk;kA bl ij rhljs O;fDr us nljs O;fDr ds fopkjksa dk tksjnkj fojksèk fd;k vkSj dgk fd Hkkjrh; lH;rk nqfu;k dh çkphure lH;rkvksa esa ls ,d gSA jgeku vkSj jktho ,d nljs ls dgus yxs fd Hkkjrh; laLÑfr vkSj Hkkjrh; lH;rk dk D;k eryc gksrk gS\

WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED
© BSTBPC

uokik"kk.k ;qxhu LFky dk ekufp=

èkkrq ;qx ð;k gS\

uoik"k.k dky ds ckn èkkrq ;qx dk vkjEHk gqvkA ftl esa ekuo us èkkrq dk bLrseky 'kq: fd;kA /kkrq ;qx esa gh vkx pydj flUèkq esa dkVnh th vkj vejh] mÙkjh iatkc esa ljkbZ[kyk vkj tyhyiqj ,oa jktLFkku esa dkyhcaxk tSls LFkyksa dk fodkl gqvkA bu LFkyksa ij Ñf"k mRiknu cM+s iSekus ij gksus yxk] jaxs gq, feV~Vh ds cÙkZu dk bLrseky gksus yxk] ykx yEch nwjh dk O;kikj djus yxs] vkSj iDdh bZaV ds cus ?kjksa esa jgus yxs] ftlds pkjksa rjQ ls fdyscanh Hkh dh xbZ FkhA

धातु युग का आरंभ नवपाषाण काल के अंतिम चरण में हुआ, पहला धातु तांबा था जिसे नदी की तलहटी से प्राप्त किया जाता था। इस समय भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में कई ग्रामीण संस्कृति उदित हुई। इन संस्कृतियों के लोग बड़े पैमाने पर कृषि उत्पादन करने लगे थे। आप पिछले अध्याय में खेती की शुरूआत की परिस्थिति से परिचित हुए होंगे। ये संस्कृतियाँ अपनी विशिष्ट मिट्टी के बर्तन के लिए भी प्रसिद्ध थीं। इस समय की बस्तियाँ आमतौर पर छोटी होती थीं और इनमें बड़े आकार की बस्तियाँ नहीं के बराबर थीं।इन संस्कृतियों से जुड़ी कृषि पशुपालन तथा शिल्प के साक्ष्य मिले हैं।

ekuo lLÑfr lH;koLFkk esa dSls çoss'k djrh g

fdlh Hkh {ks= dh lLÑfr dk lE;oLFkk esa çoss'k djus ds fy, कुछ ekinaMksa dk ijk djuk gksrk gSA tSls og {ks= 'kgj esa rCnhल हो गया gks y[ku dyk fodflr gks xbZ gks] 'kgjh आबादी ds पालन–पोषण ds fy, xzkeh.k {ks=ksa ls t:jh phtksa dh पूर्ति होती हो, लंबी दूरी dk 0;kikj gksrk gks vkSj dkjhxjh dykओं तथा विज्ञान आदि dk fodkl gks x;k gksA gMlik lLÑfr bu lHkh मानदंडों को iwjk djrh FkhA uoik"kk.k ;qx ds ckn fo'o ds dbZ fgLlksं में मानवीय lLÑfr us lH;koLFkk esa çoss'k fd;k tSls Hkkjr esa हड़प्पा सभ्यता] bjkd esa eslksiksVkfe;k dh lH;rk] felz dh lH;rk] चीन की "kkx lH;rkA

lLकृति&lekt esa çpfyr jhfr&fjokt [kku&iku] oL=&Hkw"kk] jgu&lgu] èkkfeZd laLdkj vkfFkZd fØ;kdyki ds rkSj rjhds dyk dkS'ky ds fofoèk :i] Hkk"kk ,oa lkfgR; dh 'kSyh vkfn ijaijk,¡ tks ih<+h nj ih<+h ls pyh vk jgh gks mlls gh lLÑfr curh gSA bl çdkj lLÑfr ls rkRi;Z 0;fDr ds ifj"Ñr 0;ogkj ls gS] ftlls lekt }kjk lh[kk tkrk ,oa blds gLrkarj.k ,d ih<+h ls nwljs ih<+h rd gksrk jgrk gSA

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE REPUBLISHED

gMIik lH;rk dh [kkst

लगभग 150 साल पहले पश्चिमी पंजाब में रेलवे लाइन बिछाने के क्रम में हड़प्पा पुरास्थल के खंडहर का पता चला। इस खंडहर के महत्व को नहीं समझ पाने के कारण रेलवे ठेकेदारों ने हड़प्पा खंडहर के ईंटों का इस्तेमाल रेलवे निर्माण में किया। इस अज्ञानता के कारण हड़प्पा की कई इमारतें नष्ट हो गईं। सन् 1921 ई॰ में पुरातत्वविदों ने इस स्थल का व्यवस्थित उत्खनन किया। तब जाकर पता चला कि खंडहर उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक है। इसके बाद पुरातत्विदों ने अनेक नगरों का पता लगाया जिनमें मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, बनावली, लोथल और धौलावीरा प्रमुख है। पुराविदों ने लगभग 2800 हड़प्पा स्थल का पता लगाया है। चूँकि हड़प्पा नगर की खोज सबसे पहले हुई थी, इसलिए उपमहाद्वीप में हड़प्पा के समकालीन पाए जाने वाले सभी शहरों को हड़प्पा सभ्यता के शहर के नाम से जाना जाता है। इन सभी स्थलों से पुरातत्वविदों को अनेक महत्वपूर्ण वस्तुएं मिली हैं। जैसे–मुहरें, मनके, माप-तौल के बाट, कांसे के बने उपकरण, मिट्टी के बने बर्तन जिनपर काले रंग के चित्र बने थे। इन स्थलों से मूर्तियां भी मिली हैं।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

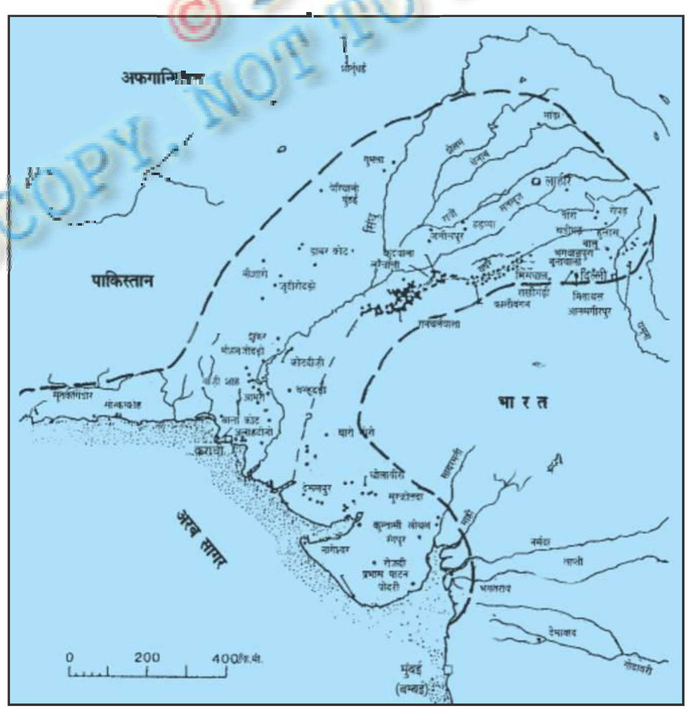

ekufp= gMIik lH;rk dk foLrkj {k=

gMlik uxjksa dh fLFkfr

uxj	[kkst dÙkk	o"kZ	unh rV
हड़प्पा	दयाराम साहनी	1921 ई०	रावी
मोहनजोदड़ो	राखालदास बनर्जी	1922 ई०	सिंधु
कालीबंगा	ब्रजवासी लाल	1961 ई०	घग्गर
लोथल	रंगनाथ राव	1954 ई०	भोगवा
धौलावीरा	आर० एस० बिस्ट	1989–90	
चन्हूदड़ो	गोपाल मजूमदार	1931	सिंधु
रंगपुर	माधोस्वरूप वत्स	1931–53	सादर

gMlik lH;rk ds uxjksa dh fo'ks"krk,¡ क्या थी

हड़प्पा सभ्यता के अधिकांश नगर दो हिस्सों में विभाजित थे। नगर का पश्चिमी

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

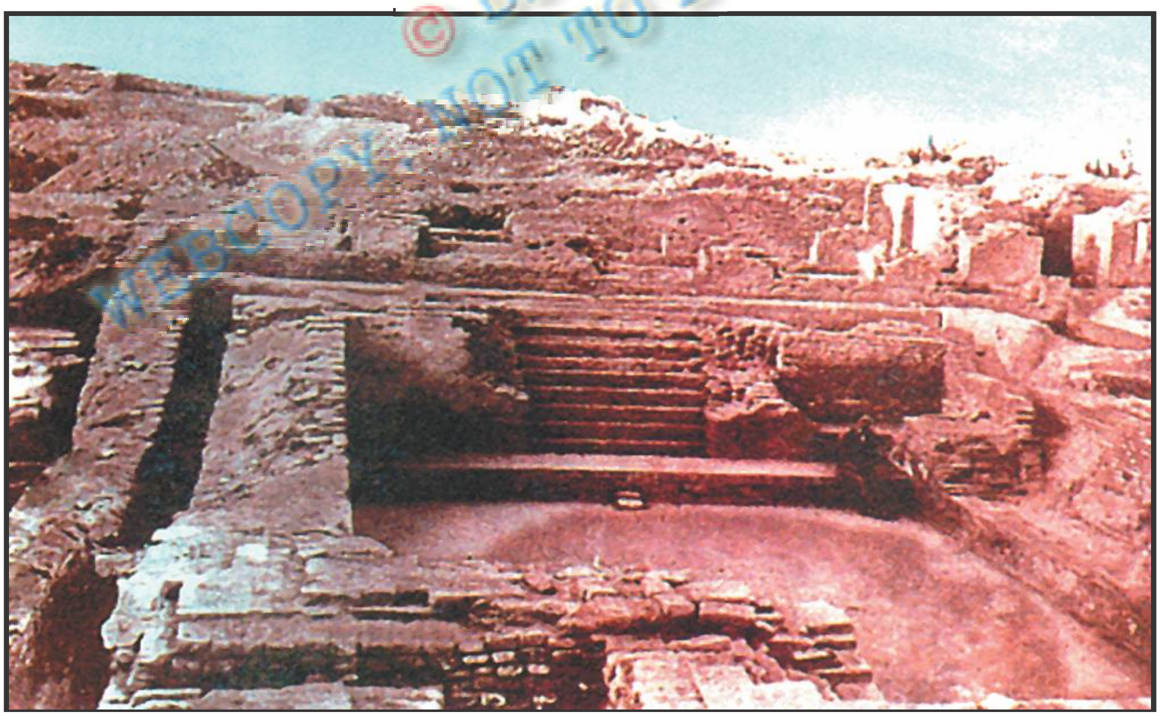

egkLukukxkj ekgu tksnM+ks esa fLFkr

हिस्सा छोटा परन्तु ऊँची जगहों पर बसा था जबकि पूर्वी हिस्सा बड़ा परन्तु निचले इलाकों में बसा था। ऊँची जगहों पर बसे छोटे हिस्सों को पुरातत्वविदों ने नगर दुर्ग कहा है और निचले इलाकों को निचला नगर कहा है। माना जाता है कि नगर दुर्ग में शहर के सुखी सम्पन्न लोग रहते थे जबकि निचले नगर में साधारण लोग रहते थे। नगर की चाहरदिवारियों का निर्माण ईंटों से की गई है। ईंटों के निर्माण एवं दीवार बनाने के लिए ईंटों की चिकनाई में उच्च तकनीक का प्रयोग किया जाता था, तभी तो हजारों साल बाद भी दीवारें मजबूती से खड़ी रह सकीं।

कुछ नगरों के दुर्ग वाले हिस्से में बड़ी इमारतें और आवासीय ढाँचे मिले हैं। इन इमारतों के नक्शे एवं निर्माण के तरीके विशिष्ट प्रकार के थे। मोहनजोदड़ों में एक तालाब मिला है जिसे पुरातत्वविदों ने महास्नानागार कहा है। तालाब के दोनों सिरों तक सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। तालाब का फर्श तराशी गई ईंटों से बना है। इसमें पानी का रिसाव रोकने के लिए प्लास्टर के ऊपर चारकोल की परत चढ़ाई गई है। तालाब के पास ही एक कुआँ मिला है। स्नानागार में पानी इसी कुएँ से निकालकर भरा जाता था। स्नानागार में पानी निकालने की भी व्यवस्था थी। स्नानागार के चारों तरफ कमरे बने हुए थे। ऐसा माना जाता है कि यहाँ विशिष्ट नागरिक विशेष अवसरों पर स्नान किया करते थे।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

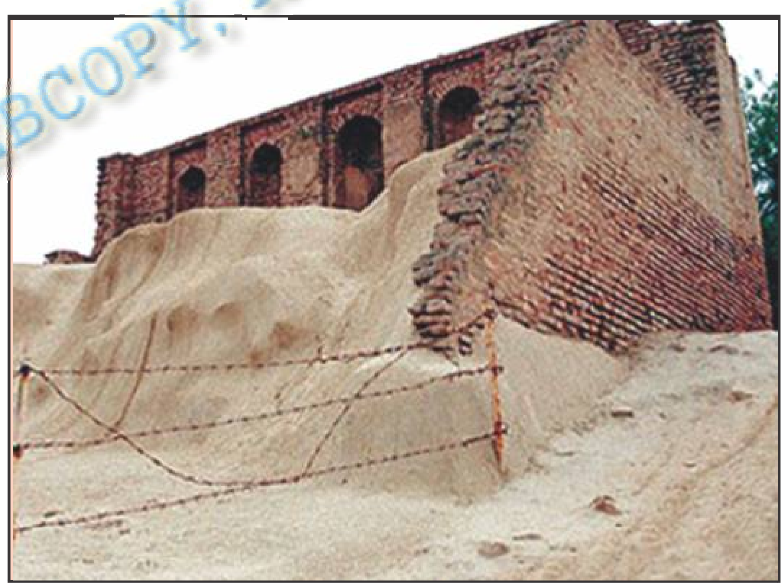

gMlik dk vUukxkj

मोहनजोदड़ो, हड़प्पा कालीबंगा और लोथल में एक समान विशेषताओं वाली संरचनाएँ मिली हैं, इन संरचनाओं को अन्नागार या कोठार के रूप में पहचाना गया है। इसी तरह कालीबंगा और लोथल जैसे नगरों में अग्निकुण्ड मिले हैं। संभवतः इसका इस्तेमाल यज्ञ के लिए किया जाता था।

uxjhdj.k dk vFkZ

uxjhdj.k ,d çfØ;k gS ftlds ek/;e ls uxjh; thou i)fr dk fodkl gksrk gSA uxjh; thou i)fr ls rkRi;Z uxj esa fuokl djus okys yksxksa ds oL=] vkHkw"k.k] [kku&iku] ckrphr] lcèk 0;ogkj i'kq bR;kfn ls gSA uxjhdj.k dh çfØ;k esa ,d uxjh; lenk; vfLrRo esa vkrk है। इस lenk; ds ikl l[k&lfoèkk ds lHkh vkèkfud lkèku होते हैं। ;gk ;krk;kr ,oa lnw'k okgd 0;oLFkk fodसित होrh gS। शिक्षा, ज्ञku] foKku] fpfdRlk] bR;kfn ls lcafèkr vनेक संस्थाएँ होती हैं। vkèkfud lk/ku rFkk cgeftyh bekjrsa bl की विशिष्टता होती हैA txg&txg vkoklh; dkyksuh gksrh gSA ty आपूर्ति, बिजली, vkifr] lQkbZ ;krk;kr bR;kfn dh n[kjs[k ç'kklu द्वारा की जाती gSA uxjhdj.k dh çfØ;k esa xkao viuk Lo:i [kks देता है और वहां Ñf"k dk;Z ugha gksrkA t :jh [kk| lkefxz;ksa dh आपूर्ति छोटिgj bykdksa ls gksus yxrh gSA Hkkjr esa uxjhdj.k dh çक्रिया हड़प्पा lLÑfr ds le; ls 'kq: gbZ tks vkt Hkh tkjh gSA Hkkjr dh yxHkx 28 çfr'kr tula[;k dk uxjhdj.k gks x;k gSA

bekjr] lMdsa vkSj ukfy;k

हड़प्पाई नगरों के घर प्रायः एक या दो मंजिले और कुछ तीन मंजिले भी होते थे। प्रत्येक घर में एक आंगन होता था और उसके चारों ओर कमरे बने होते थे। मकानों के दरवाजे और खिड़कियाँ मुख्य सड़कों की बजाए गली में खुलते थे। अधिकतर घरों में एक स्नानागार होता था, घरों में कुएँ भी पाए गए हैं।

नगरों में सुव्यवस्थित सड़कें और नालियाँ बनी हुई थीं और इनके साथ–साथ जल की निकासी के लिए नालियों का भी उचित प्रबंध किया गया था। नगर योजनाबद्ध तरीके से बसाए गए थे जिसकी गलियाँ तथा सड़कें एक दूसरे को लगभग समकोण पर काटती थीं। इस तकनीक की वजह से शहर कई आयताकार खंडों में विभाजित हो जाता था। जल निकासी की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। घरों से निकलने वाले मल–जल पास की गली में बनी हुई मध्यम आकार की निकास नालियों तक पहुँचते थे। मध्यम आकार वाली नालियाँ बड़ी सड़कों के साथ–साथ बने हुए बड़े नालों में मिलती थी। नाले ईंटों से ढँके होते थे। बड़े नालों में जगह जगह पर आयताकार गड्ढे बने होते थे जिनमें गंदगी इकट्ठी होती रहती थी। गंदगी को एक निश्चित समय पर साफ किया जाता था। इससे पता चलता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग स्वास्थ्य तथा सफाई के प्रति कितने जागरूक थे।

कुआँ का चित्र

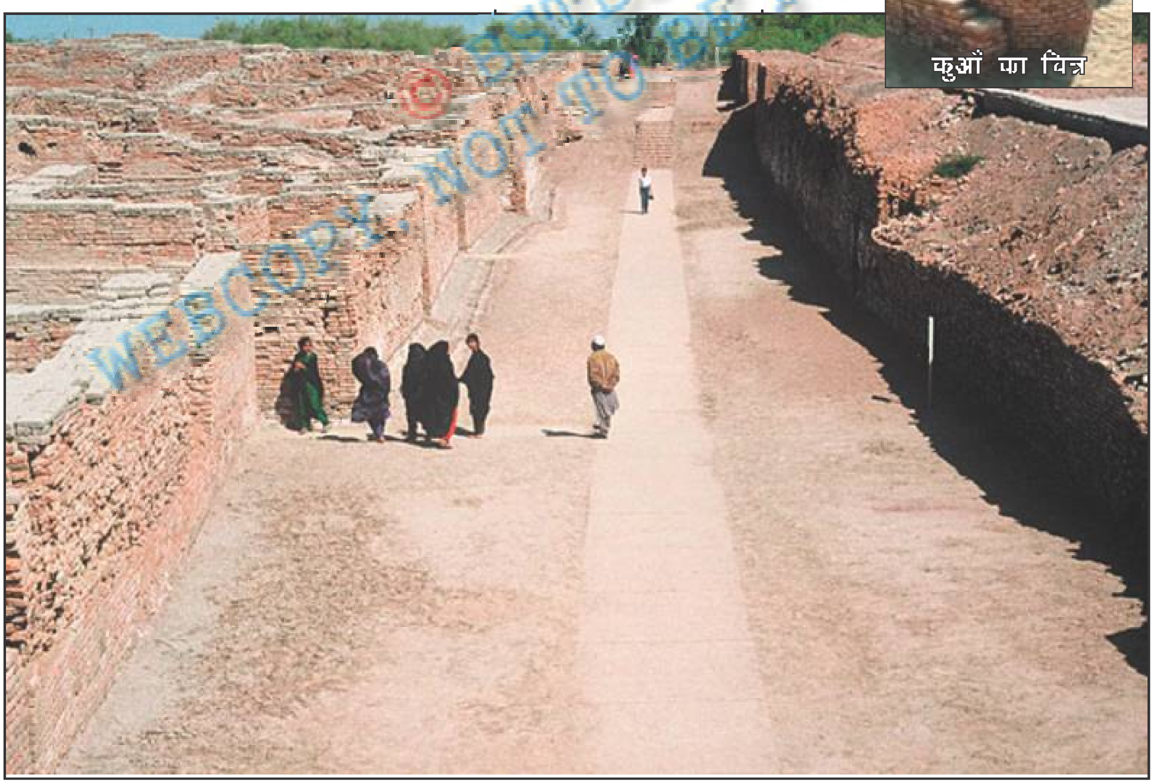

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

uxjh; thou

हड़प्पाई नगरों में पाई गई आवासीय इमारतें, सड़कें, गलियों एवं नालियों की सुनियोजित व्वस्था इस तथ्य को उजागर करती है कि हड़प्पा के शहरों की योजना में कुशल शासक वर्ग का हाथ रहा होगा। यह भी संभव है कि शासक शहर के लिए जरूरी धातुओं बहुमूल्य पत्थर एवं अन्य उपयोगी चीजों को मँगवाने के लिए लोगों को दूर—दूर के प्रदेशों में भेजते होंगे। नगर निर्माण में ईंटों के उपयोग से स्पष्ट होता है कि लोग व्यापक पैमाने पर ईंटें बनाने का काम करते होंगे। इन नगरों में लिपिक भी होते थे जो भोजपत्र या कपड़े पर लेखन—कार्य करते थे, जो अब नष्ट हो चुके हैं। उनके द्वारा मुहरों, हाथी—दांत आदि पर लिखे अभिलेख प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा नगरों में सोनार, पत्थर काटने वाले, बुनकर, नाव—निर्माता जैसे शिल्पकार (स्त्री—पुरूष) भी रहते थे जो अपने घरों या निर्माण—स्थल पर तरह—तरह की चीजें बनाते थे।

हड़प्पाई नगरों के निवासी सूती वस्त्रों तथा गरम कपड़ों का उपयोग करते थे। स्त्री—पुरूष हार, बाजूबन्द, अंगूठी, चूड़ी, कमरबन्द, कान की बाली तथा पायल जैसे गहने पहनते थे। इनके निर्माण में सामान्यतः सोना—चाँदी, हाथी—दाँत तथा ताम्बों का प्रयोग होता था। गहनों के निर्माण में गोमेद, स्फटिक, जैसे बहुमूल्य पत्थरों का भी इस्तेमाल किया जाता था। लोग चाक पर निर्मित आग में पके हुए मिट्टी के सादा तथा चित्रकारी वाले बर्त्तन का इस्तेमाल करते थे। ताम्बा, कांस्य, चाँदी तथा चीनी—मिट्टी के बर्त्तनों का भी उनके द्वारा उपयोग किया जाता था। सख्त पत्थरों से नाप—तौल के लिए बाट तथा गहने के तौर पर इस्तेमाल के लिए मनके का निर्माण किया जाता था।

vkHk"k.k

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

बच्चों के खिलौनों में छोटे चक्के वाली बैलगाड़ियाँ, पशुमूर्तियाँ आदि प्रमुख रूप से बनायी जाती थी। लोग पासे का खेल भी खेलते थे।

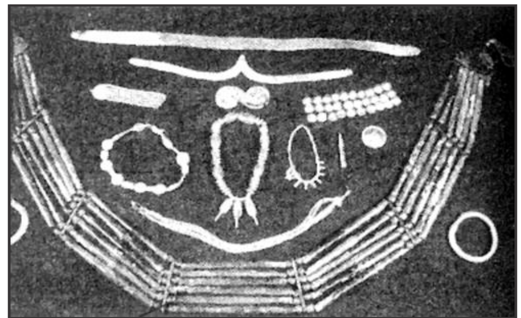

vkHk"k.k

egjsa % gMIik lH;rk ds fof'k"V y{k.k

हड़प्पाई शिल्पकला में शिल्पकारों द्वारा पत्थर की बनी मुहरें महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। मुहरों का प्रयोग संभवतः धनी लोग अपनी निजी संपत्ति को चिह्नित करने और पहचानने के लिए करते थे। हड़प्पाई मुहरें अपनी दो महत्त्वपूर्ण विशेषताओं के लिए जानी जाती हैं। प्रथम, इसपर जानवरों की सुन्दर कलाकृतियाँ मिलती हैं। और दूसरी, इस पर कुछ लिखा होता था। मुहरों पर लिखे अधिकांश लेखों में दो से चार शब्द ही पाए गए हैं। इस तरह हड़प्पाई लोगों ने

gMIikbZ egj

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED BSTBPC

gMIikbZ yksxksa dk vkfFkZd thou dSlk Fkk\

हड़प्पाई नगर गाँवों से घिरा होता था। गाँव के लोग ही शहर में रहने वाले लोगों के लिए खाने का सामान उपलब्ध कराते थे। ठीक वैसे ही जैसे आज के शहरों की खाद्य–सामग्री गाँव वाले उपलब्ध कराते हैं। हड़प्पाई लोग गेहूँ, जौ, मटर, धान, तिल और सरसों से परिचित थे। खेती जमीन को खोदकर तथा हल से भी की जाती थी। सिंचाई कुओं एवं नदियों पर बांध

बनाकर की जाती थी। खेती के अलावा हड़प्पाई लोग पशुपालन भी करते थे। गाय, भैंस, भेड़ और बकरियाँ मुख्य पालतू पशु थे। भोजन प्राप्त करने के अन्य साधन के रूप में खाद्य संग्रहण एवं शिकार भी चलता रहा।

हड़प्पा संस्कृति में व्यापार का बड़ा महत्त्व था। यह व्यापार हड़प्पा सभ्यता के भीतरी एवं बाहरी क्षेत्र से भी होता था। लेकिन वस्तुओं के निर्माण के लिए आवश्यक कच्चे माल की उपलब्धता हड़प्पाई नगरों में अपर्याप्त थी। इसीलिए हड़प्पाई सभ्यता के लोग राजस्थान (खेतड़ी) से तांबा, कर्नाटक (कोलार) से सोना, अफगानिस्तान एवं ईरान से चाँदी, अफगानिस्तान (बदख्शां) से वैदूर्यमणि, मध्य एशिया से फिरोजा गुजरात से समुद्री उत्पाद, जम्मू से लकड़ी आदि प्राप्त करते थे। मेसोपोटामियाई अभिलेखों में मेलुहा की चर्चा मिलती है। मेलुहा सिंधु क्षेत्र का प्राचीन नाम है। इससे स्पष्ट होता है कि हड़प्पा सभ्यता का व्यापारिक संबंध मेसोपोटामियाई सभ्यता से था।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

uxjokfl ;ksa dk èkkfeZd thou

हड़पाई लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे और उनमें मातृदेवी की पूजा का खूब प्रचलन था। हड़प्पा में पकी हुई मिट्टी की स्त्री-मूर्तियाँ भारी संख्या में मिली हैं। एक मुहर पर पुरुष देवता का भी चित्र मिला है। चित्रित देवता का सम्बन्ध पशुपति महादेव से स्थापित किया गया है। इसी तरह हड़प्पा वासी वृक्ष और पशु की पूजा करते थे। उनके बीच एक सींग वाला जानवर जो गेंडा हो सकता है, का विशेष महत्त्व था। उसके बाद कूबड़ वाला साँड़ महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था। हालांकि मातृदेवी, पुरुष देवता अथवा पशु–पूजा के अतिरिक्त किसी मंदिर का साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता में नहीं मिला है। हड़प्पाई लोग संभवतः भूत–प्रेत और जादू–टोना पर विश्वास करते थे। इसीलिए

i'kifr egj

उनसे बचने के लिए तावीज पहनते थे। हड़प्पाई लोग मृतकों को दफनाते एवं जलाते भी थे।

I{e fujh{k.k

èkkykohjk %

èkkykohjk xqtjkr ds mÙkj&if'pe dksu esa clk FkkA èkkykohjk gM+Iikbl 'kgjksa esa nks dkj.kksa ls egÙoiw.kZ LFkku j[krk gSA çFke lqi.kk 'kgj rhu Hkkxksa esa cVk gqvk Fkk&x<+h] eè;uxj vkSj fupyk uxjA blesa x<+h vkSj eè;uxj dh viuh&viuh fdykcanh Fkh tcfd fupyk uxj fdykcan ugha FkkA x<+h vkSj eè;uxj fdykcan gksrs gq, Hkh vkil esa tqM+s gq, FksA x<+h vkSj eè;uxj esa [ksy pkSM+k vkSj [kqyk eSnku cuk gqvk FkkA ,slk yxrk gS fd ;g [kqyk eSnku jktdh;] lkekftd] èkkfeZd lHkkvksa] mRloksa ;k lekjksgksa ds fy, bLrseky fd;k tkrk gksxkA nwljs] ;gka से एक ऐसे f'kykys[k dh çkfIr gqbZ gS ftlij cM+s v{kj vafdr किए गए हैंA çR;sd v{kj dk nèk tSls lQsn iRFkj ds टुकड़ों को मिलाकर बनाया ;k LQfVd pw.kZ dh ybZ dh enn ls cuk;k गया है।

ykFky %

ykFky [kaHkkr dh [kkM+h के निकट vgenkckn ls 80 fdyksehVj dh nwjh ij fLFkr ,d gM+Iikbl नगर FkkA 'kgj dh fdykcanh dh xbZ FkhA fdys ds Hkhrj futh और सार्वजनिक nqdku çdkj ds ?kj FksA xksnke] eudk vkSj Qkj.. की खाड़ी dh egjk ;gka ls ikbZ xbZ gSA yfdu ykFky] gM+Iikbl सभ्यता में blfy, egÙoiw.kZ LFkku j[krk gS fd ;gka ls ,d cnjxkg ds

ykFky dh cnjxkg

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

vo'k"k fey gSA ;gk¡ ls tyh; ekxZ ls O;kikj fd;k tkrk FkkA

gMIik lH;rk dk vr dk jgL;

लगभग 1700 ई॰ पू॰ हड़प्पा सभ्यता का ह्रास होने लगा था। हड़प्पा सभ्यता का अंत क्यों और कैसे हुआ, अभी तक मालूम नहीं। हड़प्पा सभ्यता के विनाश के लिए विद्वानों ने बहुत से कारण बताए हैं, जैसे—बाढ़ ने शहरों को डुबो दिया, भूमि में नमक की मात्रा एवं बंजरता बढ़ गई, बाहरी लोगों ने हड़प्पावासी पर हमला कर उन्हें समाप्त कर दिया। इसी तरह यह भी कहा गया कि वातावरण में भौतिक—रासायनिक परिवर्तन एवं पारिस्थितकी तंत्र में बदलाव हुआ जिससे लोग सैन्ध्व सभ्यता के स्थलों से दूर जाने के लिए विवश हो गए।

हड़प्पा संस्कृति के बारे में कहा जाता है कि सभ्यता के बड़े—बड़े तत्व का ह्रास जरूर हुआ लेकिन हड़प्पा—संस्कृति के बहुत से तत्वों की निरंतरता आगे विकसित होने वाली ताम्रपाषाणिक संस्कृति में बनी रही। यह संस्कृति राजस्थान में आहड़ संस्कृति, मध्यप्रदेश में मालवा संस्कृति, महाराष्ट्र में इनामगाँव एवं जोर्वे संस्कृति के नाम से जानी गई। आज भी हम मातृदेवी की पूजा एवं धार्मिक क्रियाकलाप करते हैं जिसकी शुरूआत हड़प्पा संस्कृति में हुई

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

थी।

अभ्यास

1- oLrfu"B ç'u %

(क) निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा कालीन स्थल नहीं है?

(i)	मोहनजोदड़ो	(ii)	कालीबंगा
(iii)	लोथल	(iv)	हस्तिनापुर

(ख) किस शहर से बन्दरगाह के अवशेष मिले है?

(i)	लोथल	(ii)	रापेड़
(iii)	कालीबंगा	(iv)	धौलावीरा

(ग) निम्न में से कौन हड़प्पा सभ्यता की विशेषता नहीं है?

(i)	शहरी जीवन	(ii)	ग्रामीण जीवन
(iii)	विदेशों के साथ व्यापार	(iv)	सुनियोजित नगर निर्माण

(घ) हड़प्पा सभ्यता की खोज किस वर्ष हुई थी?

(i)	1921	(ii)	1925
(iii)	1927	(iv)	1940

(ड़) महास्नानागार किस नगर से प्राप्त हुआ है?

(i)	हड़प्पा	(ii)	लोथल
(iii)	मोहनजोदड़ो	(iv)	कालीबंगा

2- fuEufyf[kr dk lqefyr djs %

सोना	—	गुजरात
फिरोजा	—	कर्नाटक
चाँदी	—	मध्य एशिया

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सीपियाँ — ईरान

3- vkb, fopkj djsa%

(i) हड़प्पा सभ्यता के नगरीय जीवन पर प्रकाश डालें।

(ii) हड़प्पा संस्कृति को हड़प्पा सभ्यता क्यों कहा जाता है?

4- vkb, ppkZ djsa%

(i) किसी समाज का नगरीकरण होने के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है, उन तत्वों की एक सूची बनाइए।

(ii) हड़प्पाई लोग देवी–देवता, पशु आदि की पूजा करते थे, उनकी सूची बनाइए।

(iii) हड़प्पा के लोग जिन फसलों से परिचित थे, उनकी सूची बनाइए उनमें फसलों में से आज आप किन–किन को जानते है।

5- vkb, djds ns[ksa%

(i) हड़प्पा शहर जिस तरह बसा हुआ था, उसका एक नक्शा बनाओ और तुम अपने गाँव या शहर का एक नक्शा बनाओ। दोनों नक्शों में समानता और असमानता को चिन्हित करें।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय-7

प्रांरभिक राज्य

बच्चों! आप लोगों ने अध्याय 6 में वैदिक काल के 'जन' और 'जनपद' के बारे में पढ़ा है। लगभग 3000 वर्ष पहले गंगा नदी घाटी क्षेत्र में लोहे के बने औजार एवं उपकरण के प्रमाण खुदाई से प्राप्त हुए हैं। साथ ही, मिट्टी से बने एक विशेष प्रकार के बर्तन (चित्रित धूसर पात्र)प्राप्त हुए हैं। इन साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि वैदिक जनों की पशुपालन के साथ–साथ कृषि कार्य में भी भागीदारी बढ़ी। इस कारण वे पहले की अपेक्षा स्थायी जीवन व्यतीत करने लगे। इन आर्थिक परिवर्तनों के कारण क्षेत्रीय स्तर पर छोटी–छोटी शक्तियों का जन्म हुआ। छोटे–छोटे 'जन' अब 'जनपद' बनते जा रहे थे। जनपदों के विकास में तीन रूप दिखाई देते हैं।

1. अधिकांश जन अकेले ही जनपद की अवस्था प्राप्त कर लिए– मत्स्य, चेदी, काशी, कोशल।
2. कुछ जनों ने आपस में मिलकर जनपद का रूप लिया– पांचाल जनपद इसका एक उदाहरण है।
3. अनेक जन, अधिक शक्तिशाली जनों से पराजित होने के बाद मिला लिये गये। मगध द्वारा अंग की विजय इसका उदाहरण है।

egkt.kinksa dk fodkl

लगभग 2500 वर्ष पहले, वैदिक काल के कुछ जनपद अधिक महत्वपूर्ण हो गये। इन्हें 'महाजनपद' कहा जाने लगा। बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में हमें 16 महाजनपदों का विवरण प्राप्त होता है। इनमें अंग, मगध, काशी, कोशल, वत्स, अवंति, वज्जि, मल्ल आदि महाजनपद मुख्य थे। इनमें कुछ महाजनपद आधुनिक बिहार की सीमा में भी स्थित थे।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

ekufp= esa lHkh egktuinksa dks igpkusaA dkSu&dkSu ls egktuin orZeku fcgkj çns'k dh lhek esa vkrs Fks

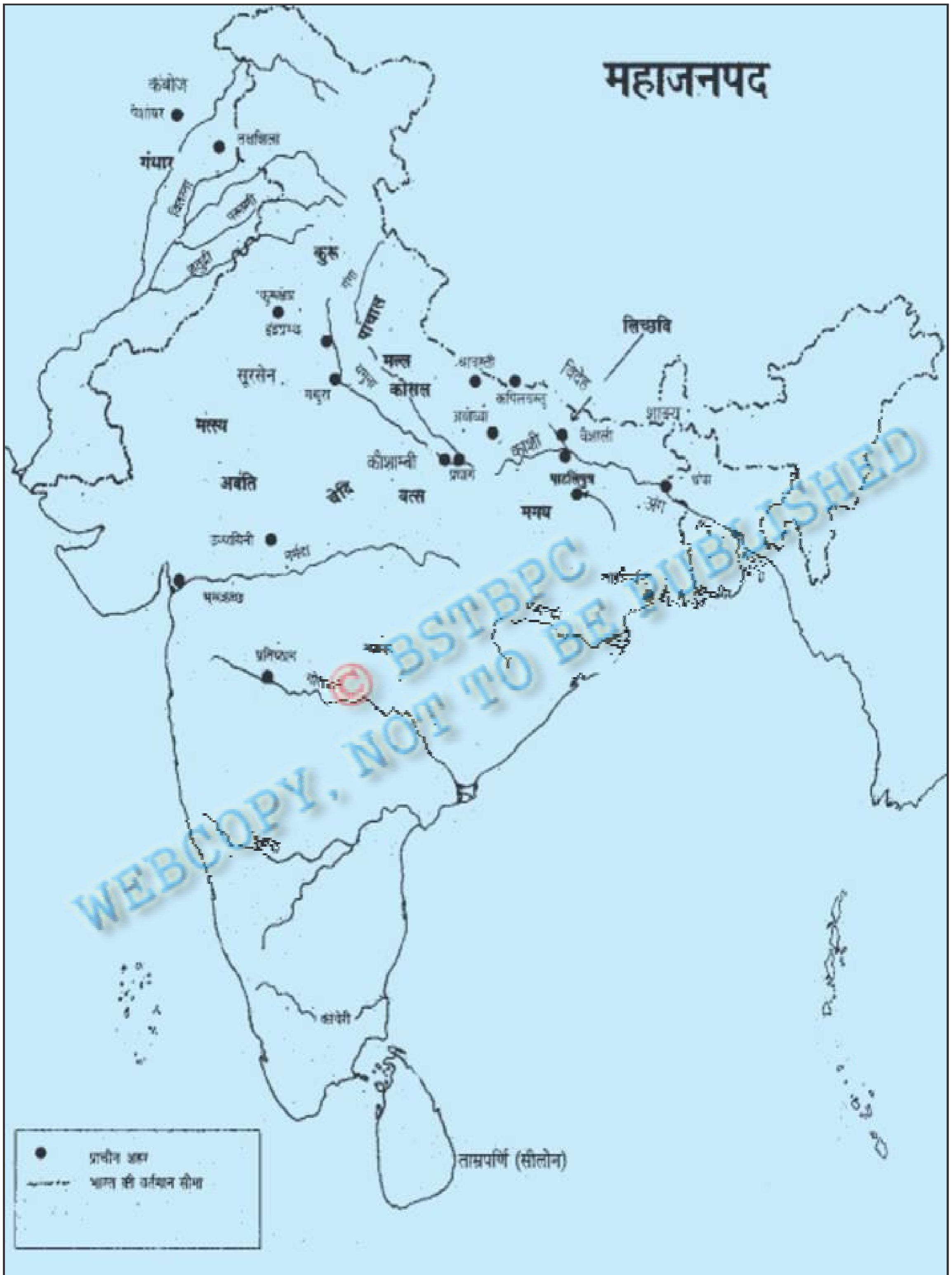

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

महाजनपदों में शासन का रूप एक जैसा नहीं था। कुछ में राजतंत्रात्मक शासन था तो कुछ में गणतंत्रात्मक। राजतंत्रात्मक व्यवस्था में राजा का पद वंशानुगत अथवा पैतृक (पिता के बाद पुत्र) था। महाजनपदों की राजधानियाँ शासन का केन्द्र थीं। राजधानियों में राजा, सेना एवं राजा के कर्मचारी रहते थे। कई राजधानियों में किलेबंदी की गई थी, जो लकड़ी, ईंट एवं पत्थरों की दीवारों से घिरी होती थी। ऐसा लगता है कि लोगों ने अन्य राजाओं के आक्रमण से डरकर अपनी सुरक्षा के लिए इन किलों का निर्माण किया होगा।

महाजनपदों के राजा ने स्वैच्छिक नजराना (बलि) के बजाय अब नियमित रूप से 'कर' वसूलने लगे। विभिन्न प्रकार के आर्थिक गतिविधियों से जुड़े लोगों–कृषक, कारीगर, व्यापारी, पशुपालक, आखेटक (शिकारी) आदि से 'कर' की एक निश्चित मात्रा वसूल की जाने लगी। फसलों पर लगाया जाने वाला कर सबसे महत्वपूर्ण था, क्योंकि अधिकांश लोग किसान थे। प्रायः उपज का 16वाँ हिस्सा कर के रूप में निर्धारित किया जाता था जिसे 'भाग' कहा जाता था। कारीगरों–बुनकर, लोहार, सुनार, बढ़ई को राजा के लिए महीने में एक दिन काम करना पड़ता था। व्यापारियों को सामान खरीदने–बेचने पर भी कर देना पड़ता था।

करों की वसूली से राजा समृद्ध होने लगा। राजा अपने कार्यों को सुगमता से कर सके, इसके लिए कर्मचारियों की आवश्यकता होती थी। वे नियमित वेतन देकर सेना एवं कर्मचारियों की नियुक्ति करने लगा। ये लोग राजा के प्रति वफादार एवं उत्तरदायी होते थे। वेतन का भुगतान संभवतः आहत सिक्कों के रूप में होता था। (इन सिक्कों के बारे में आप अध्याय 10 में पढ़ेंगें।)

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

exèk dk mRFkku

मगध का फैलाव मुख्यतः आधुनिक बिहार राज्य के पटना एवं मगध प्रमंडल (मुख्यालय गया) तक था। मगध के उत्थान में इसके निकटवर्ती क्षेत्र में पाई जाने वाली लोहे की खानें थीं, जो अच्छे हथियारों के निर्माण में सहायक थीं। मगध का राज्य गंगा नदी घाटी में स्थित होने के कारण उर्वर एवं उपजाऊ था। कृषि की समृद्धि एवं सम्पन्नता के कारण शासक वर्ग के लिए आर्थिक संसाधनों की प्राप्ति भी आसान थी। इस क्षेत्र में व्यापार एवं व्यवसाय भी

विकसित अवस्था में था। मगध क्षेत्र के जंगलों में हाथी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे, जिसकी सहायता से विरोधी राज्यों पर अधिकार करना आसान था। मगध के चारों ओर प्राकृतिक सुरक्षा के साधन थे। मगध की दोनों राजधानियाँ—राजगीर पहाड़ियों से एवं पाटलिपुत्र नदियों से घिरी थी। इसके अतिरिक्त मगध में बिम्बिसार, अजातशत्रु, महापद्मनंद जैसे योग्य शासक हुये, जिन्होंने अपने साहस और शक्ति से राज्य का विस्तार किया।

मगध का प्रथम महत्वपूर्ण शासक बिम्बिसार था। उसने अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए कोशल और लिच्छवी राजवंश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए। अपने राज्य की पूर्वी सीमा पर स्थित अंग महाजनपद पर आक्रमण कर मगध में मिला लिया तथा गंगा नदी के मार्ग से होने वाले व्यापार से अधिकतम लाभ प्राप्त किया। इससे राज्य के आर्थिक संसाधनों में वृद्धि हुई।

© RSIPRC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

बिम्बिसार का पुत्र अजातशत्रु अपने पिता के बाद मगध का राजा बना। उसने अपने पिता की साम्राज्य विस्तार की नीति का अनुसरण करते हुये कोशल और वज्जि संघ के साथ युद्ध किया। कोशल के राजा प्रसेनजित को युद्ध में पराजित करके काशी प्राप्त किया। अजातशत्रु ने अपने मंत्री वस्सकार की सहायता से वज्जिसंघ के सदस्यों में फूट डालकर उनकी शक्ति को कमजोर कर जीत लिया। अजातशत्रु ने अपने शत्रु राज्य अवंति से अपनी राजधानी राजगीर की सुरक्षा हेतु किलाबंदी कराई, जिसके अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। उसने गंगा, गंडक, सोन नदियों के संगम पर स्थित पाटलिग्राम में सैनिक छावनी (सेना के रहने का स्थान) का निर्माण किया, जो बाद में पाटलिपुत्र के नाम से विख्यात हुआ।

अजातशत्रु के बाद उदयिन मगध का राजा बना। उसने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। उसके काल में मगध और अवंति की शत्रुता काफी बढ़ गई थी। उस समय अवंति का राजा चन्द्र प्रद्योत था। इसने कई युद्धों में अवंति को हराया। फिर भी अवंति मगध राज्य का अंग नहीं बन सका। शिशुनाग ने अंतिम रूप से अवंति, वत्स और कोशल पर विजय प्राप्त की। मगध के अंतिम नंदशासक धनानंद के समय में यूनानी विजेता सिकंदर का भारत पर आक्रमण हुआ। लेकिन सिंकदर की सेना ने मगध पर आक्रमण करने से इंकार कर दिया।

क्योंकि मगध के राजा के पास एक विशाल सेना थी। धनानंद एक अत्याचारी राजा था। इसलिए वह प्रजा में काफी अलोकप्रिय था। इसका लाभ उठाकर चन्द्रगुप्त ने धनानंद को युद्ध में पराजित कर मगध पर अधिकार कर लिया। मगध की समृद्धि एवं शक्ति की बुनियाद पर मौर्यों ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जिसका अध्ययन आप अध्याय 9 में करेंगे।

गणराज्य

कुछ राज्य ऐसे थे जिसे 'गणराज्य' कहा जाता था। शाक्य, लिच्छवी, वज्जि, विदेह, तातृक, मल्ल, कोलिय, मोरिय आदि भारत के प्रमुख गणराज्य थे। यहाँ की शासन व्यवस्था अलग तरह की थी, जिसे 'गण' या 'संघ' कहते थे। गणतंत्र में शासन के प्रधान का चुनाव होता था। अधिकत्तर ऐसे गणराज्य छोटे आकार के होते थे अतः यह आपस में मिलकर संघ का निर्माण करते थे।

मगध के निकट वज्जि–संघ था, जिसकी राजधानी वैशाली थी (मानचित्र में वज्जि संघ की पहचान करें)। वज्जि संघ आठ गणें का संघ था जिसमें लिच्छवी, विदेह, वज्जि प्रमुख थे। वज्जि संघ में विभिन्न गणों के राजाओं की एक सभा होती थी। ये राजा विभिन्न अवसरों पर एक साथ एकत्र होते थे। सभाओं में बैठकर ये राजा आपस में विचार–विमर्श और वाद–विवाद के माध्यम से किसी निर्णय तक पहुँचते थे। वज्जि–संघ में लोकमत से शासन करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। गणों के प्रमुख या राजा नियमित तौर पर मिल बैठकर पूरे संघ के बारे में निर्णय लेते थे इस कारण से इसे गणराज्य कहा जाता है।

गण–गण शब्द का प्रयोग कई सदस्यों वाले समूह के लिए किया जाता है।

वज्जि–संघ में लिच्छवी एक प्रमुख गण था। इसकी सीमाएँ वर्तमान वैशाली एवं मुजफ्फरपुर जिले तक फैली हुई थीं। बिम्बिसार के काल में लिच्छवी लोग काफी शक्तिशाली थे। यहां का राजा चेटक था। चेटक ने अपनी लड़की का विवाह बिम्बिसार से कर मैत्री संबंध स्थापित किया। मगध के राजा अजातशत्रु ने लिच्छवी गण पर विजय प्राप्त किया था। इसके बावजूद उनका राज्य अब से लगभग 1500 वर्ष पहले तक चलता रहा। गुप्त राजा चन्द्रगुप्त (अध्याय 12 में पढ़ेंगे) ने भी एक लिच्छवी राजकुमारी से वैवाहिक संबंध स्थापित किया था।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

ofTt&l?k vkj vtkr'k=

ofTt l?k dk ;g o.kZu nh?k fudk; l fy;k x;k gA nh?k fudk; ,d ckS) xzFk g] ft lea egkRek cq) ¼vè;k; 8½ d dbZ 0;k[;ku fn, x, gA vtkr'k= ofTt l?k ij vkØe.k djuk pkgrk FkkA mlUgkus viu e=h oLLdkj dk cq) d ikl lykg d fy, HktkA

cq) u mulu iNk fd D;k ofTt lHkk,¡ fu;fer :i l gkrh g rFkk mue lHkh lnL; mifLFkr gkr g\ tc mUgs irk pyk fd ,slk gkrk g] mUgkus dgk fd ofTtokl h rc rd mUufr djr jgx] tc rd %

1- o i.k vkj fu;fer lHkk,¡ djr jgxA

2- vkil e fey tqy dj dke djr jgxA

3- ikjifjd fu;ek dk ikyu djr jgx ;

4- cMk dk lEeku] leFku vkj उनकी बातों पर ध्यान nr jgxA

5- ofTt efgykvk d साथ जोर-जबरदस्ती ugh djx vkj mUgs cèkd ugh cuk,xA

6- 'kgjk ,o xkoa में चोरों का j[k&j[kko djxA

7- fofHkUu मतावलंबी Jerk dk lEeku djx vkj mud vku ;k tku ij jkd नहीं लगाए;xA

> çkphu Hkkjr d x.kjkT; ,o orZeku x.kjkT; e vki D;k lekurk&vlekurk n[kr g\

uxjk dk fodkl

लगभग 3700 वर्ष पहले सिंधु सभ्यता (अध्याय 5) जिसे प्रथम नगरीकरण कहा जाता है लुप्त हो चुकी थी। उसके बाद अब दूसरी बार भारत में नगरों के प्रमाण एक लम्बे अंतराल के बाद मिलते हैं। करीब 2600 साल पहले (600 ई.पू.) उत्तरी भारत में द्वितीय नगरीकरण की प्रवृति का विकास हुआ। पाली ग्रंथों में उस समय के बड़े नगरों का उल्लेख मिलता है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

वाराणसी, वैशाली, चम्पा, राजगृह (राजगीर) कुशीनगर, कौशाम्बी, श्रावस्ती, पाटलिपुत्र (पटना) आदि नगरों समेत लगभग 62 नगरों के प्रमाण मिलते हैं।

नगरों के विकास के अनेक कारण थे और इनका विकास धीरे–धीरे हुआ। इस काल में नगरों के विकास में आर्थिक धार्मिक तथा राजनैतिक कारण प्रमुख थे। जैसे–जैसे विशाल राज्यों का गठन हुआ उसकी राजधानी भी अधिक विशाल और भव्य रूप धारण करने लगी। इस काल के अनेक नगर राजनैतिक और प्रशासनिक केन्द्रों के रूप में विकसित हुए, जहाँ शासक, पदाधिकारी और सैनिक वर्गों की प्रधानता थी। गाँव जहाँ कृषि आजीविका का मुख्य साधन था, वहीं नगरों में शिल्प और व्यापार जीविका के महत्त्वपूर्ण साधन थे। विभिन्न नगर विशिष्ट वस्तुओं के उत्पादन केन्द्रों के रूप में विकसित हुए। इनमें कपड़े बर्तन और अन्य सामान शामिल थे। उत्पादन अधिक होने से इन वस्तुओं को दूसरे नगरों में ले जाने और बेचने का काम आरंभ हुआ। इस तरह से ये नगर व्यापार के केन्द्र भी बने और इनकी आबादी भी बढ़ी।

कई नगर धार्मिक कारणों से भी विकसित हुए। किसी प्रमुख मंदिर या तीर्थ स्थान के आस–पास पुरोहित सेवक और अन्य कामों से जुड़े लोग स्थाई रूप से बसने लगे और यात्री दर्शन के लिए आने लगे इस कारण यह बस्तियाँ भी नगरों में परिवर्त्तित हो गयीं।

स्मरणीय है कि ऐसे नगर अधिकतर नदियों के किनारे या उस समय के प्रमुख मार्गों के पास विकसित हुए, क्योंकि व्यापार एवं सेना के आवागमन के लिए भी यह सुविधाजनक था। प्रत्येक नगर के आस–पास गाँव भी बसे होते थे, जहाँ से नगरवासियों को अनाज और वस्तुओं के उत्पादन के लिए कच्चे माल प्राप्त होते थे। व्यापारियों द्वारा प्राप्त मुनाफा और राजाओं द्वारा प्राप्त कर ने नगरों को सम्पन्न बनाया।

नगरों की आबादी भी बहुरंगी थी इनमें शासक, पुरोहित, व्यापारी, शिल्पकार, मजदूर, सेवक और दास सभी शामिल थे। इन अलग–अलग वर्गों या जातियों के बसने के लिए नगरों को विभिन्न मुहल्लों या भागों में बाँट दिया जाता था। इस प्रकार एक सुनियोजित नगरिये जीवन की रूप रेखा छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक उत्तर भारत में विकसित हो चुकी थी। इस प्रक्रिया को द्वितीय नगरीकरण भी कहा जाता है।

मानचित्र पृष्ठ 65 पर नजर डालिये आप देखेंगे की उसपर प्राचीन शहरों को अंकित किया

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

गया है उसकी सूची बनायें।

अभ्यास

vkb, ;kn djsa

1- fn, x, pkj fodYiksa esa ls lgh mÙkj pqusa

(क) महाजनपदों का विवरण प्राप्त होता है?

(i) ऋग्वेद (ii) बौद्ध एवं जैन ग्रंथ

(iii) चित्रित धूसर पात्र (iv) ब्राह्मण ग्रंथ

(ख) कौन–सा महाजनपद बिहार में स्थित है?

(i) अंग (ii) कोशल

(iii) कौशाम्बी (iv) अवन्ति

(ग) राजा भूमि की उपज का कितना हिस्सा प्राप्त करता था?

(i) छठा (ii) सातवां

(iii) पांचवां (iv) चौथा

(घ) मगध के शासक अजातशत्रु की राजधानी कहां थी?

(i) पाटलिपुत्र (ii) गया

(iii) वैशाली (iv) राजगृह

(ङ) निम्नलिखिता में से कौन गणराज्य था?

(i) मगध (ii) कोशल

(iii) वत्स (iv) लिच्छवी

2. [kkyh LFkku dks Hkjsa

(क) अवंति का राजा .... था।

(ख) वज्जि संघ की राजधानी .... थी।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

(ग) पाटलिग्राम की स्थापना .... ने की।

(घ) नंदवंश के शासक .... के समय सिकंदर का भारत पर आक्रमण हुआ।

(ड़) लिच्छवी .... संघ का एक गण था।

3. vkb, ppk djs

(क) राजा को कर की क्यों आवश्यकता पड़ी। उस काल में कौन–कौन लोग कर चुकाते थे?

(ख) महाजनपदों के राजा अपनी राजधानी को क्यों किलाबंदी करते थे?

(ग) मगध के उत्थान में प्राकृतिक संसाधनों की मुख्य भूमिका थी?

(घ) द्वितीय नगरीकरण के विकास पर चर्चा करें?

4. vkb, djd ns[ks

(क) प्रश्न 1 के आधार पर यह पता लगायें कि आज लोग किन–किन करों को चुकाते हैं?

(ख) गणराज्यों के शासन में लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। आज के प्रजातंत्र में लोगों की भूमिका से इसकी तुलना करें?

© BSTBPC
WEBCOPY..NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय-8

नए प्रश्न : नवीन विचार

iYyoh dh ftKklk

iYyoh dh ukuh iR;sd jfookj dks lqcg&lqcg Luku djus vkJe tkrh FkhA ,d fnu iYyoh us Hkh viuh ukuh ds lkFk pyus dh bPNk O;Dr dhA vxys jfookj dks iYyoh viuh ukuh ds lkFk vkJe igqaphA ogka ,d lk/kq ckck dFkk lquk jgs FksA mlus dFkk esa dbZ ,sls 'kCn Fks] ftlds vFkZ पल्लवी ugha le> ik jgh FkhA tSls&vkRek] ijekRek] czã vkfnA

बच्चों जैसा कि आपने अध्याय छह एवं सात में पढ़ा कि उत्तर वैदिक काल (1000—600 ई0पूर्व0) से लोहे का प्रचलन काफी बढ़ गया। इससे कृषि क्षेत्रों का विस्तार हुआ और कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। लौह उपकरणों के बढ़ते प्रयोग ने समूची अर्थ व्यवस्था को प्रभावित किया। इसी के आधार पर समाज में अलग—अलग व्यवसायों, व्यापार, वाणिज्य, सिक्कों का प्रचलन एवं नगरों का उदय हुआ।

उत्तर वैदिक काल से वर्ण व्यवस्था और भी जटिल होती जा रही थी। प्रारंभ में यह व्यवस्था कर्म पर आधारित थी बाद में इसका निर्धारण जन्म के आधार पर होने लगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र में ब्राह्मण एवं क्षत्रिय समाज के सबसे प्रभावशाली वर्ण थे।

सूद, कर्ज, नगरों, नागरिक जीवन को ब्राह्मण ग्रंथ घृणा एवं तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे।

इसमें ब्राह्मणों की स्थिति सबसे अच्छी थी। क्षत्रिय सुविधा प्राप्त वर्ण होने के बावजूद ब्राह्मणों से नीचे थे। वैश्यों के साथ भी यहीं बात थी। आर्थिक क्षेत्र में प्रगति के चलते वे काफी धनवान एवं खुशहाल हो गए थे। कुछ व्यापारियों के पास तो शासकों से भी अधिक धन था, परन्तु वर्ण व्यवस्था के कारण उनका स्थान तीसरा ही था। शुद्रों की हालत तो सबसे दयनीय थी। अतः समाज का प्रत्येक वर्ग, ब्राह्मणों को छोड़कर परिवर्तन चाहता था, जिससे उन्हें भी

©BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

समाज में समान अधिकार प्राप्त हो सके। इसके अलावे समाज में जाति प्रथा, दिखावा एवं कर्मकांड आदि बढ़ गये थे। बड़े और खर्चीले यज्ञों में पशुओं की बलि दी जा रही थी। फलतः बड़ी संख्या में पशुओं का सफाया हो रहा था। ऐसी स्थिति में जनसाधारण लोगों के लिए धर्म का पालन बड़ा कठिन हो गया था। लोग एक ऐसी धार्मिक व्यवस्था चाहते थे जिसमें सबके लिए स्थान हो।

ऐसे ही परिस्थिति में लगभग 600 ई0 पू0 के आसपास उपनिषदों का संकलन हुआ। उपनिषद उत्तर वैदिक ग्रंथों का हिस्सा थे। उपनिषद का शाब्दिक अर्थ है ^x: d lehi cBuk*A उपनिषदों में कठिन विषयों जैसे—आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म आदि पर चर्चाएँ मिलती हैं। प्रायः ये चर्चाएँ समान वार्तालाप के रूप में मिलती हैं। जैसे—पिता—पुत्र, पति—पत्नि, ब्राह्मण—क्षत्रिय, गुरू—शिष्य एवं जनसाधारण के बीच वार्तालाप। इन वार्तालापों में ज्यादातर पुरूष भाग लेते थे। कभी—कभी गार्गी जैसे स्त्री विचारकों का भी उल्लेख मिलता है। गार्गी राजदरबारों में होनेवाले वाद—विवादों में हमेशा भाग लिया करती थी।

cPpk ! vkiykxk u ufpdsrk का नाम सुना होxkA ufpdrk vki gh dh rjg ,d ckyd FkkA mlds eu esa एक बार सवाल mBk ^eju ds ckn gekjk D;k gksrk*\ mlus irk pyk fd ;ejkt gh मृत्यु ds norrk gSA vr% mUgha ls ;g loky djuk pkfg,A og fuf'pक होकर rhFk ;ejkt ds ikl x;k vkSj iNk *eju ds ckn gekjk D;k होता है' ?

ufpdsrk dh de mez dks n[krs gq, ;ejkt mlls bl iz'u dk mÙkj ugha nuk pkgrs FksA bl iz'u ds cnys esa rEgs lkuk nxk] pkanh nxk] xk;s nxkA exj rqe bl iz'u dk u iNkA blds mÙkj rks norrk Hkh ugha tkursA ufpdsrk ;ejkt ds lkjs izyksHkuksa dks Bqdjkdj viuk iz'u ij vMk jgk mldh fufHkZdrk vkSj bekunkjh ls [kq'k gksdj&;ejkt us vkRek dk Lo:i crkrs gq, dgk ^;g vkRek u tUe yrh gS vkSj u ejrh gSA u ;g fdlh nlj s mRiUu gbZ gS vkSj u dksbZ nljk gh mlls mRiUu gvk gSA 'kjhj ds u"V gksus ij Hkh og ugha ejrh*A

याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नी का वार्त्तालाप भी उल्लेखनीय है। याज्ञवल्क्य ने घर छोड़कर जंगलों में रहने की इच्छा व्यक्त की । इस अवसर पर उनकी पत्नी मैत्रायी ने उनसे लम्बी बातचीत (प्रश्नोत्तर के रूप में) की। इस बातचीत का मतलब था कि धन–सम्पत्ति से आदमी बड़ा नहीं होता है । अपने और अपने समाज के लोगों की समस्याओं के बारे में सोंचने से ज्ञान की प्राप्ति होती है। कभी–कभी समाज के गरीब पुरूष भी इस चर्चा में भाग लिया करते थे। सत्यकाम जाबाल एक ऐसा ही गरीब व्यक्ति था। उसके मन में सत्य जानने की इच्छा हुई। इसके लिए वह गौतम नामक ब्राह्मण के पास गया। गौतम ने उसे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार किया। आगे चलकर सत्यकाम जाबाल अपने समय के प्रसिद्ध विचारक बन गए।

इस प्रकार छठी शताब्दी ई0 पू0 में, जिस समय जनसाधरण में धर्म के प्रति लगाव कम होता जा रहा था। तत्कालीन समाज में कर्मकाण्डों की प्रधानता बढ़ती जा रही थी। उपनिषदों की शिक्षा ने लोगों को नये ढंग से सोचने एवं विचार करने का रास्ता दिखाया। ऐसी ही परिस्थिति में कुछ विचारकों ने समाज में फैली बुराइयों का विरोध कर नए विचारों और सिद्धान्तों को लोगों के सामने रखा। इन विचारकों में गौतम बुद्ध तथा महावीर प्रमुख थे।

बुद्ध का जन्म 563 ई0 पू.0 नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के लुम्बिनी वन में हुआ था। इनके पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम महामाया था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ बचपन से ही चिंतनशील थे। अन्य बालकों की तरह खेल–कूद में उनकी रूची नहीं थी। वे प्रायः एकान्त में बैठकर जीवन–मरण की गंभीर समस्याओं पर विचार किया करते थे। आगे चलकर यशोधरा से इनका विवाह हुआ। इनके पुत्र का नाम राहुल था।

सिद्धार्थ ने अपने चारों ओर लोगों को कष्ट में पाया। अपने प्रारम्भिक जीवन काल में बुद्ध ने अलग–अलग दुःखों से पीड़ित लोगों को, जैसे– रोगी को, बूढ़े व्यक्ति को, मृतक की अर्थी को एवं एक सन्यासी को देखा। इन दृश्यों को देखने के बाद उनके मन में कई प्रश्न उठे– आदमी क्यों बूढ़ा होता है ? क्यों उसकी मृत्यु होती है आदि ? उन्होंने सोचा संसार के सभी सुख बेकार और कम समय के लिए हैं। अंततः अपने प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए एक रात अपने प्रिय घोड़े पर सवार होकर घर से निकल पड़े।

© BETBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

fdlh vlgk; vkj n%[kh O;fDr dk n[kdj vki D;k lkprs g\

सिद्धार्थ ने अनेक आर्चायों (गुरूओं) से शिक्षा ग्रहण की। किन्तु उन्हें संतोष नहीं हुआ। इसके बाद उन्होंने छह वर्षों तक कठोर तपस्या की और अंत में अन्न–जल सब त्याग दिया। इसी समय गाने वाली स्त्रियों से उन्होंने ये शब्द सुने। अपने वीणा के तार को इतना मत कसो कि वे टूट जाएँ और न इतना ढीला ही करो कि उनसे संगीत ही न निकले। अर्थात् परिस्थिति के अनुसार ही जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। सिद्धार्थ ने यह सुनकर मध्यममार्ग को ही ठीक समझा। गया के पास बोधगया में एक पीपल वृक्ष के नीचे उन्हें अपने प्रश्नों का उत्तर मिला, जिसके कारण उन्होंने घर छोड़ा था अर्थात् उन्हें सत्य का ज्ञान मिला। ज्ञान की प्राप्ति के बाद उन्हें बुद्ध कहा जाने लगा और उनके शिष्य बौद्ध कहलाए।

महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। यह घटना 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहलाता है। इस घटना को यादगार बनाने के लिए बाद में सम्राट अशोक ने (अशोक के बारे में आप विस्तृत रूप से अगले अध्याय में पढ़ेंगे)। सारनाथ में एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया।

© BSEB WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

v'kkd }kjk fufer lkjukFk dk Lrwi

उसके बाद बुद्ध ने मगध, वैशाली और भारत के अन्य जगहों पर घूम–घूमकर अपने उपदेशों को लोगों के सामने रखा। शीघ्र ही उनका बौद्ध धर्म लोकप्रिय हो गया। 80 वर्ष की आयु में 483 ई0पू0 में कुशीनगर (गोरखपुर) में उनकी मृत्यु हुई। मगध के राजा बिम्बिसार उनके प्रमुख अनुयायी बने ।

Hkxoku c) ,o ck) fHk{kvk d ej.kkijkUr mud 'kkjhfjd vo'k"kk ij fufer ljpuk dk Lri dgk tkrk gA lkjukFk] ukyink] lkph vkfn txgk ij ,l Lri n[k tk ldr gA

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE REPUBLISHED

egkRek c) dk min'k nr g, fp=

बुद्ध ने जात–पात, ऊँच–नीच के भेदभाव तथा धार्मिक जटिलता को गलत बताया। एक आदमी अच्छा है या बुरा यह बात उसके व्यवहार को देखकर कही जा सकती है। बुद्ध के सिद्धांत को समाज का कोई भी वर्ग अपना सकता था। उन्होंने लोगों को दयालु तथा मनुष्यों के साथ–साथ जानवरों एवं पशु–पक्षियों से भी समान रूप से प्रेम करने की शिक्षा दी।

बुद्ध लोगों को दूसरे की शिक्षा या सिद्धांत को अपने विवेक के आधार पर अपनाने की सलाह देते थे।

thok ij n;k

,d ckj c) fHk{kkVu d fy, tk jg FkA jkLr e ,d xMfj;k cgr lh HkMk dk gkd fy, tk jgk FkkA c) u n[kk HkM d ,d cPp d ij e pkV yxh gb gA blfy, og yxMk dj py jgk gA ij e ihMk d dkj.k og ckj& ckj HkMk l ihN jg tkrk FkkA eeu dh ek viu cPp dk ckj&ckj ihN eMdj n[krh FkhA c) l ml eeu dh ihMk n[kh u x;hA mUgku ml cPp dk xkn e mBk fy;k vkj o HkM d ihN&ihN pyu yxA ,l d:uke;h Fk] Hkxoku c)A

vkb, n[k] mUgku ,lk fdl idkj fd;k \

बुद्ध ने अपने विचार लोगों को उनकी ही भाषा पाली में दिया। महात्मा बुद्ध के उपदेश बिल्कुल सीधे–साधे थे। उन्हें सामान्य लोग आसानी से समझ सकते थे।

बुद्ध के अनुसार मनुष्य को चार प्रमुख सिद्धांत (आर्य सत्य) को हमेशा याद करना चाहिये। ये सिद्धांत निम्न हैं–

1. **n`[k &** बुद्ध ने जन्म, मृत्यु, रोग, इच्छित वस्तु की प्राप्ति न होना आदि को दुःख माना है।

2. **n`[k dk dkj.k&** बुद्ध के अनुसार दुःख का मुख्य कारण इच्छा (तृष्णा) है। जब मनुष्य को कोई इच्छित वस्तु नहीं मिल पाती है तब उसे दुःख होता है।

3. **दु:ख निरोध –** बुद्ध के अनुसार इच्छाओं पर नियंत्रण कर सांसारिक दुःखों को दूर किया जा सकता है।

4. **n`[k fujkèk ekxZ&** बुद्ध ने दुःखों को दूर करने का मार्ग भी बताया है जिसे आष्टांगिक मार्ग कहते हैं। इसे मध्यममार्ग भी कहा जाता है क्योंकि यह मार्ग न तो अधिक सरल है और न अधिक कठिन। सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन में इन आठ बातों का पालन कर सांसारिक दुःखों से छुटकारा पा सकता है अर्थात परम शान्ति (निर्वाण) को प्राप्त कर सकता है।

इस मार्ग पर चलने के लिए बुद्ध द्वारा बताये गये आठ आदर्श इस प्रकार हैं–

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

(i) **lE;d ¼'k)½ nf"V &** सत्य–असत्य, पाप, पुण्य अच्छा–बुरा आदि को अच्छे ढंग से समझना।

(ii) **lE;d ladYi &** इच्छा और हिंसा से मुक्त विचार सम्यक संकल्प कहलाते हैं।

(iii) **lE;d ok.kh &** अपनी वाणी (बोलचाल) में मनुष्य को विनम्र होना चाहिए।

(iv) **lE;d de &** व्यक्ति को अपने जीवन में अच्छे व सही कार्य करने चाहियें।

(v) **lE;d vktho &** जीवन यापन हेतु सही साधनों का प्रयोग करना चाहिये। हमें झूठ एवं गलत तरीकों से धन नहीं कमाना चाहिये।

(vi) **lE;d 0;k;ke &** सही तथा ज्ञानयुक्त (प्रयत्न) मन से बुरी भावनाओं को दूर रखने का प्रयास।

(vii) **lE;d pfj= &** मनुष्य को अच्छे आचरण एवं अच्छी बातों का जीवन में बार–बार प्रयोग करना चाहिये।

(viii) **lE;d lekfèk&** किसी विषय पर एकाग्रचित होकर विचार–विमर्श करना।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

बुद्ध के उपरोक्त बताये गये मार्ग पर चलने के बाद मनुष्य आनन्द तथा शान्ति का अनुभव करता है।

बुद्ध ने बौद्ध संघों की स्थापना की जिसमें सभी जातियों के पुरुषों और महिलाओं को शामिल होने की आजादी थी। संघ में प्रवेश लेने वाले लोग अपनी आवश्यकताओं को कम से कम करते हुए, सादा जीवन जीते थे। अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वे भिक्षा मांगते थे। इसी कारण उन्हें भिक्षु (पुरुष) तथा भिक्षुणी (महिला) कहा गया। इनके रहने के स्थान को विहार कहा जाता था।

अपनी सादगी और सरलता के कारण भारत के साथ–साथ विदेशों में भी यह धर्म काफी लोकप्रिय हुआ। श्रीलंका, चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत आदि देशों में इसके अनुयायियों की संख्या काफी अधिक है।

भारतीय समाज के सभी पक्षों को बौद्ध धर्म ने प्रभावित किया। सम्राट अशोक ने लोक

कल्याण, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता तथा साम्राज्य विस्तार न करने का निश्चय बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर किया (इसके बारे में आप विस्तृत रूप से आप अगले अध्याय में पढ़ेंगे)।

धार्मिक क्षेत्र में अनेक बदलाव आये। धीरे–धीरे यज्ञ, बलि एवं कर्मकाण्डों में कमी हुई। नालन्दा, विक्रमशिला जैसे बौद्ध मठ स्थापित हुए।

**ck) /ke l tqM+s LFkyksa dh lwph cuk;saA vxj vki dks nks LFkyksa ij Hkze.k djus dk ekSdk feys rks iFke nks esa fdl dk p;u djsxs vkSj D;ksa **

tSu /keZ %

इसी समय बौद्ध धर्म की तरह जैन र्धम भी जनसाधारण को अपनी नई विचारधारा से प्रभावित कर रही थी। जैन धर्म के संस्थापक ऋृषभ देव थे। जैन धर्म में कुल चौबीस तीर्थंकरों के होने की बात कही जाती है। तीर्थंकर का अर्थ धर्म का प्रचार करते हुए दूसरे को रास्ता बताने वाला होता है। तीर्थंकरों के क्रम में तेंइसवें थे पार्श्वनाथ जो काशी के अश्वसेन के पुत्र थे।

tSu 'kCn ^ftu* 'kCn से निकला है जिसका vFkZ gS ^thrus okyk*A

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

चौबीसवें तथा अंतिम तीर्थंकर महावीर इस धर्म के सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचारक थे। इन्होंने इस धर्म में अपेक्षित सुधार करके इसका व्यापक स्तर पर प्रचार किया।

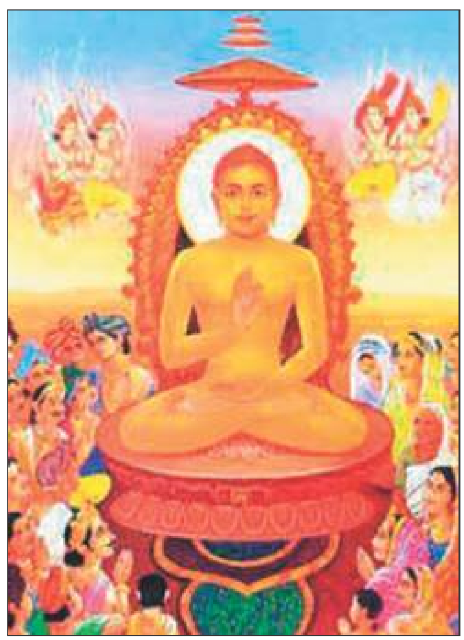

o)Zeku egkohj

महावीर का मूल नाम वर्द्धमान था। वर्द्धमान का जन्म 540 ई0पू0 वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ जातक क्षत्रिय कुल के प्रधान थे। इनकी माता त्रिशला वैशाली की लिच्छवी राजकुमारी थी।

**fyPNoh jkT; Fkk ;k x.kjkT; irk djsa **

वर्द्धमान का विवाह 'यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ था। तीस वर्ष की उम्र में वर्द्धमान ने राजमहल की सारी सुख–सुविधाओं को त्याग कर घर छोड़ दिया और जंगल में रहने लगे। बारह वर्ष की कठोर तपस्या के बाद उन्हें ज्ञान(कैवल्य) की प्राप्ति हुई।

**egkRek c) ,oa Hkxoku egkohj ds ikfjfHkd thou esa vki D;k lekurk,¡ ikrs gSa ppk fdth, **

ज्ञान प्राप्ति के बाद वे महावीर कहलाए। बहत्तर वर्ष की उम्र में 468 ई0पू0 में पावापूरी में उनकी मृत्यु हुई।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

ikokiqjh dk ty efnj

भगवान बुद्ध की तरह महावीर के उपदेश सरल थे। जैन धर्म में सदाचार या अच्छे आचरण के लिए कई सुझाव बताए गए हैं। जैन धर्म में अंहिसा का मुख्य स्थान है। भगवान महावीर का मानना था कि पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों और हवा में उपस्थित अदृश्य कीटाणुओं में भी जीवन है। इसलिए जैन साधु मुँह और नाक पर कपड़ा बाँध कर चलते हैं ताकि हवा द्वारा कीड़े उनकी नाक में पहुँच कर नष्ट न हो जाएँ। स्मरण करें भगवान बुद्ध ने भी अंहिसा को अपनाने की बात कही थी।

egkohj uskd ij diMk ckf/ku ;k <duk Ikvkj D;k&D;k Qk;ns gks Idrs gS\ ppkZ fdth,A

जैन धर्म के अनुसार मनुष्य को सत्य का सहारा लेकर जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। सत्यपूर्वक जीने के लिए मनुष्य को क्रोध, लोभ और भय तीनों का परित्याग करना चाहिए।

महावीर ने लोगों से चोरी न करने की बात कही थी। बिना आज्ञा एवं अनुमति के हमें दूसरों का सामान नहीं लेना चाहिए। इसके साथ ही ईमानदारी पर बल देते हुए। आवश्यकता से अधिक धन का संग्रह न करने की बात कही थी। भगवान बुद्ध की तरह अच्छे चरित्र निमार्ण के लिए महावीर ने लोगों से ब्रह्मचर्य का पालन करने की बात कही। इसका अर्थ है मनुष्य को अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिए।

महावीर ने अपनी शिक्षा आम लोगों की भाषा प्राकृत में दी। देश के अलग–अलग हिस्सों में प्राकृत के अलग–अलग रूप प्रचलित थे। जैसे–मगध में बोले जाने वाली प्राकृत मागधी कहलाती थी। महावीर ने सभी मनुष्यों को समान माना, इन्होंने स्त्रियों को पुरूषों के समान संघ में प्रवेश देना स्वीकार किया।

Lej.k djs % mifu"knksa esa IkxhZ tSls L=h fopkjdks dk mYys[k gSA Hkxoku c) us Hkh अपने संघ esa fL=;ksa dks izos'k dh vkKk nh FkhA c) rFkk egkohj nksuksa dk ekuuk Fkk fd ?kj dk R;kx djus ij gh lPps Kku dh izkfIr gks ldrh gSA ,sls yksxksa ds fy, mUgksaus l?k uked laxBu cuk;kA tgk ?kj dk R;kx djus okys yksx ,d lkFk jg ldsA

महावीर ने अपने उपदेशों में कर्म की प्रधानता दी। उनके अनुसार मनुष्य भी अच्छे कार्यों द्वारा पूजनीय बन सकता है। जीवन का उद्देश्य आनंद की प्राप्ति। इस प्राप्ति के लिए जैन धर्म में तीन मार्ग बताए गए हैं।

lE;d n'ku % आत्मा सभी जीवधारियों के शरीर में निवास करती है। इसलिए मनुष्य को सभी प्राणियों को अपने समान समझना चाहिए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

lE;d Kku % सम्यक दर्शन से सम्यक ज्ञान की प्राप्ति होती है और मनुष्य को अज्ञानता, क्रोध, लोभ, मोह आदि से छुटकारा मिल जाता है

lE;d pfj= % इसका अर्थ अच्छे आचरण एवं व्यवहार से है। अपने विचारों और बोली पर नियंत्रण रखने से अच्छे चरित्र की प्राप्ति होती है।

जैन धर्म में इसे 'त्रि–रत्न' भी कहा गया है। जैन धर्म के अनुयायियों का ऐसा मानना है कि इस मार्ग पर चलने से मनुष्य जीवन–मरण के दुःखों से छुटकारा पा सकता है।

ck) /ke d ^vk"Vkfxd ekx* dh rqyuk tSu /ke d ^f=&jRu* ls fdth,A

अभ्यास

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

vkb, ;kn dj %

1. oLrfu"B i'u %

(क) गौतम बुद्ध का जन्म कब हुआ था ?

(i) 563 ई०पू० (ii) 463 ई०पू०

(iii) 540 ई०पू० (iv) 551 ई०पू०

(ख) जैन र्धम के संस्थापक कौन थे ?

(I) पार्श्वनाथ (ii) ऋषभदेव

(iii) महावीर (iv) गौतमबुद्ध

(ग) महावीर ने कब निर्वाण (मृत्यु) प्राप्त किया?

(i) 438 ई०पू० (ii) 468 ई०पू०

(iii) 322 ई०पू० (iv) 298 ई०पू०

(घ) जल मंदिर कहाँ अवस्थित है ?

(i) पावापुरी (ii) राजगृह

(iii) नालन्दा (iv) वैशाली

2- fuEufyf[kr 'kCnk dh lgk;rk l [kkyh LFkkuk dk Hkfj,A

(i) महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। यह घटना .... कहलाता है।

(ii) बुद्ध ने जीवन जीने के लिए................अपनाने की सलाह दी।

(iii) नचिकेता की कहानी................से ली गई है।

(iv) उपनिषदों में................विषयों पर चर्चा मिलती है।

(v) महावीर के लिए................शब्द का प्रयोग हुआ है।

(vi) बौद्ध और जैन संघों के अनुयायी................मांग कर खाते थे।

3- fuEufyf[kr dk lqefyr djA

(i)	बोधगया	(क)	बौद्ध धर्म का अनुयायी
(ii)	गार्गी	(ख)	उपनिषद्
(iii)	त्रि–रत्न	(ग)	एक प्रमुख स्त्री विचारक
(iv)	विचारों का संकलन	(घ)	जैन धर्म
(v)	बिम्बिसार	(ङ)	महात्मा बद्ध

4- xkre cq) के अनुसार & nq[k D;k gkrk g\

5- महावीर के ज्ञान'kk dk fy[kA

6- mrfu"kn e fdu fopkjk dk mYy[k g\

ckrphr dhft,@ vkvk ppk djA

7- D;k okLro e cj ;k vPN dke ls dkbl vrj ugh iMrk g\ vki viu vklikl d mnkgj.kk dk è;ku e j[kdj ppk dhft,A

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

dN djd nf[k,@vkvk djd n[kA

8- **dN ,l fopkjdk dk irk yxkvk ftUgkus l[k lfoèkkvk dk R;kx dj lekt d ykxk dk ,d ubl fn'kk nhA**

9- **mifu"kn e of.kr dN ,lh dgkfu;k dk ldyu dj ftl d iie[k ik=A vki gh d tl k dkbl ckyd FkkA**

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय-9

प्रथम साम्राज्य

lj'k viuh ek¡ ds lkFk x.kra= fnol dh ijsM ns[kus iVuk ds xka/kh eSnku esa vk;hA dN gh nsj esa fu/kkZfjr le; ij fof'kkV >kafd;ksa ds lkeus ls xqtjus yxhaA ,slh gh ,d >kadh Fkh ftl ij fy[kk Fkk ^ex/k lkezkT; dk egku lezkV v'kksd*A

अध्याय 7 में आप लोगों ने सोलह महाजनपदों के बारे में पढ़ा है। ये सारे महाजनपद

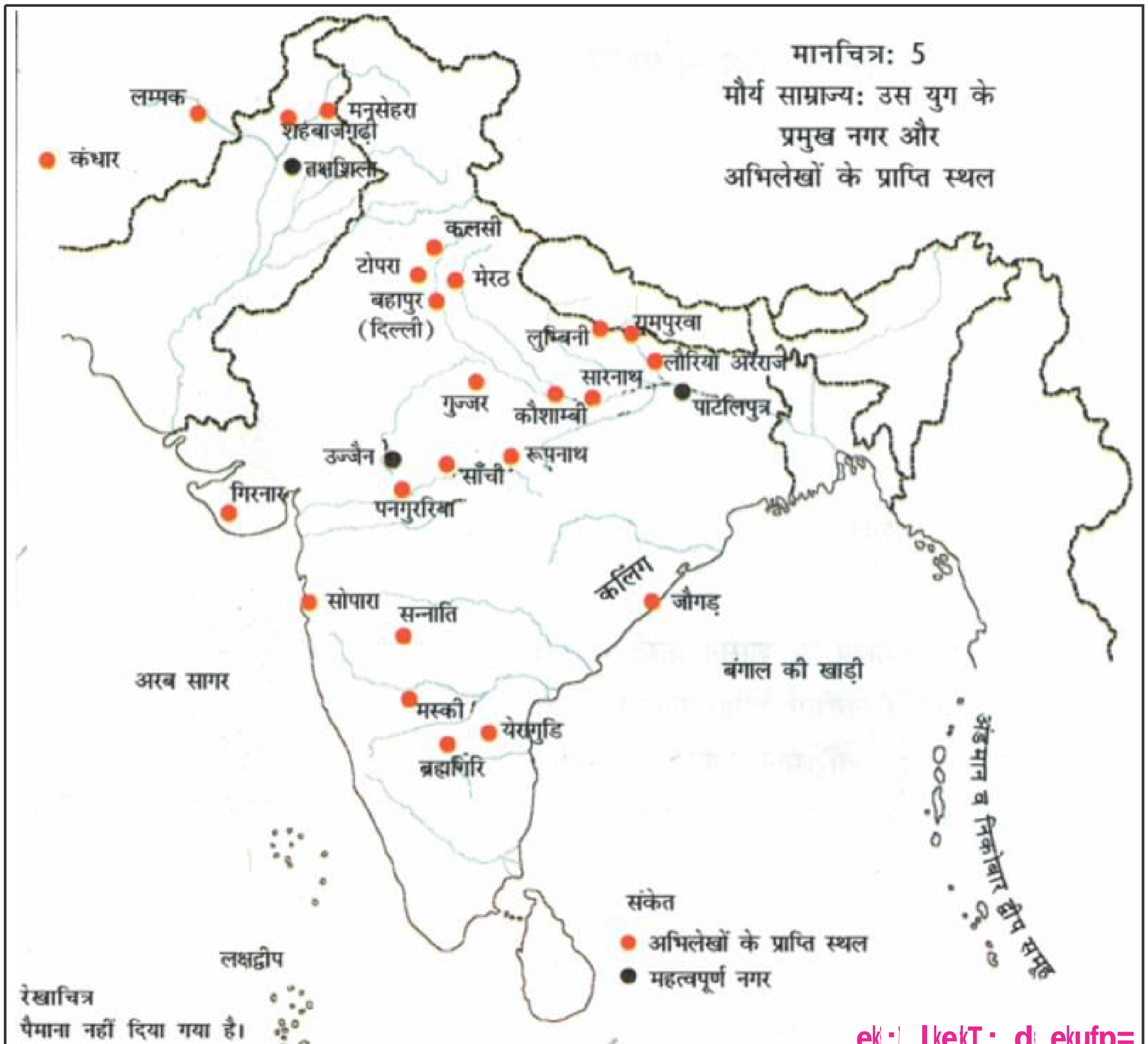

ek;Z lkezkT; dk ekufp=

धीरे–धीरे मगध साम्राज्य के अधीन होते जा रहे थे। मगध का राज्य दूसरे राज्यों को सैन्य विजय एवं वैवाहिक संबंधों द्वारा अपने में मिलाकर बड़ा होता जा रहा था। 273 ई0पूर्व अपने पिता बिंदुसार के बाद अशोक मगध साम्राज्य का सम्राट बना। इसके साम्राज्य की राजधानी (आज का पटना) पाटलिपुत्र थी।

tc jkT; cgqr cMk gks tkrk gS rc mls lkezkT; dgrs gSa v'kksd ftl lkezkT; ij 'kklu djrk Fkk mldh LFkkiuk mlds nknk pUnzxqIr ekS;Z us vkt ls yxHkx 2300 o"kZ igys dh FkhA

इसके साम्राज्य में बहुत सारे नगर थे। (मानचित्र 1 में इन नगरों को काले बिंदुओं में दिखाया गया है) तक्षशिला, उत्तर पश्चिम में मध्य एशिया के लिए आने जाने का मार्ग था। उज्जैन उत्तरी भारत से दक्षिणी भारत जानेवाले रास्ते में पड़ता था। नगरों में व्यापारी, सरकारी अधिकारी और शिल्पकार रहा करते थे। साम्राज्य के अलग–अलग क्षेत्रों में बसने वाले लोगों के खान–पान, पोशाक आदि में भिन्नता थी।

मौर्य साम्राज्य का मूल क्षेत्र नंद साम्राज्य का क्षेत्र था, जिस पर चन्द्रगुप्त मौर्य ने अधिकार किया था। इसमें उत्तर और मध्य भारत का मुख्य भाग शामिल था। स्वयं चन्द्रगुप्त ने पश्चिमोत्तर में गंधार एवं कश्मीर का क्षेत्र, पश्चिम में सौराष्ट्र एवं दक्षिण में कर्नाटक तक विजय अभियान किया था। इस विशाल साम्राज्य में अशोक ने कलिंग का क्षेत्र समाहित किया लेकिन इसके बाद उसने युद्धों का परित्याग कर कल्याणकारी उपायों से शासन चलाने का निर्णय लिया।

BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

lkezkT; dk iz'kklu %

बच्चों, अभी आपने देखा कि अशोक एक विशाल साम्राज्य का सम्राट था। इतने बड़े राज्य पर अकेले शासन करना आसान नहीं था इस विशाल साम्राज्य के प्रशासन के विषय में भी समझना आवश्यक है।

प्रशासनिक कार्य में राजा की सहायता के लिए अनेक उच्च पदाधिकारी (अमात्य) और मंत्री रहते थे। पुरोहित धार्मिक कार्यों में राजा को सहयोग देते थे। राज्य के खजाने की

देखरेख कोषाध्यक्ष करते थे। समाहर्ता अथवा राजस्व संग्रहकर्ता का काम कर इकट्ठा करना होता था। आय का मुख्य स्रोत जमीन से मिलनेवाला कर (भू–राजस्व) था। यह कुल उत्पादन का 1/6 भाग या 1/4 भाग होता था। संदेशवाहक एक जगह से दूसरे जगह घूमते रहते थे और राजा के 'जासूस' अधिकारियों की क्रिया–कलापों पर नजर रखते थे।

मौर्य साम्राज्य के भीतर कई छोटे–छोटे क्षेत्र या प्रांत थे। इनमें चार प्रांत मगध, तक्षशिला, उज्जैन एवं स्वर्णगिरी प्रमुख थे। अशोक अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से शासन करता था। इन नगरों और उसके आस–पास के इलाकों की देखभाल राजकुमार करते थे। प्रांतों को जिलों में विभाजित किया गया था। इन जिलों की देखभाल स्थानिकों एवं गांवों की देखभाल गांव के मुखिया, जिन्हें 'ग्रामिक' कहा जाता था, के द्वारा की जाती थी। प्रत्येक गांव में अधिकारियों का एक दल होता था जो गांव के लोगों तथा पशुओं का लेखा–जोखा रखता था और करों की वसूली करके बड़े अधिकारियों तक पहुंचाता था। नगर का प्रशासन परिषद और उसकी छह समितियां देखती थीं, जिनके अधीन अलग–अलग विभाग होते थे।

न्याय प्रशासन के क्षेत्र में साम्राज्य का सबसे बड़ा न्यायाधीश सम्राट होता था। नगरों तथा गाँवों में अलग–अलग न्यायालय थे। बहुत से मामले साधारण पंचायतों द्वारा देखे जाते थे। नीचे के न्यायालयों के निर्णय के विरुद्ध ऊपर के न्यायालयों में अपील करने का नियम था। सम्राट चाहता था कि न्यायाधीश जहाँ तक संभव हो अपने फैसलों में और दंड देने में उदारता बरतें।

अशोक ने अपने शासन को अधिक मानवीय बनाने के लिए प्रजा हित के लिए अनेक कार्य किए। उसने मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सालय खुलवाए, जहाँ गरीबों की निःशुल्क चिकित्सा प्रदान की जाती थी और उन्हें औषधियाँ भी उपलब्ध करायी जाती थीं। उसने सड़क के किनारे पेड़–लगावाए ताकि मनुष्यों एवं पशुओं को छाया मिल सके। इसके साथ ही जगह–जगह पर कुएँ भी खुदवाए गए, जहाँ यात्रियों के सुख सुविधा के लिए उचित प्रबंध प्रशासन की तरफ से किया जाता था।

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

v'kksd ds 'kklu O;oLFkk }kjk fd, x, iztkfgr ds dk;ksa dh rqyuk vkt dh 'kklu O;oLFkk ls djsaA

भारत में आज जहाँ उड़ीसा राज्य है, वहाँ सम्राट अशोक के समय कलिंग नाम का राज्य था। (मानचित्र 1 को देखिए) अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई की। घमासान युद्ध हुआ। कलिंग के लोग हार गए। युद्ध में हजारों सैनिक और नागरिक मारे गये। अनेक स्त्री, बच्चे बेसहारा हुए। युद्ध जीतकर भी अशोक का मन दुःख से भर गया। उसने सोचा युद्ध से लोगों को दुःख पहुँचता है। इसलिए वह युद्ध छोड़कर अब लोगों की भलाई का काम करेगा। उसने अपने विचारों को संदेश के रूप में चट्टानों पर खुदवाए।

lekV v'kkd d f'kyky[k ,o mldk ,d v'k

iRFkj dh pêkuk ij vfdr v'kkd d vfHky[kk dh l[;k lcl vf/kd gA viu jkT; d jkgrkl fty d vUrxr lklkjke l nk ehy iूर्व pUnu ihj uked igkMh ij v'kkd d f'kyky[k vkt Hkh n'र्शनीय है। v'kkd u viu vfHky[kk e [knok;k fd

^jktk cuu d vkB lky ckn eu कलिंग युद्ध को जीता, ƌ l l e> cgr n%[k gvkA ;g D;k \ tc ,क आजाद जनपद हर;k tkrk g] ogk yk[kk ykx ekj tkr g vkj बंदी बनाकर अपने tuin l ckgj fudky fn, tkr gA ogk jgu oky ब्राह्मण. fHk{k ekj tkr gA**

,l fdlku t/k अपने बंध&fe=k] nkl vkj etnjk l uerkiw.k crko djr g – वे भी ;q) e ekj tkr g vkj viu fi;tuk l fcNM tkr g.

bl rjg gj rjg d ykxk ij ;q) dk cjk iHkko iMrk gA bll e n%[kh gkrk gA bl ;q) d ckn eu eu yxkdj èke dk ikyu fd;k g vkj nljk dk ;gh fl[kk;k gA

e ekurk g fd èke] 0;ogkj l thruk ;q) l thru l cgrj gA e bu ckrk dk [knok jgk g rkfd ej i= vkj ik= Hkh ;q) dju dh ckr u lkpA**

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

v'kksd dk èkEe ¼/ke½

अशोक ने जिस धम्म का रूप संसार के सामने रखा उसमें कई अच्छी बातें निहित थीं। अशोक अपने धम्म के माध्यम से उन आदर्शों में विश्वास रखता था जो मनुष्य को शांतिपूर्ण और सदाचारी बना सकते हैं। अशोक के धम्म में न तो कोई देवी–देवता थे और न ही उसमें कोई व्रत, उपवास या यज्ञ करने की बात कही गई थी। वह महात्मा बुद्ध के उपदेशों से काफी प्रभावित था।

^/kEe* lLd`r 'kCn ^/ke* dk ikd`r :i gSA

अशोक के साम्राज्य में अनेक धर्मों के मानने वाले लोग रहते थे। अशोक सोचने लगा था कि सारे धर्म के लोग आपस में मिलकर रहें। उसके धर्म का सबसे बड़ा सिद्धांत यह था कि बड़ों का आदर किया जाना चाहिए और उनकी आज्ञा का पालन किया जाना चाहिए। बड़ों को भी अपने छोटों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। अशोक के धम्म में अहिंसा और दान का भी बड़ा महत्त्व है। अपने इस धम्म के संदेशों को उसने शिलाओं और स्तम्भों पर खुदवाए। आइए! अशोक के कुछ संदेशों का हिन्दी अनुवाद पढ़ें।

Hkkc; vfHky[k l vखिल dk ck) /keksa लम्बी gkuk vkj धम्म तथा l?k esa विश्वास cjuk ds संबंध में उपयुक्त मिलती gSA

1- ^;gk¡ fdlh जीव को ekjk ugha tk,xk vkSj mldh cfy ugha p<+kbZ tk,xhA पहले jktk dh jlksbZ esa lSdMksa tkuoj jkst ekjs tkrs Fks ysfdu अब gekjs jktk us vius f'kdkj ds fy, ekjs tkrs FkA ij vc flQZ rhu tkuoj ekjs tkrs gSa] nks eksj vkSj ,d fgj.kA ;s rhu tkuoj Hkh Hkfo"; esa ugha ekjs tk,xsA

2- ^ykx rjg&rjg ds volj ij rjg&rjg ds laLdkj djrs gSaA tc chekj iMrs gSa] tc yM+ds&yM+fd;ksa dh 'kknh gksrh gS] tc cPps iSnk gksrs gSa] tc ;k=k ij fudyrs gSa vkfnA efgyk,¡ [kkl dj cgqr ls ,sls cseryc ds laLdkj djrh gSaA

,sls /kkfeZd laLdkjksa dk djuk rks pkfg, ij buls feyus okyk ykHk de gh gSA dN laLdkj ,sls gksrs gSa ftuls T;knk Qy feyrk gSA o

D;k gS \ oS gA xqykeksa vkSj etnwjksa ls uezrk ls 0;ogkj djuk] cM+ksa dk vknj djuk] tho&tUrqvksa ls le; ls 0;ogkj djuk] czkã.kksa vkSj fHk{kqvksa dks nku nuk vkfnA

3- ^^viu s /keZ dh iz'kalk ;k nwljs /keZ dh fuank fcuk dkj.k ugha djuh pkfg,A viu s /keZ dk xq.kxku cgqr & c<+k&p<+k dj dguk ;k nwljs /keksZa dh cjkbZ djuk nksuksa xyr gSA gj rjQ ls&gj oDr nwljs /keksZa dk vknj djuk pkfg,A

^^vxj dksbZ viu s /keZ dh cM+kbZ djrk gS vkSj nwljs /keksZa dh cjkbZ djrk gS rks vly esa og viu s /keZ dks gh uqdlku igqapkrk gSA blfy, ,d&nwljs ds /keZ dh eq[; ckrksa dks le>uk vkSj mudk lEeku djuk pkfg,A

v'kksd ds bu rhu lans'kksa esa vki fdlls T;knk izHkkfor gq, vkSj D;ksa\ oxZ esa fe=ksa ls ppkZ dhft,A

अशोक ने अपने अधिकारियों को यह निर्देश दिया कि वे इन संदेशों को उन लोगों को भी पढ़कर सुनाए जो खुद पढ़ नहीं सकते हैं।

oÙkZeku tgkukckn ftys ds cjkcj igkM+h dh rhuksa xQkvksa dh nhokjksa ij v'kksd ds ys[k mRdh.kZ fd;s gSA blesa v'kksd }kjk vkthod lEiznk; ds lk/kqvksa ds vkokl ds fy, xQk nku esa fn, tkus dk fooj.k lqjf{kr gSA

उसकी राजाज्ञाए(संदेश) विभिन्न लिपियों में लिखी गई है। अधिकांश राजाज्ञाएं ब्राह्मी लिपि में हैं। उस समय भारत के अधिकांश भूभाग में इसी लिपि का प्रचलन था।

1837 bZ0 esa tsEl fizals uked vaxzst fo}ku us lcls igys czkãh fyfi dks i<+kA

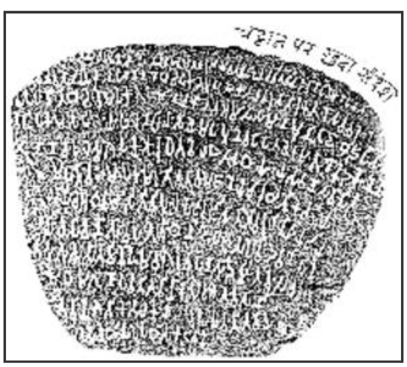

ckàh fyfi esa pêku ij [kqnk lans'k

czkãh fyfi ds dqN v{kjksa esa viuh igpku ds v{kj dks <w<+,A

BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

अशोक ने अपने संदेशों को दूसरे देशों में भी पहुँचाया। उसके अधिकारी मिस्र, यूनान, बर्मा आदि देशों में गए। अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा के नेतृत्व में अधिकारियों का एक दल श्रीलंका भेजा।

अशोक की राजाज्ञाएँ चट्टानों के साथ–साथ बलुआ पत्थर के ऊँचे स्तंभों पर भी खोदी गयी हैं। स्तंभों पर की गई पॉलिश आज भी शीशे की तरह चमकती है। प्रत्येक स्तंभ के शीर्ष पर हाथी, सांड़ या सिंह की प्रतिमा बनायी गई थी।

'kjk okyk LrHk

सारनाथ के स्तंभ के शीर्ष पर चार सिंह बनाए गए थे। 26 जनवरी, 1950 को जब गणतंत्र बना तो चार सिंहों की इस बनावट को राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकार किया गया। भारत के राष्ट्रीय चिह्न में एक गोलाकार शीर्ष फलक पर एक के पीछे एक बैठे चार सिंहों की आकृति है (चित्र में चौथा सिंह दिखाई नहीं देता है)। जिसके मध्य में एक चौबीस तिलियों से युक्त चक्र (पहिया) है इसके शीर्ष पर एक हाथी, एक दौड़ते घोड़े, एक सांड़ तथा एक सिंह की ऊँची उभार युक्त आकृति अंलकृत है जो मध्यवर्ती चक्र द्वारा विभाजित है। चिह्न के नीचे की ओर ^lR;eo t;r* देवनागरी लिपि में अंकित है, अर्थात् – 'सत्य की ही विजय होती है। बिहार के ही चम्पारण जिले में रधिया ग्राम के निकट अरेराज नामक स्थान पर लौरिया, अरेराज स्तंभ दर्शनीय है।

v'kkd pØ dk frjx d vykok vki dgk&dgk n[kr g\ ppk djA

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

v'kkd d 'kासनकाल की कुछ अन्य कलाdfr;k

fcgkj d jkeiqjok e मिले अशोक स्तंभ dk fgLlkA vHkh bl jk"Vªifr Hkou e j[kk x;k gA

BSTBPC © WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

इस प्रकार आपलोगों ने सम्राट अशोक के साम्राज्य विस्तार, शासन व्यवस्था, न्याय प्रणाली एवं उसके धर्म में निहित तथ्यों को जाना और समझा।

vkiu dbl jktkvk d ckj e i<k gkxkA D;k v'kkd vkidk bu lcl vyx fn[krk g\ ppk djA

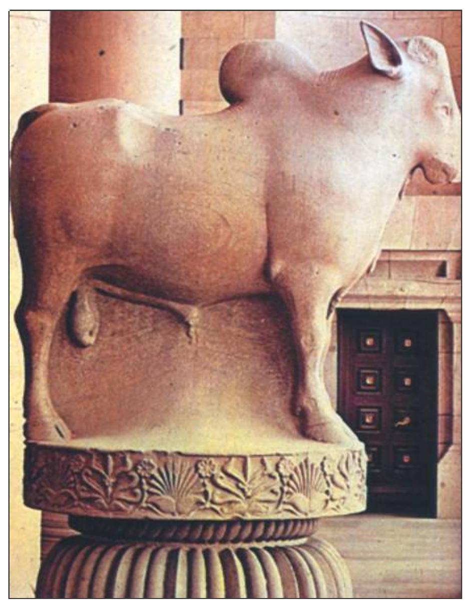

fcgkj d pEikj.k ftyk efB;k uked xke d fudV ykfj;k] uUnux< dk LrHk fp=

vkvk ;kn djs

1. oLrqfu"B iz'u

(क) सम्राट अशोक कहाँ का शासक था ?

(I) काशी (ii) मगध

(iii) वैशाली (iv) कलिंग

(ख) किसके उपदेश ने सम्राट अशोक को प्रभावित किया ?

(i) महावीर (ii) महात्मा बुद्ध

(iii) कन्फयूसियस (iv) ईसा मसीह

(ग) अशोक के साम्राज्य में प्रशासन का उच्च पदाधिकारी होता था?

(i) ग्रामिक (ii) समाहर्ता

(iii) पुरोहित (iv) अमात्य

(घ) किस युद्ध को जीतने के बाद अशोक का मन दुःख से भर गया ?

(I) तक्षशिला (ii) कलिंग

(iii) उज्जयिनी (iv) सुर्वणगिरी

(ड़) सर्वप्रथम ब्राह्मी लिपि को किसने पढ़ा ?

(i) जेम्स प्रिंसेप (ii) हेनरी

(iii) जेम्समिल (iv) बेंथम

©BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

2- fuEufyf[kr lgh okD;ksa ds vkxs (✓) o xyr okD;ksa ds vkxs ( ) dk fpg~u yxkvksA

(i) तक्षशिला उत्तर–पश्चिम और मध्य के लिए आने–जाने का मार्ग था।

(ii) सम्राट अशोक ने अपने संदेश पुस्तकों में लिखवाए थे।

(iii) कलिंग बंगाल का प्राचीन नाम था।

(iv) अशोक के धम्म में पूजा–पाठ करना अनिवार्य था।

(v) 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप नामक अंग्रेज विद्वान सर्वप्रथम ब्राह्मी लिपि को पढ़ा।

(vi) अशोक के प्रशासन में प्रांतों को जिलों में बांटा गया था।

3- fuEufyf[kr iz'uksa dk mÙkj ,d okD; esa nhft,A

(i) सम्राट अशोक की राजधानी कहां थी?

(ii) आज कलिंग भारत के किस राज्य में है?

(iii) अशोक के धम्म में निहित अच्छी बात को लिखें?

(iv) राजस्व संग्रहकर्ता के क्या कार्य थे?

(v) भारत का राष्ट्रीय चिह्न कहां से लिया गया है।

(vi) अशोक के ज्यादातर अभिलेख किस भाषा में लिखे गये हैं।

4- v'kksd ds èkEe esa fufgr ekuoh; ewY:ksa dks fy[ksaA

5- vkvks ppkZ djsa&

(i) अशोक ने अपने विचार प्राकृत भाषा में ही क्यों खुदवाए?

(ii) अशोक के प्रशासन की कौन–कौनसी बातें आज के प्रशासन में भी देखने को मिलती हैं। चर्चा करें?

(iii) अशोक अपने से पहले आने वाले राजाओं से किन बातों में अलग लगते हैं?

6- आओ करके n[ksa&

(i) उन वस्तुओं की सूची बनाओ जिन पर अशोक चक्र आपको मिलता है?

(ii) अशोक के धम्म में कौन–कौन बातों को जोड़ना चाहेंगे?

(iii) पृष्ठ 86 पर अंकित मानचित्र को देखकर बिहार में अशोक से जुड़े अभिलेखों की सूची बनाइए।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय-10

शहरी एवं ग्राम्य जीवन

vkun dk loky& vkun iVuk ftyk dk ,d xk¡o vdcjiqj dk jguokyk gS A blds firk th fcgVk dh pkoy eMh l s dy gh pkoy cpdj vk, gSA vkt lqcg& lqcg mlds nknk th /kku dkVus ds fy, g¡lqvk dk /kkj fnyokus ykgkj dh HkVBh x, A lkFk es vkun Hkh FkkA mlus HkVBh vkSj ykgkj dks n[kdj iNk&D;k ykgk ds vkStkj ds fcuk vkidh [ksrh नहीं हो ldrh \ nknk th ! D;k vki e>s crk;saxs fd [ksrh djus में लोहे का mi;ksx dc ls 'kq: gqvk \rHkh vkuUn की नजर भट्ठी पर रखे mlds f'k{kd ij iMh A f'k{kd us rikd से उत्तर दिया—मैं तुम्हें blds fo"k; esa dy gh oxZ esa crkuokyk gw¡ A

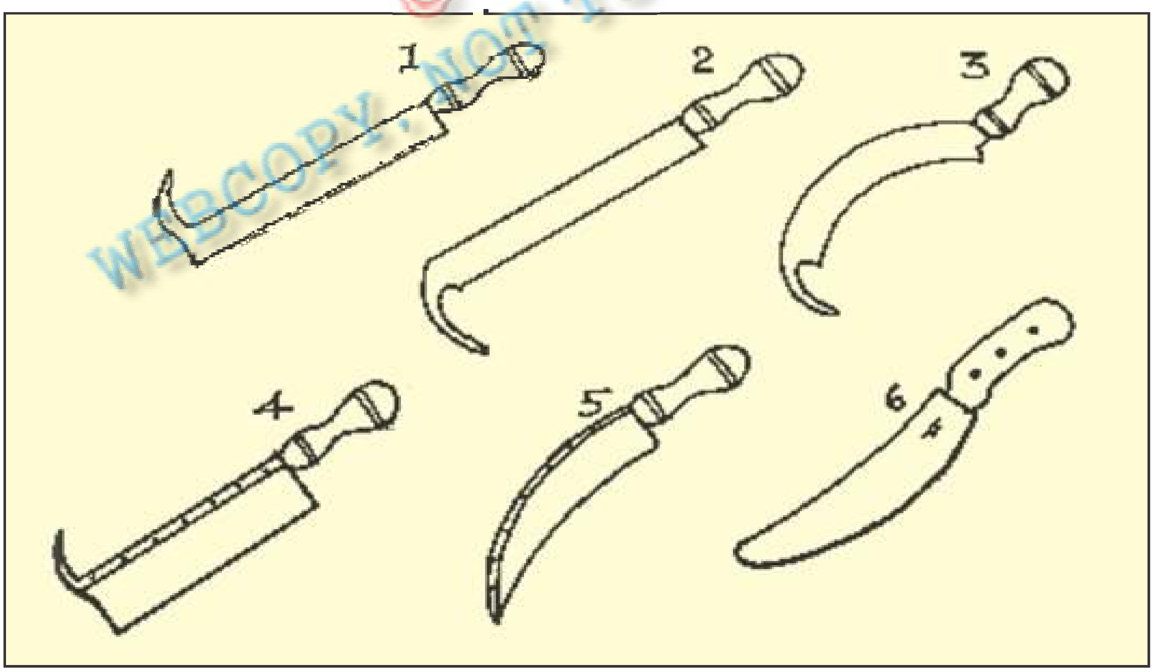

df"k dk;Z l s tM+ vkStkj

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

Developed by: ABSOL www.absol.in

बच्चो ! पिछले अध्याय में हमने पढ़ा है कि मौर्य सम्राट अशोक के शासनकाल में मगध का साम्राज्य उत्कर्ष पर था। लोहे के प्रयोग ने कृषि एवं उत्पादन को बढ़ाया जिससे साम्राज्य की समृद्धि बढ़ी । लगभग 185 ई.पू. में अशोक के अक्षम उत्तराधिकारी एवं उनकी प्रशासनिक कमजोरियों की वजह से मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया और उसकी एकता छिन्न–भिन्न हो गयी। परिणामस्वरूप देश के अन्दर कई छोटे–बड़े राज्य अस्तित्व में आ गए। मगध में शुंगवंश एवं कण्व वंश, दक्षिण में सातवाहन वंश एवं कलिंग में खारवेल राजवंश के शासन की शुरूआत हुई। इसी समय भारत में विदेशियों के भी कई आक्रमण हुए। पश्चिमोत्तर तथा उत्तर भारत के कई भागों में हिन्द यूनानियों का शासन स्थापित हुआ, तत्पश्चात् मध्य एशियाई शकों का शासन रहा। उनके बाद कुषाण वंश के शासकों ने यहां शासन किया। इसके विषय में हम विस्तार से अगले अध्याय में पढ़ेंगे ।

यद्यपि लगभग 200 ई.पू. से लेकर 300 ई. तक भारत में लगातार राजनैतिक परिवर्तन हो रहे थे, फिर भी यह काल कृषि एवं उद्योग के लिए काफी महत्वपूर्ण साबित हुआ। इस काल में कृषि का प्रसार, नए शहरों का विकास तथा उद्योग एवं व्यापार में अभूतपूर्व प्रगति हुई। एक तरफ व्यापारियों ने उपमहाद्वीप के अन्दर स्थल मार्ग की खोज की तो दूसरी तरफ पश्चिम एशिया, पूर्वी अफ्रीका तथा दक्षिण पूर्व एशिया के रास्ते भी खुले। इस अध्याय में आप मौर्योत्तर कालीन कृषि एवं व्यापार का अध्ययन करेंगे।

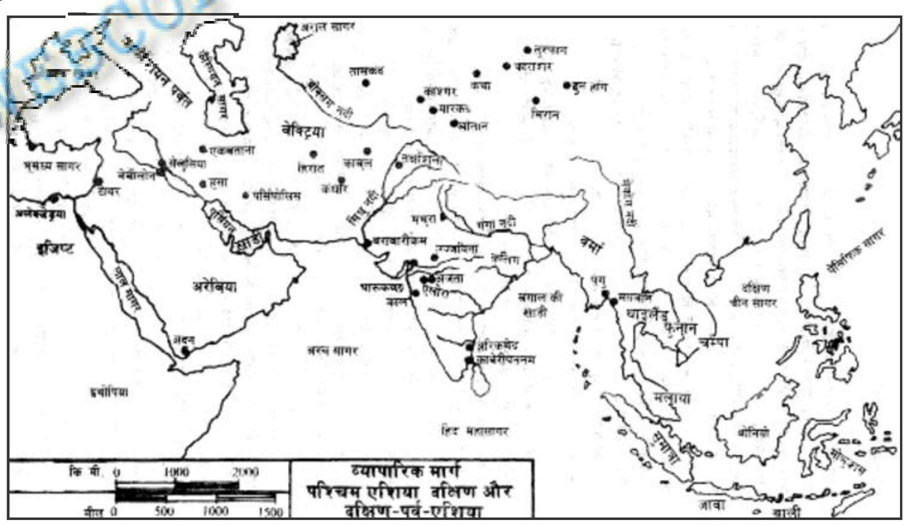

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

[krh dk fodkl %

खेती के विकास में लोहे के औजार का विशेष महत्व रहा है । वैसे तो आप पढ़ चुके हैं कि खेती का प्रारंभ हजारों वर्ष पहले लोगों ने शुरू कर दिया था लेकिन उत्पादन इतना अधिक नहीं था कि उसे लोग बाजार में जाकर बेच सकें और अपनी अतिरिक्त जरूरतों को पूरा कर सकें । मौर्यकाल में लोगों के द्वारा जो लोहे के औजार बनाए गए उससे खेती का काम तेजी से होने लगा । मौर्योत्तर काल में भी इसके विकास का क्रम जारी रहा । लोगों ने लोहे के कुल्हाड़ी से जंगल को साफ कर जमीन को खेती के लायक बनाया । लोहे के फाल से खेतों की जुताई आसानी से गहराई तक किए जाने लगे। ऐसा नहीं था कि पहले खेती के लिए जंगल को साफ नहीं किया जाता था लेकिन लोहे की जगह लकड़ी, पत्थर और कांसे के औजारों का प्रयोग होता था । खेती के विकास में लोहे के औजारों के साथ–साथ आरोपण तकनीक का भी विशेष महत्व था। जैसे–धान का बीज तैयार कर पुनः रोपने से उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

flpkbZ dh O;oLFkk %

हमारे यहाँ खेती शुरू से मॉनसून पर निर्भर है। अगर वर्षा होती है तो खेती होगी अन्यथा सूखा का सामना करना पड़ेगा ऐसी ही परिस्थितियां होती हैं। अतः खेती के लिए सूखे से निपटने हेतु प्राचीनकाल से ही प्रयास जारी है। उत्तर वैदिक काल में घटी यंत्र के प्रयोग (रेहट) का वर्णन है। यद्यपि सिंचाई हेतु नहरों, कुओं, तालाबों और कृत्रिम झीलों का उपयोग मौर्यकाल में भी होता था लेकिन उसके बाद के शासकों ने इसमें उत्तरोत्तर विकास किया जिससे उत्पादन में वृद्धि हुई ।

lqn'kZu >hy ds ckjs esa %

सुदर्शन झील का निर्माण सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त मौर्य ने करवाया था । यह गुजरात में स्थित है । इस झील से सिंचाई के लिए नहरें निकाली गयीं । लेकिन चार सौ साल बाद आए भयंकर तूफान से इसके तटबंध टूट गए और उसका सारा पानी बह गया। इसकी जानकारी हमें रूद्रदामन नामक शासक के एक अभिलेख (जूनागढ़ अभिलेख)

से मिलती है। इसी अभिलेख से यह पता चलता है कि रुद्रदामन ने इसे दोबारा बनवाया । इस झील के तटबंधों को पहले की अपेक्षा तीन गुना अधिक मजबूत बनाया गया। रूद्रदामन अपने अभिलेख में यह भी जानकारी देता है कि इसके मरम्मत कार्य के लिए कोई अतिरिक्त कर या बेगार नहीं लिया गया। सारा खर्च सरकारी खजाने से किया गया। पुनः यह तीन सौ वर्षों बाद टूट गया जिसको बनवाने का कार्य बाद के गुप्तवंश का शासक स्कंदगुप्त ने किया ।

> vki viu f'k{kd dh enn ls ;g ppkZ djsa fd vkids bykds esa flapkbZ ds dkSu&dkSu ls lk/ku mi;ksx esa vkrs gSa\ D;k os fdlkuksa ds [ksrks dh flapkbZ djus esa iw.kZ :i ls l{ke gSa\D;k flapkbZ ds mu lk/kuksa ls fdlku lUrq"V gSa\

[ksrh ds fodkl ds Qk;ns %

सिंचाई एवं औजारों के प्रयोग से अनाज का उत्पादन बढ़ा । लोगों को खेती के कार्य में रोजगार मिला और साथ ही साथ उनकी मजदूरी भी बढ़ी । राजाओं द्वारा सिंचाई का प्रबन्ध किए जाने से एवं उत्पादकता बढ़ने से उन्हें पहले की अपेक्षा अधिक राजस्व प्राप्त होने लगा । राजा को अधिक धन की प्राप्ति ने उसे महल बनाने, सेना रखने एवं किला बनाने के लिए साधन उपलब्ध कराये । अधिक उत्पादन ने उद्योगों को भी प्रोत्साहन दिया। व्यापार का विकास इनका एक प्रमुख परिणाम था।

O;kikj %

इस काल में व्यापार एवं वाणिज्य का विकास बड़े पैमाने पर हुआ । व्यापार की प्रगति के लिए मौर्यकाल में ही कई स्थल मार्गों का निर्माण एवं विकास किया गया था । पाटलिपुत्र से तक्षशिला तथा पाटलिपुत्र से ताम्रलिपि (बंगाल) को जोड़ने वाली सड़कें स्थलीय व्यापार के महत्वपूर्ण साधन थे। मौर्योत्तर काल में दक्षिण भारत में व्यापारिक मार्गों का विकास हुआ। कुछ व्यापारिक मार्ग मध्य एशिया और पश्चिम एशिया से भी जुड़े हुए थे। उत्तर–पश्चिम भारत में हिन्दुस्तानी शक कुषाण आदि शासकों के राज्य स्थापित होने से उपमहाद्वीप का

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

पश्चिमी एवं मध्य एशिया से घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ। मध्य एशिया से भारत होते हुए एक व्यापारिक मार्ग गुजरता था जो चीन को रोमन साम्राज्य के पश्चिमी प्रान्तों से जोड़ता था। यह रेशम मार्ग था क्योंकि चीन से होनेवाला रेशम का व्यापार प्रायः इसी मार्ग से होता था । रोमन साम्राज्य से होने वाले व्यापार का एक बड़ा भाग इन्हीं क्षेत्रों से जुड़ा हुआ था। रोम भारत में निर्मित विलासिता की सामग्री जैसे—रेशम, मसाला, मोती, हाथी दांत से बने आभूषण आदि का एक बड़ा ग्राहक था ।

lxedkyhu 0;kikj % दक्षिण भारत में दूसरी शताब्दी ई.पू. से लेकर तीसरी शताब्दी तक का काल संगम काल के नाम से जाना जाता है। इस दौरान दक्षिण भारत में व्यापक व्यापार वाणिज्य के प्रमाण मिलते हैं । संगम साहित्य के अनुसार यहाँ की भूमि काफी उर्वर थी। पर्याप्त मात्रा में अनाज, फल—फूल, मसाले, मांस एवं मछली यहां के लोगों को उपलब्ध थे। कृषि से प्राप्त राजस्व आय का प्रमुख स्रोत था, लेकिन आन्तरिक एवं विदेशी व्यापार संगमकाल की समृद्धि का मुख्य कारण था। कई बन्दरगाह वाले शहर व्यापार के केन्द्र थे, जिनमें पुहार भी एक था। सर्वाधिक लाभप्रद सामुद्री व्यापार दक्षिण भारत से होनेवाला रोमन व्यापार था। दक्षिण भारत के तीनों राजवंश के शासकों—'चोल', 'पांड्य' और 'चेर' ने संगमकालीन व्यापार को काफी उन्नत बनाया ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

lxe dky %

^lxe* शब्द dk rkRi;Z dfo;ksa dh lHkk ls gS A nf{k.k Hkkjr ds 'kkld r[illegible]re; ij rfey dfo;ksa dh lHkk vk;ksftr djokrs Fks A bu dfo;ksa dk dke ,sls lkfgR; dh jpuk djuk Fkk ftlls rRdkyhu vFkZ0;oLFkk] 0;kikj rFkk okf.kT; ,oa f'kYi vkfn dh tkudkjh lHkh dks fey lds A budk }kjk fy[kk x, lkfgR; ls gesa lqnwj nf{k.k esa rhu izeq[k jkT;ksa ikaM;] pksy ,oa psj ds mnHko vkj fodkl dk fooj.k izkIr gksrk gSA

igkj dh 0;kikfjd xfrfof/k;k& ,d voyksdu%

पुहार संगमकाल का काफी सुविधजनक बन्दरगाह था जो भारत के पश्चिमी तट पर स्थित था । यहाँ विदेशों के माल लेकर आने वाले बड़े–बड़े जहाज भी बिना पाल उतारे ही तट पर आ जाते थे । विदेशों से आयात होने वाली बहुमूल्य सामग्री गोदी बाड़े (डॉकयार्ड) पर उतारी जाती थी। विदेश से व्यापार के कारण पुहार के लोग काफी धनी हो गए थे । इस नगर में अनेक ऊँचे–ऊँचे और भव्य–भवन थे । ये भवन कई मंजिल वाले थे। इनमें अलग–अलग कक्ष थे। प्रत्येक भवन में गलियारे, बरामदे तथा अनेक कमरे होते थे। इन भवनों में ऊपर तो धनी व्यापारियों का परिवार रहता था और नीचे की मंजिल का उपयोग व्यापार के लिए होता था। समुद्र तट पर स्थित व्यापारी जहाजों पर ध्वज लहराते थे। इनके साथ विभिन्न रंगों के झंडे भी होते थे जो जहाजों पर लदे विशिष्ट प्रकार के माल तथा फैशन परस्तों के लिए उपयोगी सामान का एक प्रकार से विज्ञापन करते थे ।

D;k vkidks xko ;k 'kgj के व्यापारी भी इतने ही le) gksrs gSa ftrus igkj ds 0;kikjh Fks \ budh le`f) के क्या dkj.k Fks \

संगमकालीन भारत के तटीय शहरों तोण्डी, मुजरिश, पुहार, अरिकमेडु में यवन व्यापारी काफी संख्या में रहते थे । ये लोग बोतल में शराब, विभिन्न प्रकार के दीपक एवं सोना लाते थे। इसके बदले ये लोग काली मिर्च एवं अन्य मसाले तथा समुद्र एवं पर्वत के प्राप्त दुर्लभ वस्तुओं को यहाँ से ले जाते थे । यहाँ हुई खुदाई में रोमन सुराहियों के टुकड़े, रोमन ताम्र सिक्के तथा ग्रेफाइट के चिह्नों वाले काले एवं लाल मिट्टी के बर्तन मिले हैं जिनसे हमें भारत का रोम के साथ व्यापार की जानकारी मिलती है। भारत द्वारा निर्यात किए गए सामान के बदले बड़ी मात्रा में सोने एवं चांदी के सिक्के भी यहां आते थे।

fofue; ds lk/ku flDds%

व्यापार–वाणिज्य में विकास के साथ ही विनियम (लेन–देन) के साधन के रूप में सिक्कों का प्रचलन बढ़ा। आप पिछले अध्यायों में संपत्ति और समृद्धि के प्रतीक के रूप में गाय को

©BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

देखे होंगे । पहले व्यापार में वस्तु–विनियम प्रणाली प्रचलित थी। लेकिन अब सिक्कों के आधार पर सम्पत्ति का मूल्यांकन किया जाने लगा । पहले असमान भारवाले तथा अमानकीकृत (आहत सिक्के) सिक्कों का उपयोग किया जाता था। परन्तु मौर्यों के बाद भरत में आन्तरिक और बाह्य व्यापार का व्यापक विकास हुआ । हिन्द–यूनानी शासकों ने सोने के सिक्कों को भारत में पहली बार जारी किया ।

vkgr flDds & pk¡nh ;k lksus ds flDds ij jktdh; fpgukss dk vkgr dj cuk, tkus ds dkj.k bUgs vkgr flDdk dgk tkrk FkkA

कुषाण शासकों के समय सोने और चांदी के जो सिक्के जारी किए गए थे, उनका प्रचलन व्यापारिक कार्यों तक ही सीमित था। इन शासकों के द्वारा दैनिक कार्यों के उपभोग के लिए ताम्बे के सिक्के भी प्रचलन में लाए गए । पुरातत्वविदों को इस काल के सिक्के बड़े पैमाने पर मिले हैं । इन सिक्कों से हमें उसके जारी करने वाले शासकों के समय, व्यापार–वाणिज्य एवं आर्थिक समृद्धि की जानकारी मिलती है। सिक्कों पर शासकों, देवताओं आदि के चित्र अंकित रहने से उस काल के कलात्मक विकास की भी जानकारी हमें प्राप्त होती है । कुषाण शासक के सिक्कों पर बौद्धधर्म के चिह्न अंकित मिलते हैं। अतः ये सिक्के उस समय भी

vkgr flDds

dq"kk.kdkfyu flDds] lkrokgu flDds]
'kd flDds vkj fgUn ;ou flDds fp=

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

आर्थिक संपन्नता एवं धार्मिक मान्यताओं पर भी प्रकाश डालते हैं ।

'kgj dh lef) ,oa 'kgj&fofHkUu xfrfof/k;ksa dk dsUæ

व्यापार–वाणिज्य के क्षेत्रों में अत्यधिक विकास ने शहरों की समृद्धि को बढ़ाया । जातक कथाओं से हमें जानकारी प्राप्त होती है कि किस तरह लोग व्यापार के माध्यम से आर्थिक रूप से सम्पन्न होते जा रहे थे। शहर कई गतिविधियों के केन्द्र हुआ करते थे। वे शिल्पकला, व्यापार–वाणिज्य, धर्म शिक्षा आदि के केन्द्र के रूप में विकसित थे । इस समय उत्तरी भारत के प्रमुख नगर थे–तक्षशिला, कौशाम्बी, श्रावस्ती, हस्तिनापुर, मथुरा, वैशाली, पाटलिपुत्र, उज्जयिनी आदि। दक्षिण भारत में टगर, पैठन, धन्य कटक, अमरावती, अरिकमेडू आदि महत्वपूर्ण शहर थे ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

ikVfyi=

विभिन्न गतिविधियों के केन्द्र के रूप में हम पाटलिपुत्र (पटना) का उदाहरण ले सकते हैं। यह महाजनपद काल से ही अर्थात् छठी शताब्दी ई.पू. से ही एक महत्वपूर्ण नगर रहा है। यहाँ यातायात के लिए दो तरह के साधन उपलब्ध थे–जलमार्ग और स्थल मार्ग। उत्तर–पश्चिम में तक्षशिला की ओर जानेवाला स्थलमार्ग पाटलिपुत्र से ही होकर जाता था। दूसरी ओर जलमार्ग द्वारा ताम्रलिपि (बंगाल) बन्दरगाह तक यहाँ से रास्ता जाता था । यह बर्मा और श्रीलंका के लिए प्रमुख बन्दरगाह था । शहर की चारों तरफ से किलेबन्दी की गयी थी। यहाँ बौद्ध भिक्षुओं को ठहरने के लिए कई संघाराम थे। वर्तमान पटना का भिखनापहाड़ी सम्भवतः किसी समय बौद्ध भिक्षुओं के ठहरने की जगह थी। पाटलिपुत्र राजकीय एवं लोककला के प्रसिद्ध केन्द्र के रूप में विकसित था। आसपास के किसान एवं पशुपालक अपने उत्पादन को बेचने शहर आया करते थे। पाटलिपुत्र हजारों वर्ष तक प्रशासनिक गतिविधि का प्रधान केन्द्र बना रहा । यहाँ बड़े–बड़े प्रशासनिक एवं सैन्य अधिकारी निवास करते थे जो उच्च वर्ग के आय समूह के लोग होते थे। इनकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कई प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियां विकसित की गयी थीं। इन अधिकारियों द्वारा मठों एवं मन्दिरों को दान

दिया जाता था। प्रायः शहर के राजा, रानी, बड़े–बड़े अधिकारी, धनी व्यापारी एवं शिल्पकार दान देते थे । स्रोतों से जानकारी मिलती है कि यहाँ अस्त्र–शस्त्रा बनाने वाले, रथ बनाने वाले रथकार, सोनार, लोहार, बुनकर, बढ़ई आदि निवास करते थे ।

हमें उस समय के गांवों के बारे में अपेक्षाकृत कम जानकारी प्राप्त है, क्योंकि उस समय के गांवों की खुदाई पुरातत्वविदों द्वारा शायद ही हुए हैं। फिर भी अभिलेखों एवं तत्कालीन साहित्यों से हमें गांवों के बारे में भी जानकारियां प्राप्त होती हैं।

मौर्योत्तर काल के सभी गांव एक समान नहीं थे। उनपर कहीं परिस्थिति एवं जलवायु का असर था तो कहीं सांस्कृतिक भिन्नता थी। पहाड़ी एवं वन्यप्रदेश के गांव दूर–दूर बसे थे एवं उनकी जनसंख्या विरल थी, जबकि गंगा घाटी के गांव घनी आबादी से युक्त थे। उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के गांव की प्रशासनिक संरचना ;स्थानीय प्रशासन थोड़ी भिन्न थी।

vkb, n[k] xkok dk lkekftd ,o iशासनिक संरचना कैसा था ?

गांव में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति गांव का मुखिया होता था, जिसे 'ग्रामभोजक' भी कहा जाता था। यह पद वंशानुगत होता था। इसके पास गांव में सबसे अधिक भूमि होती थी । ये खेती करने के लिए दास या गुलाम (बन्धुआ मजदूर) रखते थे। ये राजा के लिए कर भी वसूलते थे तथा न्यायाधीश एवं पुलिस का भी काम करते थे।

छोटे स्तर के किसान, जिनके पास अपनी भूमि होती थी उसे 'गृहपति' कहा जाता था। गांव में कुछ ऐसे लोग भी रहते थे जिनके पास अपनी जमीन नहीं होती थी और वे दूसरों की जमीन पर मजदूरी करते थे। इस तरह के लोगों में दास, कर्मकार (शिल्पकार) आदि शामिल थे । दक्षिण भारत के बड़े किसानों को 'वेल्लाल' कहा जाता था । छोटे किसान 'उणवार' कहलाते थे । भूमिहीन मजदूर वर्ग एवं दासों को 'कडैसियार' और 'आदिमई' कहा जाता था । अधिकांश गांव जो बड़े–बड़े होते थे उनमें लोहार, कुम्हार, बढ़ई तथा बुनकर जैसे शिल्पकार भी होते थे ।

मौर्योत्तर कालीन भारत के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में कई तरह के वस्तुओं का उत्पादन किया जाता था । कश्मीर, कोसल, विदर्भ और कलिंग हीरों के लिए विख्यात था, मगध वृक्ष के रेशों

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

से बने वस्त्रों के लिए और बंगाल मलमल के रेशों से बने वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था। कपड़ों के उत्पादन के लिए उत्तर में काशी एवं दक्षिण में मदुरै प्रमुख केन्द्र थे। यहाँ महिलाएँ भी काम करती थीं। विशेषकर सूत कातने का काम महिलाएं ही करती थीं।

इस काल में व्यापारी एवं शिल्पकार संगठित रूप से काम करने लगे थे। इनके अपने–अपने संघ थे जिन्हें श्रेणी कहा जाता था। श्रेणियों के द्वारा शिल्पकारों को प्रशिक्षण देने, कच्चा माल उपलब्ध कराने तथा तैयार माल का वितरण कराने का कार्य किया जाता था। श्रेणियाँ बैंक का भी कार्य करती थीं। जमा धन का निवेश लाभ के लिए किया जाता था। लाभांश का कुछ हिस्सा पैसा जमा करने वाले व्यक्ति को दिया जाता था। इसका कुछ हिस्सा धार्मिक संस्थाओं के विकास के रूप में भी दिया जाता था ।

इस तरह हम देखते हैं कि मौर्योत्तर कालीन भारत में राजनैतिक अस्थिरता के बावजूद भी कृषि एवं व्यापार में इतनी अधिक प्रगति हुई कि भारत यहाँ उत्पादित वस्तुओं एवं प्राप्त खनिजों को विदेशों में निर्यात करनेवाला देश बन गया। इसी क्रम में भारतीय धर्म एवं संस्कृति का विदेशी धर्म एवं संस्कृति के साथ समन्वय स्थापित हुआ। परिणाामस्वरूप सुदूर पूर्व के देशों के कला एवं साहित्य भी इससे प्रभावित हुए ।

Tkkrd dFkk & एक निर्धन की prjkb

जातक कथाएँ आम लोगों में प्रचलित हैं, जिनका संकलन बौद्ध भिक्षुओं ने किया था। इस कथा में यह बताया गया है कि कैसे एक निर्धन व्यक्ति अपनी चतुराई से और व्यापार के माध्यम से धनी बन जाता है।

एक शहर में एक गरीब व्यक्ति था। उसके पास खाने के लिए पैसा नहीं था। उसने एक मरा हुआ चुहा देखा। उस चुहे को उठाकर उसने एक दुकान के मालिक को एक सिक्के में उसकी बिल्ली के लिए बेच दिया।

दुसरे दिन बड़ी जोरों की आँधी आयी। वहाँ के राजा का बागीचा टहनियों एवं पत्तों से भर गया। राजा का माली उसे साफ करने के लिए परेशान था। तभी इस व्यक्ति ने बगीचे की सफाई का काम माली से इस शर्त पर ले लिया की

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

बदले में माली सारी टहनियाँ एवं पत्ते उसे दे देगा। माली तुरंत तैयार हो गया। उसी समय पास में बहुत से बच्चे खेल रहे थे। व्यक्ति ने उन्हें मिठाई का लालच देकर टहनियों एवं पत्तों को बाहर रखने को कहा। देखते ही देखते बागीचा बिल्कुल साफ हो गया और टहनियाँ एवं पत्ते भी एक जगह जमा हो गया। तभी राजा का कुम्हार बर्त्तन पकाने के लिए ईंधन की तलाश में उधर से गुजर रहा था। उस चतुर व्यक्ति ने उन टहनियों एवं पत्तों को उसके हाथ बेच दिया, जिससे उसके पास कुछ पैसा इकटठ् हो गए।

उसके बाद उस व्यक्ति को एक चतुराई सूझी उसने एक बड़े बर्त्तन में पानी लेकर घास काटने वाले 500 व्यक्तियों को पानी पिलाया। उसकी सेवा भक्ति देखकर घास काटने वालों ने उससे कहा 'तुमने हमारी प्यास बुझाई बोलो हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं।' उस व्यक्ति ने जवाब दिया 'मैं आपको तब बताऊँगा जब मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता होगी।'

चतुर व्यक्ति ने उसके बाद एक व्यापारी से दोस्ती करली। उस व्यापारी ने उसको बतायो की कल 500 घोड़ों के साथ एक बड़ा व्यापारी शहर में आ रहा है। तभी उस व्यक्ति ने घास काटने वालों के पास जाकर कहा 'कल तुम सभी मुझे एक–एक गटठ्र घास दे देना और तब तक अपनी घास मत बेचना जब तक मेरी पुरी घास नहीं बिक जाए। इस तरह उस व्यक्ति के पास 500 गठ्ठर घास जमा हो गए । जब घोड़े के व्यापारी का कहीं घास नहीं मिला तो उसने उस व्यक्ति से एक हजार सिक्के में इसके सारे घास खरीद लिए। इस तरह देखते ही देखते अपनी चतुराई से वह निर्धन व्यक्ति धनी बन गया।

cPpk D;k vki crk,x fd ?kkMk dk 0;kikjh viu 500 ?kkMk d lkFk 'kgj D;k vk;k gkxk\

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

अभ्यास

vkb;s ;kn djsa

oLrqfu"B iz'u

1. छोटे एवं स्वतंत्र किसानों को क्या कहा जाता था?

   (क) ग्राम भोजक (ख) श्रेणी

   (ग) गृहपति (घ) वेल्लार

2. संगमकालीन (दक्षिण भारतीय) सम्पन्न किसानों को क्या कहा जाता था।

   (क) ग्राम भोजक (ख) कडैसियार

   (ग) वेल्लार (घ) उणवार

3. सुदर्शन झील का निर्माण सबसे पहले किसने करवाया?

   (क) चन्द्रगुप्त मौर्य (ख) रूद्रदामन

   (ग) स्कन्द गुप्त (घ) अशोक महान

4. संगमकालीन व्यापारिक नगर कौन नहीं है?

   (क) पुहार (ख) उरैयूर

   (ग) तोण्डी (घ) कन्याकुमारी

vkb;s चर्चा djsa

6. लगभग 2500 साल पहले आन्तरिक व्यापार में कौन–कौन सी कठिनाई आती होगी?

7. आपके गांव में आज खेती कैसे की जाती है। प्रयुक्त होने वाले 5 औजारों के नाम लिखो।

8. आज सिंचाई की कौन–कौन सी पद्धति अपनाई जाती है। आप तुलना करें। प्राचीनकाल में आज की कौन सी पद्धति नहीं अपनाई जाती थी।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

vkb; djd n[k

9. आप अगर शिल्पकार को काम करते हुए देखते हैं तो उनके बारे में लिखें कि वे कैसे काम करते हैं? उनके द्वारा बनाए गए पांच औजारों के नाम लिखें।
10. पाटलिपुत्र के लोग कौन–कौन से कार्य करते थे। गांवों के लोगों से उनका व्यवसाय किस प्रकार भिन्न था?
11. आप भारत से रोम को निर्यात एवं आयात होने वाली तीन–तीन वस्तुओं की सूची बनाएं।

ox ifjp;k

1. क्या राजा सिंचाई की व्यवस्था करके अधिक राजस्व प्राप्त करने का अधिकारी था?
2. गांव के लोगों का जीवन कैसा था?
3. पाटलिपुत्रा में लोग कौन–कौन से व्यवसाय से जुड़े हुए थे। आप उनकी सूची बनाइए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय-11

सुदूर-प्रदेशों से सम्पर्क

vt; viu oxZ esa 'kkar eq[k esa lkp jgk Fkk] rHkh f'k{kd dk oxZ esa izo'k gqvkA mlus f'k{kd ls loky fd;k&^lj* A vkius ge crk;k Fkk fd lezkV v'kksd ds ckn mldk lkezkT; /khjs&/khjs fc[kj x;k vkSj u;s jkT;ksa dk mn; gqvkA ftuesa dqN dh LFkkiuk fons'kh vkØe.kdkfj;ksa us dhA ;g fons'kh dkSu Fks vkSj dgka ls vk;s FksA f'k{kd us tokc fn;k fd vkxs ge mu fonsf'k;ksa dh ppkZ djsxsa A

बच्चों ! मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद मगध क्षेत्र में शुंग वंश की स्थापना हुई। जिसका संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था जो अन्तिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ का सेनापति था। उसका राज्य अधिक दिनों तक बना नहीं रह सका क्योंकि भारत की सीमा के बाहर से विदेशी सेनाओं के आक्रमण इस काल में होने लगे और कुछ समय बाद इन्हीं विदेशी विजेताओं ने अपनी सत्ता सुदृढ़ कर ली। इन्होंने भारत में स्थायी रूप से रहना शुरू किया और धीरे–धीरे यहाँ की संस्कृति में लीन हो गये। इनमें कुछ प्रमुख वंश इस प्रकार थे।

cfDV!;k के यूनानी 'kkld ½

ये इतिहास में 'इंडोग्रीक' के नाम से विख्यात है । सबसे प्रसिद्ध यूनानी (यवन) शासक मिनान्डर था, जो बौद्ध साहित्य में 'मिलिन्द' के नाम से जाना जाता है । बौद्ध ग्रन्थ 'मिलिन्दपन्ह' में मिनाण्डर का बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ संवाद है। नागसेन के सम्पर्क में आने के बाद मिनाण्डर बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया । इसकी राजधानी साकल (वर्तमान सियालकोट) शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था ।

यूनानी सम्पर्क का भारत पर व्यापक प्रभाव पड़ा। भारत में चिकित्सा, पद्धति, विज्ञान, ज्योतिष विद्या एवं सिक्के बनाने की कला में परिवर्तन आए जबकि धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

इन नये शासकों पर भारत का प्रभाव पड़ा ।

'kd ½ यवन शासकों के पतन के बाद 'सीथियन' या शक शासकों ने अपनी सत्ता स्थापित की । यह मूलतः मध्य एशिया के निवासी मगर कुछ समय तक इन्होंने उत्तरी भारत के भागों पर शासन किया। ये 'क्षत्रप' कहलाते थे। ये कई शाखाओं में विभक्त थे। इनमें एक महत्वपूर्ण शाखा उज्जैन के क्षत्रपों की थी । रूद्रदामन महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध राजा था । उसके जूनागढ़ अभिलेख से दक्षिण भारत के सातवाहन एवं कुषाणों के साथ उनके संघर्ष की जानकारी प्राप्त होती है । जूनागढ़ सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण के संबंध में पिछले पाठ में आप पढ़ चुके हैं।

d¦"kk.k ½ विदेशी आक्रमणों की श्रृंखला में कुषाणों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। कुषाण यू—ची कबीला की एक शाखा थे। भारत में इस वंश का प्रथम शासक कुजुल कडफिसस हुआ। उसने काबुल और कश्मीर में अपनी सत्ता स्थापित की। इस वंश का सबसे महान शासक कनिष्क था। उसके समय के कुषाण साम्राज्य के अन्तर्गत अफगानिस्तन, सिन्ध, बैक्ट्रिया, पार्थिया आदि के प्रदेश सम्मिलित थे।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

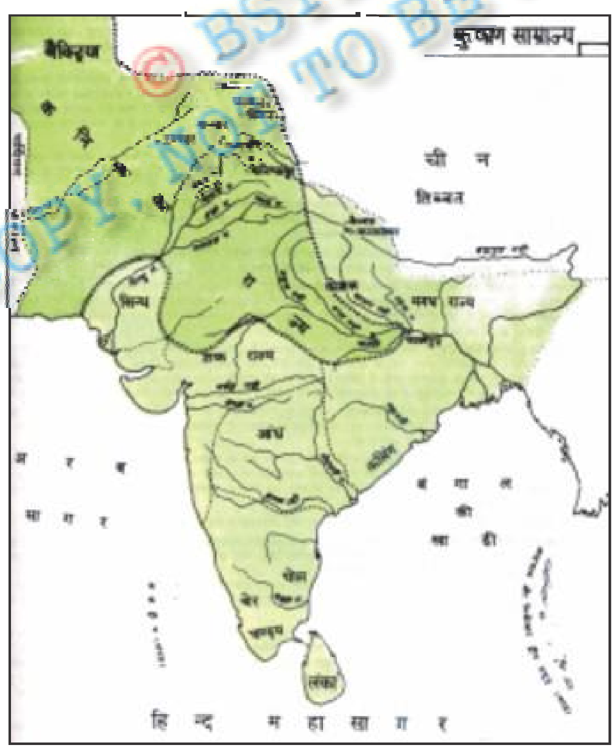

dfu"d d le; dk Hkkjr dk ekufp=

कनिष्क मगध पर आक्रमण कर प्रसिद्ध विद्वान अश्वघोष को अपनी राजधानी पुरूषपुर (पेशावर) ले आया था। भारत के बाहर भी कनिष्क ने अपने साम्राज्य का विस्तार करने के उद्देश्य से कई सैनिक अभियान किए और विशाल भू–भाग को अपने राज्य में मिलाया। इसने चीन के साथ भी युद्ध किया, जहाँ एक बार पराजित होने के बाद दूसरी बार वह विजयी हुआ। मौर्य साम्राज्य के बाद उसने भारत में पहली बार एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। रेशम मार्ग जहाँ से रोम एवं चीन के बीच रेशम का व्यापार होता था पर कुषाण साम्राज्य का नियंत्रण था। इस व्यापारिक मार्ग पर नियंत्रण के कारण भारत का व्यावसायिक सम्पर्क पश्चिम एशिया एवं यूरोप के देशों के साथ हुआ। कनिष्क की राजधानी में बड़े–बड़े विद्वान मौजूद थे। अश्वघोष के अलावे पार्श्व, वसुमित्र, नागार्जुन आदि उसके राजसभा के रत्न थे ।

ck)/kel dk foLrkj %

धर्म के क्षेत्र में मौर्योत्तर काल की मुख्य विशेषता थी ब्राह्मण या वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना तथा बौद्ध धर्म की महायान शाखा का उदय और विकास। पुष्यमित्र शुंग ने ब्राह्मण धर्म को बढ़ावा दिया जिससे यज्ञ और बलि की प्रथा का विकास हुआ। इसके साथ ही त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश की धरणा भी बलवती हुई। कई विदेशियों ने भी इस धर्म को अपना लिया। फिर भी भारत में आनेवाले इस समय के लगभग सभी विदेशी शासकों ने बौद्ध धर्म को ही प्रश्रय दिया। हिन्दू यूनानी (यवन) शासकों ने अपने सिक्कों पर बौद्ध चिह्न अंकित किए और कुषाणों ने बौद्ध विहारों को बहुत अधिक दान दिए। कनिष्क बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया था। अतः उसने इस धर्म को राजकीय संरक्षण प्रदान किया। आर्य सुदूर क्षेत्रों में भी बौद्धधर्म के प्रचार के लिए प्रचारक भेजे ।

देश के भीतर बौद्धधर्म को धनी व्यापारियों द्वारा भी प्रश्रय मिला । इस काल के अनेक बौद्ध विहार व्यापारियों के अनुदान से बनाए गए। देश के अधिकांश विहार व्यापारिक मार्गों या पश्चिमी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित था ।

व्यापार के माध्यम से बौद्धधर्म पश्चिमी एवं मध्य एशिया भी पहुँचा। व्यापार के ही क्रम में अनेक भारतीय व्यापारियों ने काशगर, खोतान, चारकन्द, तुरफान, मीरन आदि स्थानों पर

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना की। व्यापारियों के साथ बौद्धधर्म के प्रचारक भी इन स्थानों पर गए। मध्य एशिया के निवासियों ने धर्म प्रचारकों के संपर्क से बौद्ध मत ग्रहण किया और बौद्ध मठों की स्थापना की । इन मठों में बौद्ध धर्म ग्रन्थों का अध्ययन प्रारंभ हुआ। विदेशी सम्पर्क ने नये विचारों के विकास में भी सहायता की।

महात्मा बुद्ध की मृत्यु के तुरन्त बाद ही उनकी शिक्षाओं के संबंध में वाद–विवाद प्रारंभ हो गया था। फलस्वरूप बौद्धधर्म दो शाखाओं में बँट गया–हीनयान और महायान । हीनयान शाखा के अनुयायी महात्मा बुद्ध की मूल शिक्षा में विश्वास करते थे। महायान मत के मानने वाले लोगों ने 'बोधिसत्व' का आदर्श प्रस्तुत किया। इसके अनुसार बुद्ध को एक धर्मिक उपदेशक के रूप में न देखकर भगवान के रूप में देखा जाने लगा । बाद में उनकी मूर्तियां बनाकर उनकी पूजा की जाने लगी। इस प्रकार महायान बौद्धधर्म में भक्ति की अवधारणा का विकास हुआ ।

dyk ,oa LFkkiR; % मौर्योत्तर काल में कला के विकास में भी उल्लेखनीय प्रगती हुआ। आर्थिक समृद्धि ने भी इस विकास को प्रभावित किया। इस समय के स्थापत्य कला के अवशेष के रूप में स्तूप, गुहा मन्दिर चैत्य एवं बौद्ध विहार (बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान) है । पहाड़ों में चट्टानों को काटकर बनायी गयी गुफाएँ बौद्ध मन्दिरों एवं भिक्षुओं के रहने के लिए प्रयोग की जाती थी । इनमें चैत्य या पूजा स्थल भी शामिल है ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

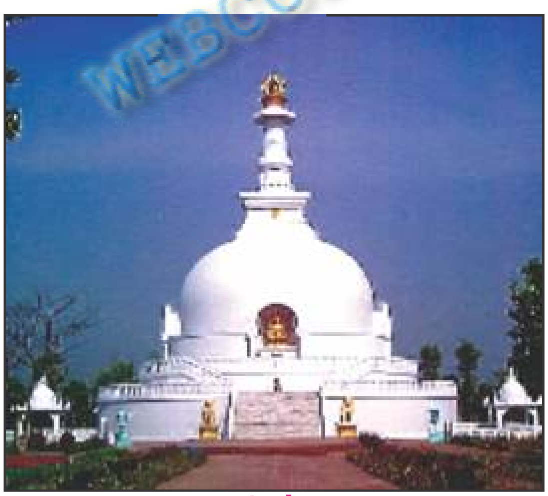

Lrwi

pR;

पश्चिमी भारत में कार्ले की गुफाएँ तथा अजंता एवं एलोरा के गुफा मन्दिरों के निर्माण के साक्ष्य आज भी उपलब्ध हैं। भरहुत तथा सांची के स्तूप भी शिल्प कला का अच्छा उदाहरण है। इनमें तोरण और रेलिंग को सजाने के लिए लकड़ी और हाथी दांत का सुन्दर उपयोग हुआ है ।

यह कला धर्म से प्रभावित थी चाहे वह स्थापत्य कला हो अथवा मूर्ति कला। इस समय की कुछ विशिष्ट शैलियां विकसित हुईं। शुंग शैली, गांधर शैली, मथुरा शैली तथा अमरावती शैली में सुन्दर मूर्तियों एवं स्तूपों तथा तोरण द्वारों का निर्माण हुआ ।

'kqx 'kSyh % शुंग कला में स्तूप के चारों ओर एक ऊँची चहारदीवारी बनायी जाती थी तथा चार तोरण द्वार लगाए जाते थे जिसको जातक कथाओं बौद्ध चिह्नों, नाग एवं अप्सरा की मूर्तियां से सजाया जाता था। भारहुत और सांची का स्तूप इस कला का उदाहरण है।

okfe;ku fLFkr Hkxoku cq)

xk/kkj 'kSyh % यूनानी कला के प्रभाव से देश के पश्चिमोत्तर प्रदेशों में गान्धार शैली का विकास हुआ । इस शैली की अधिकांश मूर्तियां बुद्ध के जीवन यात्रा से सम्बन्धित है। गान्धार कला की अनेक मूर्तियां लाहौर तथा पेशावर के संग्रहालयों में सुरक्षित हैं । भारत के बाहर इस कला का व्यापक प्रभाव रहा । इस शैली को 'इण्डो–ग्रीक शैली' भी कहा जाता है।

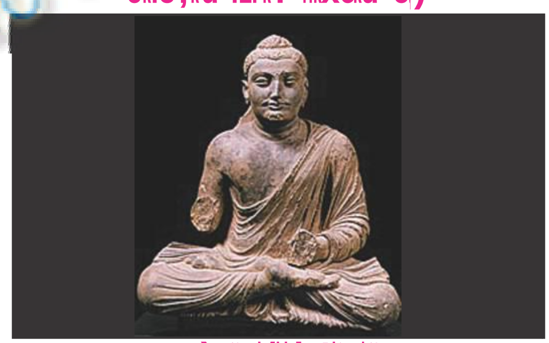

cq) ¼xk/kkj 'kSyh½

eFkqjk 'kSyh % कुषाण काल में मथुरा भी कला का प्रमुख केन्द्र था । इसमें बुद्ध की मूर्तियां बनाने में स्पष्टतः सोच भारतीय है। इनमें यूनानी

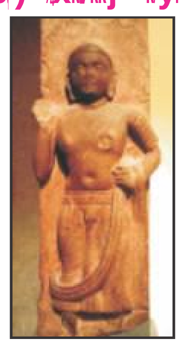

Hkxoku cq) eFkqjk 'kSyh

© BSTBPC WEBCOPY; NOT TO BE PUBLISHED

या ईरानी कला का लक्षण नहीं दिखता है । मथुरा शैली में बुद्ध की मूर्तियां के अलावे हिन्दू एवं जैन मूर्तियों का भी निर्माण किया गया था । मथुरा से कनिष्क की एक सिर रहित मूर्ति मिली है । यह मूर्ति कला की दृष्टि से उच्च कोटि की है । इस शैली में स्थानीय रूप से उपलब्ध सुन्दर लाल बलुआ पत्थर का उपयोग होता था ।

vejkorh 'kyh%

आन्ध्र प्रदेश के अमरावती (गुन्टुर जिला) से बुद्ध की कई मूर्तियां मिली हैं । यहाँ प्राप्त स्तूप की मुख्य विशेषता इसकी संगमरमर की पट्टिकाएँ हैं जिनपर बुद्ध के जीवन से सम्बध दृश्यों का चित्रण किया गया है।

vejkorh Lrwi

इनमें पशुओं और पुष्पों का भी चित्र है । यह कला विदेशी प्रभाव से पूर्ण रूप से मुक्त है ।

इस तरह भारतीय सभ्यता का प्रसार प्राचीन काल में एशिया के विभिन्न देशों में हुआ। इनमें मध्य और दक्षिण पूर्व एशिया के देश शामिल हैं । इन संबंधें का विस्तार धर्मिक और व्यापारिक माध्यमों से हुआ । बौद्धधर्म के प्रचार एवं प्रसार के क्रम में भारत का संबंध श्रीलंका, बर्मा, चीन और मध्य एशिया के साथ बना जबकि व्यापार के माध्यम से कम्बोडिया, इन्डोनेशिया और थाइलैंड आदि देशों के साथ भारत का संबंध स्थापित हुआ ।

श्रीलंका में अशोक के समय में ही बौद्धधर्म का प्रचार हुआ और आज उस देश मे इस धर्म के अनुयायी काफी संख्या में मौजूद हैं। इसी तरह बर्मा या आधुनिक मयाँमार में बौद्ध धर्म के 'थेरवाद' रूप का विकास हुआ। इन दोनों देशों में अनेक मन्दिरों एवं मूर्तियों का निर्माण हुआ जो भारतीय कला के प्रसार का उदाहरण है । कुषाण शासकों के समय अफगानिस्तान

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

और मध्य एशिया में भी बौद्धधर्म का बड़े पैमाने पर प्रचार हुआ। गौतम बुद्ध की सबसे विशाल मूर्ति अफगानिस्तान के वामयान में ही पहाड़ को काटकर बनायी गयी थी ।

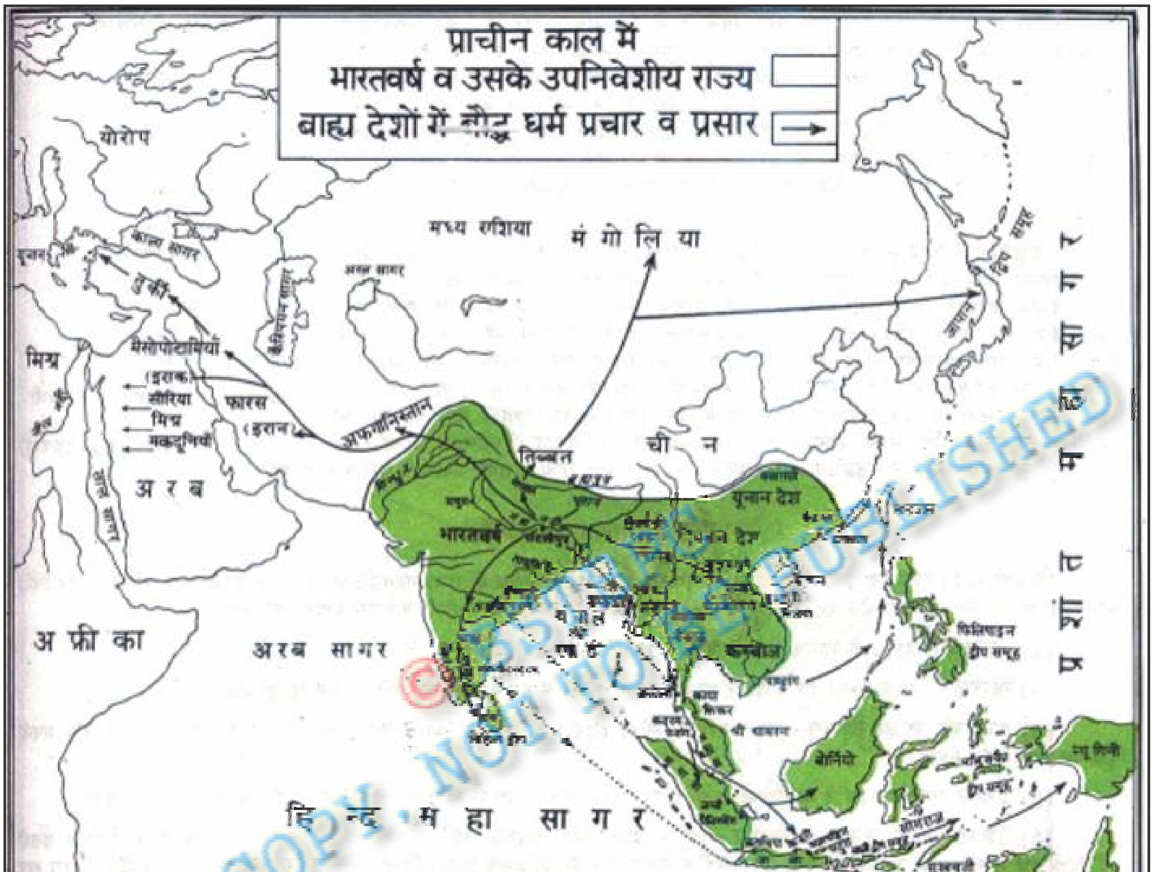

nf{k.k iol ,f'k;kbZ ns'kksa dk ekufp=

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

vkb, ;kn djs%

I. oLrqfu"B iz'u%

1. प्रसिद्ध यूनानी शासक कौन था ?

   (क) कनिष्क (ख) पुष्यमित्र शुंग

   (ग) मीनाण्डर (घ) चन्द्रगुप्त

2. कनिष्क की राजधनी कहाँ थी ?

   (क) काबुल (ख) पेशावर

   ग) अमृतसर (घ) यारकंद

3. शुंग वंश का संस्थापक कौन था ?

   (क) पुष्यमित्र (ख) अग्निमित्र

   ग) वृहद्रथ (घ) यशोवर्मन

II. [kkyh LFkku dks HkjsA

1. मौर्यवंश के बाद.....................मगध पर शासन किया।
2. इण्डो ग्रीक राजा भारत में.....................से आये।
3. सुदर्शन झील की मरम्मत.....................ने कराई।
4. ....के सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क थे।
5. कनिष्क ने.....................धर्म को राजकीय संरक्षण प्रदान किया।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

III. lqefyr djs

महायान	शक
मिनाण्डर	बौद्ध ग्रंथ
रूद्रदामन	सांची
स्तूप	इण्डो ग्रीक
मिलिन्दपन्ह	बौद्ध धर्म

vkb, ppkZ djsa&

1. मथुरा शैली एवं गंधार शैली के मूर्तिकला में समानता एवं असमानता क्या है?
2. विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रसार में किन लोगों का योगदान था?
3. भारत पर यूनानी सम्पर्क का क्या प्रभाव पडा।

vkb, djds ns[ksa&

4. बौद्ध धर्म से संबंधित पुस्तकों की सूची बनायें।
5. पुस्तक में दिये गये मूर्तिकला के चित्र देखकर यह बतायें कि वर्तमान समय में बनाये जाने वाले मूर्ति में क्या अंतर देखते हैं?

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED
BSTBPC

अध्याय-12

नए साम्राज्य एवं राज्य

fcgkj n'ku dk;Øe vurxr Nk=k ,o f'k{kdk dk ,d leg Hke.k djr g, ukyUnk egkfogkj igpkA egkfogkj dk n[kr gh NBh d{kk d Nk= ed'k d eu e dbZ loky mBu yxA ^^bl egkfogkj dk cukus oky dkSu Fk \ tc ;g cuk gkxk rk fdruk lUnj fn[krk gkxk \ ;gk dkSu&dkSu ykx jgr Fk vkj o D;k djr Fk\

ukyUnk x, Nk=k ,o f'k{kdk dk leg

© BSTBPC WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED

आप पढ़ चुके हैं कि चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्यों ने सबसे पहले पूरे भारत में एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की। इसी तरह गुप्त शासकों ने तीसरी शताब्दी में उत्तरी भारत में एक नए राज्य की नींव डाली जो आगे चलकर एक बड़े साम्राज्य में परिवर्तित हो गया। इस साम्राज्य का भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी स्थापना का श्रेय चन्द्रगुप्त प्रथम को जाता है। इनके पूर्वज श्री गुप्त और घटोत्कच संभवतः सामन्त (अधीनस्थ शासक) ही थे। चन्द्रगुप्त ने लिच्छवी राजकुमारी से विवाह करके अपने को सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से भी प्रभावशाली बनाया।

lenxlr ¼335&375 b0½ & समुद्रगुप्त गुप्तवंश का सबसे प्रभावशाली शासक था इसके बारे में राजकवि हरिषेण द्वारा लिखित एक प्रशस्ति से जानकारी मिलती है। इसे प्रयाग प्रशस्ति भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त समुद्रगुप्त के बारे में एरण अभिलेख (मध्यप्रदेश) और विभिन्न प्रकार के सिक्कों आदि से भी जानकारी मिलती है।

© BSTBPC
WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

oh.kk ctkrs g, lenxlr dk flDdk

xlr o'kkoyh		
श्री गुप्त	–	240–280इ०
घटोत्कच	–	280–319ई०
चन्द्रगुप्त प्रथम	–	319–335ई०
समुद्रगुप्त	–	335–375ई०
रामगुप्त	–	375–375ई०
चन्द्रगुप्त	–	375–415ई०
कुमारगुप्त	–	415–455ई०
स्कन्दगुप्त	–	455–467ई०

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

i;kx i'kfLr d vuqlkj

1. समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के शासकों को पराजित कर सीधा अपने नियंत्रण में ले लिया। इस क्षेत्र के नौ शासकों को इसने पराजित किया।
2. दक्षिण के बारह शासकों को समुद्रगुप्त ने पराजित कर समर्पण करने के लिए मजबूर किया। हालांकि इन राज्यों को पुनः स्वतंत्र कर दिया गया। ये समुद्रगुप्त के करद–राज्य थे। इनके द्वारा 'कर' के रूप में निश्चित उपहार प्रदान किया जाता था।
3. वन क्षेत्र के राजा जो आटविक प्रदेश के राजाके रूप में जाने जाते हैं। इनके क्षेत्र का विस्तार उत्तरप्रदेश के गाजीपुर से लेकर मध्यप्रदेश के जबलपुर तक था। इन राजाओं (जो संभवतः अपने कबीले के सरदार थे) को भी समुद्रगुप्त ने अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया इन्हें सेवक या परिचारक का दर्जा प्रदान किया गया। इनके साथ समुद्रगुप्त ने अपेक्षाकृत नरम व्यवहार किया।
4. भारत के सीमावर्ती राज्यों ने भी 'उपहार एवं राजनिष्ठा' का प्रमाण देकर समुद्रगुप्त के सामने आत्मसमर्पण किया। इन राज्यों में पूर्व की ओर कामरूप (असम), बंगाल का

कुछ भाग और नेपाल, उत्तर पश्चिम की ओर मालवा, अर्जुनायन, यौधेय, आंभीर, आदि कई गणसंघ शामिल थे। ये शासक उपहार प्रदान करते थे, राजा की आज्ञाओं का पालन करते थे एवं दरबार में भी उपस्थित होते थे।

5. बाहरी क्षेत्रों के शासक जो शायद शकों एवं कुषाणों के वंशज एवं सिंहल प्रदेश के शासक थे। इन सबों ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की तथा वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए। इनकी विदेश नीति पर समुद्रगुप्त का प्रभाव था।

इस तरह आप देखते हैं कि समुद्रगुप्त ने उपरोक्त विजित प्रदेशों के लिए अलग–अलग नीतियाँ अपनाई। जहाँ इसने आर्यावर्त्त (उत्तर भारत) के राज्यों को सीधा अपने नियंत्रण में लिया, वहीं दूर के राज्यों एवं आटविक प्रदेश के साथ नरम व्यवहार किया। जो उसकी बुद्धिमत्ता का सूचक है, क्योंकि उस सयम संपूर्ण भारत पर सीधा नियंत्रण स्थापित करना आसान नहीं था।

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

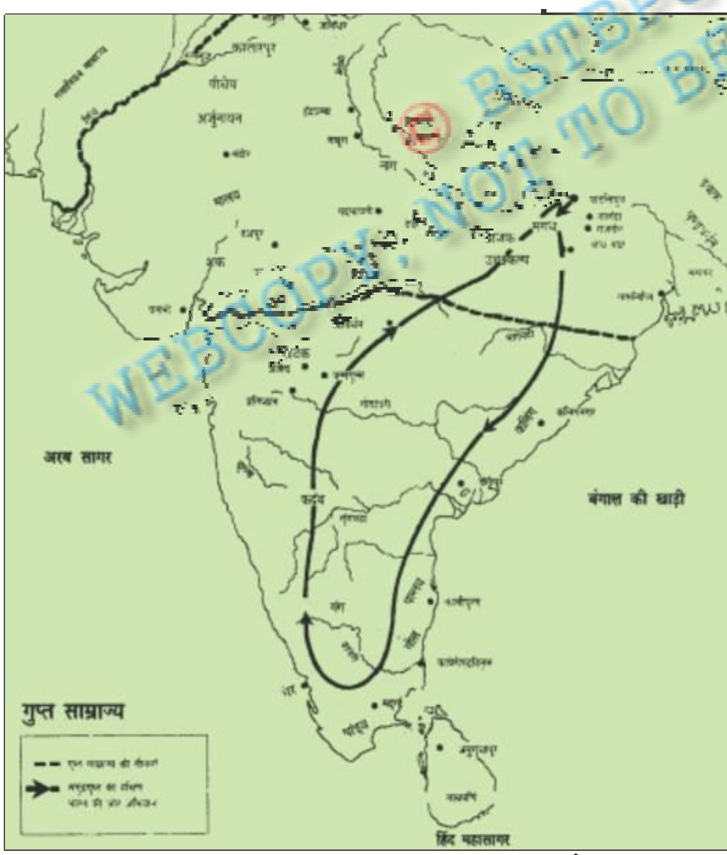

आप ikfp, ! lii.k Hkkjr ij lh/kk fu;=.k LFkkfir djuk lenxlr d fy, vklku D;k ugh Fkk \

pUnxlr f}rh; ¼375&415b0½

समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त को हटाकर इसका योग्य पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय शासक बना। इसने शक आक्रमणकारियों से साम्राज्य की रक्षा की।

lenxlr dk lkekT; foLrkj dk ekufp=

pUnxlr f}rh; }kjk xíh ij bl rjg vf/kdkj tek;k x;k& 'kdk ds }kjk tc lkekT; ds fy, ldV mRiUu fd;k x;k rks jkexlr us viuh iRuh /kzqonoh dks lkSius dk fu'p; fd;kA D;kfd 'kdkf/kifr /kzqonoh dh lqUnjrk ij vklDr FkkA pUnxlr f}rh; jkexlr dh dk;jrk ij dkQh {kC/k gvkA blus /kzqonoh dk o"k /kkj.kdj 'kd f'kfoj x;k vkj 'kdkf/kifr dh gR;k dj nhA blds ckn pUnxlr f}rh; us jkexlr dh Hkh gR;k dj nh vkj xíh ij dCtk djds /kzqonoh ls fookg dj fy;kA

दिल्ली के मेहरौली स्थित लौह स्तंभ में 'चन्द्र' नाम के जिस शासक का उल्लेख मिलता है उसे चन्द्रगुप्त द्वितीय ही समझा जाता है। इस लेख में चन्द्रगुप्त द्वितीय को एक वीर राजा के रूप में याद किया गया है जिसने पूर्व में बंगाल और पश्चिम में बलूचिस्तान तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया। इसने पश्चिमी भारत में (समुद्रगुप्त के बाद) पुनः अभियान चलाकर गणराज्यों के अस्तित्व को समाप्त कर डाला।

चन्द्रगुप्त द्वितीय का समय शक्ति और समृद्धि का सूचक था। इसने पहले अभियान में पश्चिमी भारत (मालवा, गुजरात एवं सौराष्ट्र) पर विजय प्राप्त की। इस विजय के फलस्वरूप खम्भात एवं सोपारा के बन्दरगाह गुप्तों के नियंत्रण में आ गए।

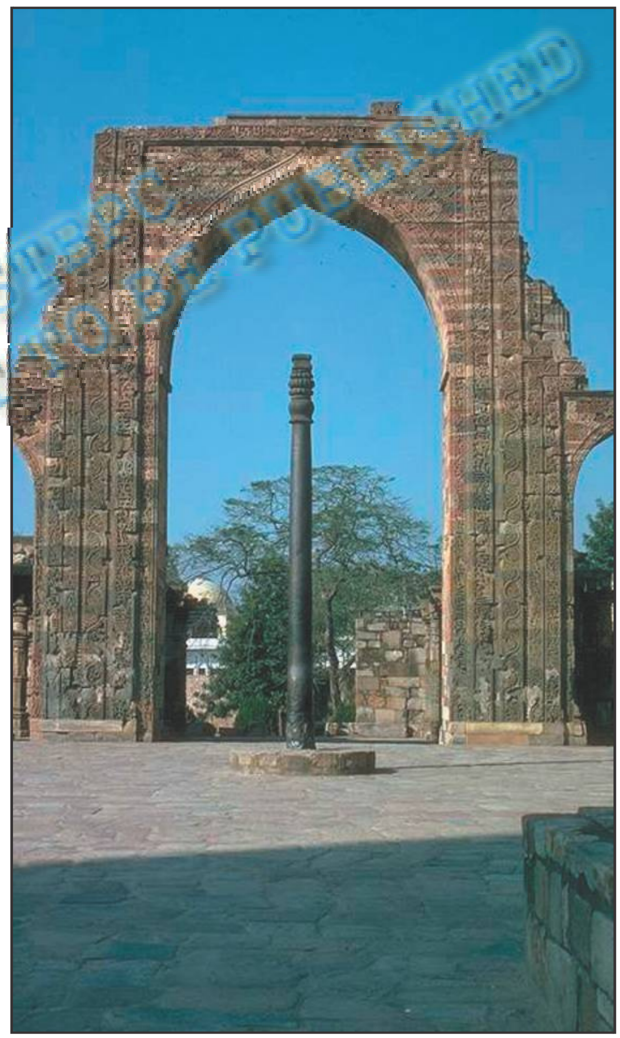

egjkSyh dk ykSg LrEHk

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त की शादी दक्षिण भारत के वकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय से की, जिसके कारण राजनीतिक एवं सामरिक रूप से यह बहुत प्रभावशाली हो गया। पश्चिमी शकक्षत्रप रूद्रसिम्हा तृतीय को इसने 395 ई0 में पराजित किया तथा बंग(बंगाल) को भी जीता। इसने अपने साम्राज्य का विस्तार पश्चिमी से पूर्वी समुद्रों(अरब सागर से बंगाल की खाड़ी) तक किया। इसकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि राजधानी को पाटलिपुत्र के अतिरिक्त उज्जैन को दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित करनी थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में साहित्य कला, विज्ञान एवं संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की गईं। (इसे अगले अध्याय में विस्तार से पढ़ेंगे) चीनी यात्री फाहियान इसी के समय भारत आया। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विदेशों से भी व्यापारिक संबंध स्थापित किए एवं बड़ी मात्रा में सोने के सिक्के भी जारी किए।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

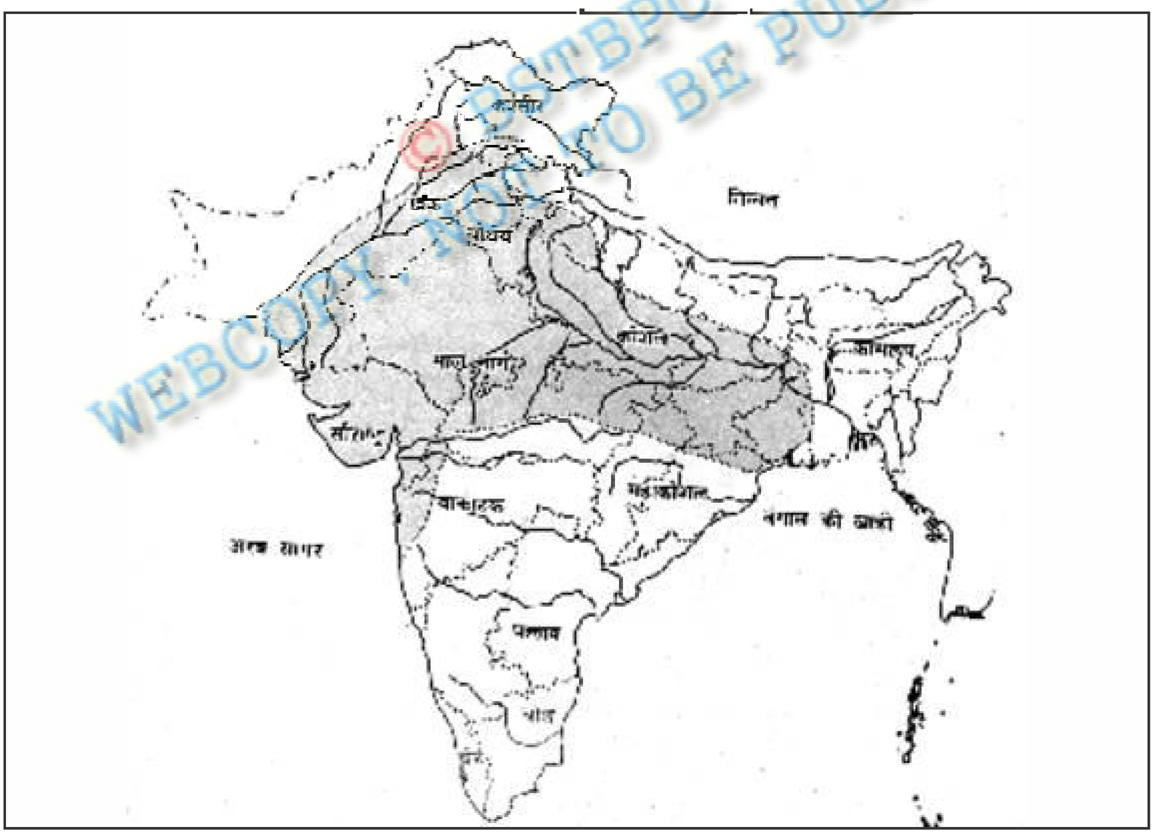

pUnxqIr f}rh; dk lkezkT; foLrkj dk ekufp=

dqekjxqIr ¼415&455b0½

चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद इसका पुत्र कुमार गुप्त शासक बना। इसके शासन काल में शिक्षा के महान् केन्द्र नालन्दा महाविहार की स्थापना की गई। कुमारगुप्त का शासनकाल अपेक्षाकृत शांत था लेकिन अंतिम समय में इसे पुष्यमित्रों के आक्रमण का सामना करना पड़ा था।

LdanxqIr ¼455&467b0½

कुमारगुप्त के बाद स्कंदगुप्त शासक बना। जब वह पुष्यमित्रों को पराजित कर लौटा तो पिता की मृत्यु का समाचार मिला। उसी समय उत्तर–पश्चिम प्रांत से हुणों के आक्रमण शुरू हो गए। इसने हूणों को भी पराजित किया और शक्रादित्य की उपाधि धारण की।

स्कंदगुप्त के बाद गुप्त शासक हूणों के आक्रमण का सफलता पूर्वक सामना नहीं कर सके। साम्राज्य धीरे–धीरे कमजोर होने लगा, हूणों के लगातार आक्रमण के कारण गुप्त शासक अपने विस्तृत साम्राज्य को संगठित नहीं रख सके और अंततः इसका पतन हो गया।

पुष्यमित्र – पुष्यमित्र dkSu Fks \ dgk¡ ds Fks? इस संबंध में Li"V tkudkjh dk अभाव gSA 'kk;n ;g uenk unh ds fdukjs cls gq, ,d lenk; FksA

g.k & gw.kksa का सामान्य ifj'k;k ls [kkrku rd Qsyk gqvk FkkA blds jktधानी अफ़xkfuLrku esa okfe;ku FkhA iFke g.k 'kkld ftlus Hkkjr dh vksj :[k fd;k og rksjeku FkkA phuh ;k=h dgrs gSa fd blds iq= fefgj dqy cM+s /keZ ds ifr ?k.kk dk Hkko j[krk FkkA blus dbZ cM+s fHk{kqvksa dh gR;k dj nh vkSj vusd cM+s fogkj u"V fd,A ;g lSHkor 'kSo /keZ dk vuq;k;h FkkA

xqIrksa dk iz'kklu dSls Fkk

गुप्तों ने एक प्रभावशाली शासनतंत्र की स्थापना की। इन्होंने आर्थिक सम्पन्नता एवं

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सैनिक ताकत के बल पर समूचे उत्तर भारत पर राजनैतिक नियंत्रण स्थापित किया। शासन का प्रधान राजा था जो प्रजा को सुरक्षा और न्याय प्रदान करने के साथ धर्म को भी संरक्षण देता था। उसकी सहायता के लिए मंत्री और अमात्य (अधिकारी) होते थें। राज्य की आमदनी का मुख्य स्रोत लगान था। राज्य की समस्त भूमि राजा की सम्पत्ती मानी जाती थी। अतः उपज का एक तिहाई (1 / 3) भाग पर उसका अधिकार था, और यही लगान की राशि थी। राजा द्वारा अधिकारियों को भूमि प्रदान की जाती थी। इसके अलावा समुद्रगुप्त ने कई पराजित राजाओं को उनके क्षेत्र लौटा कर उन्हें कर देने पर बाध्य किया था। कर देने वाले यह शासक और भूस्वामी अधिकारी **lker** कहलाते थे। मौर्य शासकों के केन्द्रीयकृत प्रशासन के विपरीत गुप्तों का शासन सामंती और विकेन्द्रीकृत स्वरूप रखता था। आगे चलकर यह साम्राज्य के पतन का कारण भी बना।

साम्राज्य की सबसे बड़ी इकाई को देश कहा जाता था। दूसरी प्रादेशिक इकाई को भुक्ति कहा जाता था। उस समय मगध का उल्लेख भुक्ति के रूप में मिलता है। भुक्ति के पदाधिकारी उपरिक कहलाते थे। इसके नीचे की इकाई विषय संभवतः जिले के रूप में थी जिसके पदाधिकारी को विषयपति कहा जाता था। सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी।

dqekjkekR;	**&**	**inkf'k dk xkSjo**
egk[illegible]	**&**	**;q) ,oa 'kkfr dk ea=h**
egkn.Muk;d	**&**	**eq[; U;k;k/kh'k**

सीनीय प्रशासन में नगर श्रेष्ठी (शहर का बैंकर या शहर का व्यापारी) सार्थवाह यानी व्यापारियों के काफिले का नेता प्रथम कुलिक अर्थात मुख्य शिल्पकार प्रथम कायस्थ यानि लिपिकों के प्रधान जैसे लोग महत्वपूर्ण भूमिका में होते थे। ग्राम का प्रधान ग्रामिक कहलाता था जिसका चुनाव ग्राम समिति के लोग करते थे । नगरपति शहर के प्रशासन का प्रधान होता था।

© DSIPPC WEBCOPY; NOT TO BE PUBLISHED

bls Hkh tkus

xqIr lkezkT; ds iru ls g"kZ ds mRFkku rd mŸkj Hkkjr esa pkj jkT; dkQh 'kfDr'kkyh fLFkfr esa FksA

1. **ex/k dk xqIr ¼budk xqIro'k ls dksbZ lac/k ugha Fkk½**
2. **dUukSt dk ekS[kjh**
3. **Fkkus'oj dk iq";Hkwfr&iosZ esa mfYyf[kr iq";Hkwfr ls budk dksbZ lac/k ugha FkkA**
4. **oYyHkh dk eS=d**

g"kZo)Zu

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद पुष्यभूति वंश सबसे शक्तिशाली अवस्था में रहा इनकी राजधानी थानेश्वर में थी, और इनका पहला महत्त्वपूर्ण शासन प्रभाकरवर्द्धन था। हषवर्द्धन का राज्यारोहण 606 ई० में संकटपूर्ण परिस्थिति में हुआ। जब बंगाल के शासक शशांक ने पुष्यभूति वंश को कमजोर कर दिया था। परंतु हर्ष ने अपनी प्रतिभा से इस वंश को मजबूत और स्थिर बनाया। इसने सफल सैनिक अभियानों द्वारा पंजाब से बंगाल तक साम्राज्य विस्तार किया। कुछ इतिहासकारों के अनुसार कामरूप (असम) और कश्मीर के शासक भी उसकी अधीनता स्वीकार करते थे। हर्ष ने नर्वदा के दक्षिण में भी साम्राज्य विस्तार करना चाहा लेकिन चालुक्य वंश के शासक पुलकेशिन द्वितीय ने उसे पराजित किया।

bls Hkh tkus

g"kZ ds lnHkZ esa gesa mlds jktdfo ck.kHkê dh dfr g"kZpfjr] e/kqcu okl[kMk vkSj lkSatsu rkezi= ys[k ,oa âosulkax ds ;k=k oŸkkUr vkfn ls tkudkjh feyrh gSA

हर्ष का झुकाव बौद्ध धर्म की ओर था। लेकिन वह अन्य धर्मावलम्बियों के साथ भी अच्छा व्यवहार करता था। इसने कई स्तूप, बौद्ध विहार एवं कुछ अस्पतालों का निर्माण भी

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

करवाया। इसने कन्नौज में पाँचवीं बौद्ध–संगीति का आयोजन 643 ई0 में करवाया। इसमें लगभग 20 राजाओं सहित हजारों तीर्थयात्री एवं विद्वान शामिल हुए। ह्वेनसांग इस सभा का मुख्य अतिथि था। हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई।

D;k vki tkurs gSa

âoulkax ,d phuh ;k=h Fkk] ftlus g"kZ ds lkezkT; dk Hkze.k fd;k FkkA blus g"kZ ds iz'kklu ,oa vkeyksxksa ds thou dk foLr`r o.kZu viuh ;k=k o`rkar esa fd;k gSA g"kZ dks àoulkax us cq) /keZ dk egk;ku mikld crk;kA ysfdu og f'ko vkSj lw;Z dk Hkh mikld FkkA

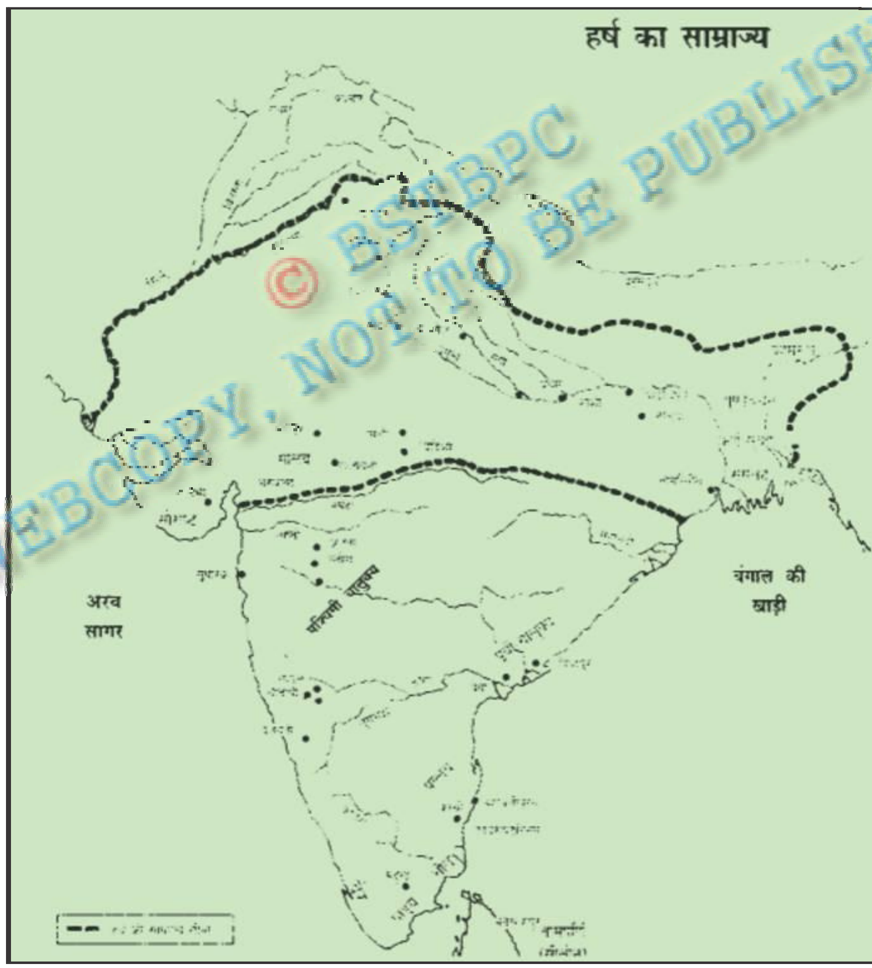

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

g"kZ ds lkezkT; dk ekufp=

iYyo ,o pkyD; ¼550&750b0½

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद लगभग दो सौ वर्षो तक उत्तर–भारत में हर्ष को छोड़कर कोई महत्वपूर्ण राजा नहीं हुआ। इस काल में राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र दक्षिण भारत के दो प्रमुख राजवंश वातापी के चालुक्य और काँची के पल्लव हुए।

okrkih d pkyD;

इस वंश का प्रथम प्रतापी राजा पुलकेशिन प्रथम हुआ। पुलकेशिन द्वितीय इस वंश का सबसे महान् राजा था। 611 ई0 में पुलकेशिन द्वितीय ने गद्दी पर बैठने के साथ ही आंतरिक समस्याओं का सामना किया। इन समस्याओं से निपटने के बाद इसने दक्षिण के राज्यों कदम्ब, गंग, कोंकण के मौर्य को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। इसके बाद इसने पुरी, मालवा और गुजरात के राजा को भी पराजित कर अपने अधीन किया। पुलकेशिन की सबसे बड़ी विजय हर्ष के विरूद्ध थी जो दक्षिण की ओर अपने साम्राज्य को बढ़ाना चाहता था। (इसकी चर्चा पहले भी की गई है) हर्ष पर विजय के बाद उत्तरापथस्वामी की उपाधि धारण की। पुलकेशिन द्वितीय अब काँचीपुरम (काँची) के पल्लवों को भी जीतना चाहता था। इस समय पल्लव शासक नरसिंह वर्मन था जिसने पुलकेशिन द्वितीय को पराजित किया। नरसिंह वर्मन ने वातापी (बादामी–आंध्रप्रदेश) को भी जीत लिया। पुलकेशिन द्वितीय युद्ध करते हुए मारा गया।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

> **bls Hkh tkus**
>
> परमेश्वoj iydf'ku f}rh; d ckjs e tkudkjh ge vfHkys[kk ,o lkfgfR;d lkrk l ikIr gkrh gA bld njckjh dfo jfodhfÙk }kjk jfpr ,gky vfHkys[k ls g"k ij fot; d lnHkZ e tkudkjh feyrh gA

iYyo

दक्षिण भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में पल्लवों का विशेष स्थान है। इन्होंने छठी सदी में अपनी राजधानी कांचीपुरम में स्थापित की। इनका प्रभुत्व तमिल क्षेत्र के उत्तरी भाग में नौवीं सदी तक कायम रहा। अपने साम्राज्य के उत्तर में अवस्थित चालुक्यों एवं दक्षिण में चोलों एवं पांड्यों के साथ इनका सदैव संघर्ष होता रहा।

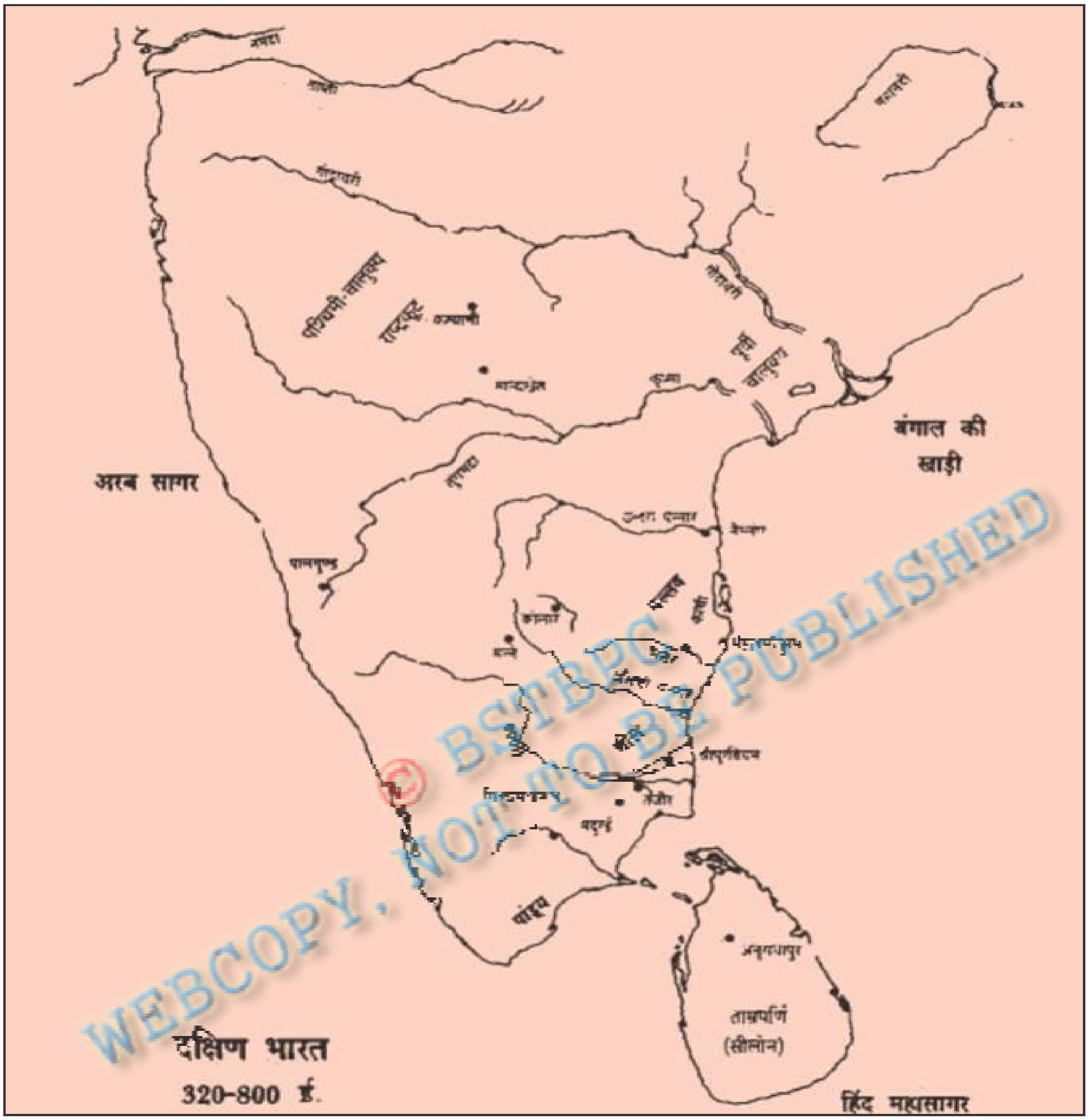

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

iYyo ,oa pkyD;dkyhu Hkkjr dk ekufp=

पल्लवों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक महेन्द्रवर्मन प्रथम (600–630) हुआ। चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इसे पराजित किया था।

महेन्द्रवर्मन का पुत्र नरसिंहवर्मन एक महान योद्धा था। इसने अपने पिता के पराजय का बदला लिया। पुलकेशिन द्वितीय को पराजित कर इसने 'वातापीकोण्ड' की उपाधि धारण की।

jFkefnj

iYyoks dh lkaLd`frd miyfC/k

© DSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

पल्लवों को द्रविड़ शैली के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। पल्लव कालीन वास्तुकला के उदाहरण इनकी राजधानी कांचीपुरम् एवं महाबलीपुरम् में पाये जाते हैं। पल्लवों ने वास्तुकला को काष्ठ और कन्दरा कला से मुक्त किया। इनके समय में मंदिर निर्माण की चार शैलियों का विकास हुआ। इनमें रथ शैली के मंदिर महाबलीपुरम् में बने हैं जो देखने में रथ की तरह लगते हैं। अन्य शैलियों में तटीय मंदिर और कांची के कैलाशनाथ मंदिर महत्वपूर्ण हैं जो स्थापत्य कला के असाधारण नमुने हैं।

dSyk'kukFk efUnj

D;k vki tkurs gSa

dk"B dyk & efnj fuekZ.k ;k okLrqdyk ds fofo/k :iksa esa ydMh ds iz;ksx dh iz/kkurk jgrh gSA bl dyk esa efnjksa ds nhokj] cheas ,oa Nr ds fuekZ.k esa ydMh dk vyad`r dj bLrseky fd;k tkrk gSA

nfoM+ 'kSyh& nfoM+ 'kSyh ds efnj nf{k.k Hkkjr ¼d".kk unh ds nf{k.k½ esa ik;s tkrs gSA blesa efnj dk vk/kkj vk;rkdkj rFkk f'k[kj xHkZx`g ds Åij vusd [k.Mksa esa cuk gksrk gSA Åij dk iR;sd [k.M Øe'k% viusa uhps ds [k.M ls NksVk gksrk gSA 'kh"kZHkkx esa xEcn ds vkdkj dh dqN Lrwfidk,¡ gksrh gSA vkxs pydj efnj ds lkFk&lkFk LrEHk ;qDr मंडप, xfy;kjk rFkk xksiqje ¼izos'k }kj½ cuk,A

पल्लवों ने संस्कृत एवं तमिल भाषा को भी संरक्षण प्रदान किया महेन्द्रवर्मन स्वंय एक महान् विद्वान था। पल्लवों के समय वैष्णव संत (भगवान विष्णु में आस्था रखनेवाले) वैष्णवसंत एवं शैवसंतों (शिवभक्त) को भी सम्मान प्रदान किया गया।

आगे चलकर दक्षिण भारत में चोलों ने पल्लवों का और दक्षिणापथ में चालुक्यों का स्थान राष्ट्रकूटों ने ले लिया।

nf{k.k भारत के ग्रा;ksa esa LFkkuh; Lo'kklu& उस समय के ऐतिहासिक स्रोतों से हमें स्थानीय स्वशासन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। ग्रामीण स्तर पर तीन तरह के संगठन थे—उर, सभा एवं नगरम। उर के सदस्य सामान्यतः प्रभावशाली वयक्ति होते थे। इसे ब्राह्मामण भू—स्वामियों का संगठन भी कहा जाता था।

सभा कई उपसमितियों में विभक्त थी, जिनका कार्य सिंचाई का साधन विकसित करना, खेती—बाड़ी से जुड़े विभिन्न कामों को देखना, सड़क—निर्माण करना, स्थानीय मंदिरों की देखरेख करना, शिक्षण संस्थानों एवं बाजार की व्यवस्था करना मुख्य कार्य था। नगरम् व्यापारियों का संगठन था। इस पर शक्तिशाली भू—स्वामियों और व्यापारियों का नियंत्रण था। ये संस्थाएँ आगे की शताब्दियों में और शक्तिशाली हो गई थीं।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

ukyUnk egkfogkj

आप पिछले अध्यायों में पढ़ चुकें होंगे कि प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरूकुल में कैसे शिक्षा ग्रहण करते थे और अपने ज्ञान के द्वारा समाज को कैसे सही रास्ता दिखाते थे। धीरे–धीरे यह ज्ञान ब्राह्मणों एवं मंदिरों के प्रांगण तक सीमित हो गया। ज्ञान पर धर्म एवं कर्म पर अंधविश्वासों का प्रभाव बढ़ गया। ऐसी परिस्थिति में नालंदा विक्रमशिला एवं उद्वन्तपुरी (बिहारशरीफ) में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना हुई। इनमें नालंदा महाविहार का विशेष स्थान है।

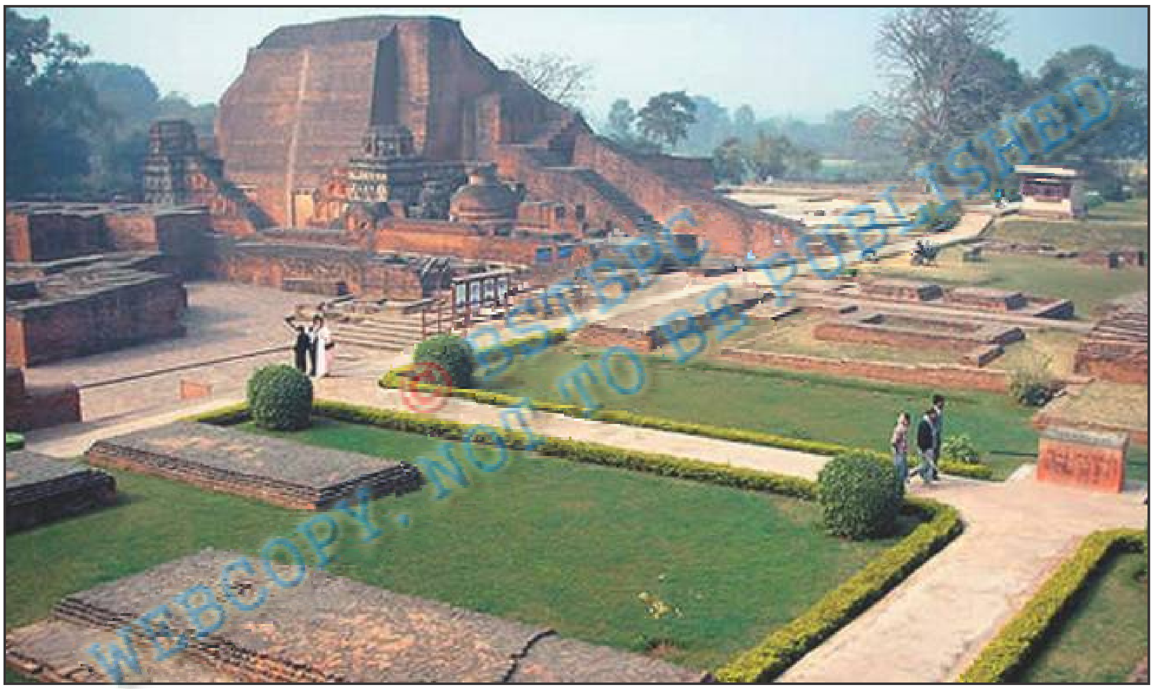
© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

ukyanz fo'ofo|ky;

नालंदा दक्षिण बिहार में राजगृह के निकट स्थित हैं इसके अवशेष मुख्य भवन के अतिरिक्त बड़गाँव–बेगमपुर आदि गाँवों में दूर–दूर तक बिखरे हुए हैं। नालन्दा विश्वविद्यालय के संबंध में जानकारी के मुख्य स्रोत ह्वेनसांग का विवरण एवं इसके अवशेष (आज भी विद्यमान) हैं। इत्सिंग ने भी यहाँ 10 वर्ष बिताये थे। चीनी यात्रियों के विवरण से पता चलता है कि यहाँ हजारों की संख्या में शिक्षक और छात्र रहते थे। नालन्दा विश्वविद्यालय की आय का मुख्य स्रोत अनुदान में मिले लगभग 200 गाँव थे। इसके

अतिरिक्त इन्हें कुछ राजकीय अनुदान एवं विदेशी सहायता भी मिलती थी।

नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए प्रवेश पाना काफी कठिन था। अध्ययन के लिए देश–विदेश से छात्र आते थे। छात्रों से उनकी विशेषज्ञता के विषय से संबंधित सवाल पूछे जाते थे, जिससे उनके ज्ञान एवं आचरण की परीक्षा हो जाती थी। विश्वविद्यालय एवं छात्रावास दोनों में दिनचर्या नियमित एवं व्यवस्थित ढंग से होती थी। ह्वेनसांग जब शिक्षा ग्रहण करने आए उस समय यहाँ के अध्यक्ष आचार्य शीलभद्र थे।

विश्वविद्यालय में सुबह से शाम तक शैक्षाणिक कार्य चलते रहते थे। संगोष्ठी प्रणाली की तरह छात्र शिक्षकों से प्रश्न पूछते थे एवं विचार–विमर्श भी करते थे। उस समय लगभग सभी विषयों की शिक्षा वहाँ दी जाती थी, जिसमें ब्राह्मण और बौद्ध धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष, दार्शनिक एवं व्यवहारिक तथा विज्ञान एवं कला से संबंधित विषय महत्वपूर्ण थे। लेकिन विशेष बल विभिन्न पंथों, वेदों (अथर्ववेद विशेषरूप से) सांख्य, संस्कृत व्याकरण एवं महायान बौद्ध धर्म पर दिया जाता था। शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही उपाधि (डिग्री) प्रदान की जाती थी।

नालन्दा विश्वविद्यालय की एक समृद्ध लाइब्रेरी भी थी जिसकी इमारत बहुमंजिली थी। नालन्दा विश्वविद्यालय को गुप्त शासकों, हर्षवर्द्धन एवं पालशासकों के द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था, लेकिन 11–12वीं सदी में संरक्षण के अभाव एवं आर्थिक स्रोतों में कमी के कारण नालन्दा विश्वविद्यालय की शैक्षाणिक स्थिति में गिरावट देखने को मिलती है। ऐसा कहा जाता है कि बंगाल विजय के क्रम (1197–1203ई0) में बख्तियार खिलजी ने नालन्दा को नष्ट कर दिया था एवं पूरी संस्था को जला दिया था। लेकिन साक्ष्यों के अभाव एवं अन्य साहित्यिक स्रोतों के आधार पर इस विचार धारा को अमानय कर दिया गया है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

vkvk ;kn djs

lgh mÙkj pqu@lgh ij fu'kku ¼✓½ yxk,¡

1. समुद्रगुप्त की प्रशस्ति किसने लिखी?

   (क) रविकीर्ति   (ख) हरिषेण

   (ग) कालिदास   (घ) अमरसिंह

2. हर्षवर्धन किस वंश का राजा था?

   (क) गुप्तवंश   (ख) मौर्यवंश

   (ग) पुष्यभूति   (घ) मौखरी वंश

3. मेहरौली के लौह स्तंभ से किस राजा के बारे में जानकारी मिलती है?

   (क) हर्षवर्धन   (ख) चन्द्रगुप्त द्वितीय

   (ग) चन्द्रगुप्त मौर्य   (घ) चन्द्रगुप्त प्रथम

4. नालन्दा विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को प्रवेश कैसे मिलता था?

   (क) राजा के कहने पर   (ख) सवाल पूछकर ;जांच परीक्षा द्वारा

   (ग) पैसा लेकर   (घ) राजा के कर्मचारियों को

5. एहोल अभिलेख किस राजा की प्रशस्ति है?

   (क) नरसिंह वर्मन   (ख) पुलकेशिन द्वितीय

   (ग) हर्षवर्धन   (घ) समुद्रगुप्त

vkvk ;kn djs

1. समुद्रगुप्त एवं पुलकेशिन द्वितीय की प्रशस्ति के बारे में तीन–तीन पंक्ति लिखें।
2. हर्ष के बारे में हमें किन स्रोतों से जानकारी मिलती है?हर्ष के बारे में पांच पंक्ति लिखें।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

3. पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष को क्यों पराजित किया?इसकी जानकारी हमें कैसे मिलती है?

vkvk djd n[k

4. समुद्र गुप्त ने जीते हुए राज्यों (राजाओं) के साथ अलग–अलग नीतियों को क्यों अपनाया। वर्ग में अलग–अलग समूह बनाकर चर्चा करें और प्रत्येक ग्रुप, दो–दो कारणों को ढूंढें।

5. समुद्रगुप्त के सिक्के को देखकर जैसा कि पुस्तक में दिया हुआ। यह जानने की कोशिश करो कि उसके अन्दर कौन–कौन गुण थे।

6. दक्षिण भारत के राजवंशों के बारे में लिखो। उनका ग्राम प्रशासन कैसे चलता था? क्या आपके गाँव या शहर में भी वैसी व्यवस्था है?

7. आप अपने पिताजी की मदद से / परिवार के किसी सदस्य की मदद से परिवार या पड़ोस के एक परिवार की पांच पीढ़ी के सदस्यों का नाम लिखें।

8. राजा के लिए सेना क्यों आवश्यक था? सेनाओं के राजा के साथ चलने से कौन–कौन सी लाभ एवं हानियां थी। वर्ग में समूह बनाकर चर्चा करें।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय-13

संस्कृति और विज्ञान

Jfr d loky & Jrh viu firk th d lkFk iVuk e E;ft;e n[ku xbA ogk dh ,d efŸk ij mldh utj fVd xbA mlu viu firk th l iNk& ;g fdldh efŸk g\ bl dc cuk;k x;k gkxk \

भारत के इतिहास में चौथी से सातवीं सदी के बीच का समय सांस्कृतिक और वैज्ञानिक प्रगति के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। इन चार सौ वर्षों में समाज, धर्म, कला, साहित्य, विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में ऐसे कई कार्य हुए जिसे आज भी याद रखा जाता है।

ijk.k&ekgdk0; dky&pkFkh lnh d प्रारम्भ से lkroha सदी तक e/; rd dk le; ftle jkek;.k] egkHkारत, पुराणों एवं तमिल rkfgR;k dk vfre :i ls ldfyr fd;k गया। इस काल में अन्; ykfdd egkdk0;k ¼xj /kkfed lkfgR;k½ dh Hkh रचना हुई। इन fy, bl dky dk ekdk0; dky dgr gA

dyk ,o lkfहित्य–

यह काल साहित्य रचना की दृष्टि से काफी समृद्ध रहा है। इस काल में कई धार्मिक एवं लौकिक साहित्यों की रचना हुई। इन पुस्तकों में स्त्रियों एवं पुरुषों की वीर गाथाओं तथा देवताओं से संबंधित कहानियों को बड़े ही स्वभाविक तरीके से लिखा गया है।

पुराणों की रचना इसी काल में हुई थी। पुराणों से हमें धार्मिक–सामाजिक कहानियों के अतिरिक्त राजवंशों की वंशावली भी मिलती है। हिन्दू रीति–रिवाज एवं कानूनों से संबंधित कई पुस्तकों की रचना इसी काल में हुई। यद्यपि रामायण और महाभारत की रचना कई सौ वर्षों में हुई लेकिन इसे अंतिम रूप से पुराणों की तरह इसी समय संकलित किया गया।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

dqekj lHkoe~ esa f'ko&ikoZrh ds izse vkSj iz.k; n`';ksa dk o.kZu gSA ikoZrh us f'ko dks ikus ds fy, tks dBksj riL;k dh Fkh] mldk cMk gh jkspd ,oa lthoo.kZu bl iqLrd esa fd;k x;k gSA

गुप्तकाल में कई ऐसे दरबारी कवि थे जिनकी रचनाएँ तो हमें प्राप्त नहीं होती हैं लेकिन उनकी रचनाओं के अभिलेखीय प्रमाण मौजूद हैं। आप हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति के बारे में पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं। ये काव्यशैली में काली दास की तरह थे।

इस काल के महानत्म रचनाकार कालिदास है जिन्होंने कविता एवं नाटक दोनों ही क्षेत्रों में कई पुस्तकों को लिखा। कालिदास के नाटक सुखांत और प्रेम–प्रधान हैं। इनकी रचनाओं में ऋतुसंहार, मेघदूतम्, कुमार संभ्वम् ओर रघुवंशम् हैं। कालिदास अपने नाटकों में भाषा का चुनाव पात्र की सामाजिक स्थिति के अनुसार करते थे। उच्च सामाजिक स्तर के पात्र संस्कृत बोलते थे जबकि निम्न सामाजिक स्तर के पात्र एवं स्त्रियाँ प्रायः प्राकृत तथा अन्य स्थानीय भाषा का प्रयोग करती थी। कालिदास की रचना 'अभिज्ञान शकुन्तलम्' साहित्य और नाट्य कला दोनों ही दृष्टि से बेजोड़ है 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक शुंगवंश के इतिहास पर आधारित है।

इस काल के नाटकों में शुद्रक की रचना 'मृच्छकटिकम्' अन्य काव्यों की तरह नहीं है क्योंकि इसमें राजकीय जीवन एवं महाकाव्यों के प्रसंगों की बात नहीं की गई है। इसका नायक दरिद्र ब्राह्मण सार्थवाह चारूदत है एवं नायिका वसंत सेना नाम की गायिका (वेश्या) है। इस नाटक के सभी पात्र अपने–अपने क्षेत्र की स्थानीय भाषा बोलते हैं, जो वास्तविक जीवन के ज्यादा करीब दिखाई देता है। इस नाटक के सभी पत्रों की भाषा बड़ी सहज है, लेकिन उनमें भरपूर संवेदना भी दिखाई देती है। इसमें समाज के सभी वर्गों राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, चोर, घूर्त, दास आदि का सहज चित्रण है।

विशाखादत्त ने मुद्राराक्षस एवं देवी चंद्रगुप्तम् नामक दो ऐतिहासिक नाटकों की रचना की। मुद्राराक्षस में जहाँ चाणक्य की योजनाओं का वर्णन है, वहीं देवी चंद्रगुप्तम् में शकाधिपति एवं रामगुप्त का चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा वध एवं ध्रुवदेवी के साथ विवाह का चित्रण

BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

है। इस प्रसंग को आप पिछले अध्याय में भी पढ़े हैं।

स्वयं हर्षवर्द्धन भी उच्च कोटि का नाटककार था। इसने नागानंद, रत्नावली एवं प्रियदर्शिका नामक तीन नाटकों की रचना की। यह संस्कृत के गद्य साहित्य का सर्वोत्तम उदाहरण है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के नौरत्नों में से एक अमर सिंह ने अमरकोष (संस्कृत शब्दकोष) की रचना की। वात्स्यायन का कामसूत्र भी इस काल का प्रसिद्ध लौकिक ग्रंथ है। इसमें व्यवहारिक जीवन के सभी पक्षों का तार्किक विवेचन किया गया है। इसमें नागरिकों के लिए अच्छे व्यवहार, संगीत, नृत्य, गीत आदि की शिक्षा से संबंधित चर्चा है। इसमें संपन्न नागरिक के दैनिक जीवन का वर्णन किया गया है।

इसी समय दक्षिण भारत में भी कई महाकाव्यों की भी रचनाएँ हुईं, जिसे संगम–साहित्य के नाम से जाना जाता है। इन ग्रंथों की रचना तमिल भाषा में की गई। इलंगो नामक कवि ने सिलप्पदिकारम् की रचना की। इसमें कोवलन् नामक व्यापारी का उल्लेख है जो अपनी पत्नी कन्नगी को छोड़कर माधवी नाम की वेश्या से प्रेम करता है। राज–जौहरी के द्वार चोरी का झूठा आरोप लगाने पर राजा के द्वारा उसे प्राणदंड दे दिया गया। इसकी पत्नी कन्नगी ने अन्याय के विरोध में मदुरा शहर का नाश कर डाला। मणिमेखलई लगभग 400 वर्षों के बाद तमिल भाषा में ही सत्तनार द्वार लिखा गया इसमें कोवलन् और माधवी की बेटी की कहानी है।

आम लोगों के द्वार भी कहानी, कविता, गीत एवं नाटक लिखें जाते थे। इनमें से कुछ शिक्षाप्रद कहानियों का संकलन जातक साहित्य एवं पंचतंत्र में संकलित है। जातक कथाएँ स्तूपों की रेलिगों एवं अजंता के चित्रों में दर्शाया गया है।

okLr|dyk@LFkkiR; dyk

इस समय साहित्य के साथ–साथ वास्तुकला के क्षेत्र में भी कई उपलब्धियाँ हासिल की गईं। इस समय के बनाए गए बौद्ध विहार एवं मठ आज भी विद्यमान है। हालांकि मंदिर–निर्माण की प्रक्रिया इसी समय शुरू हुई थी लेकिन मंदिरों के पर्याप्त अवशेष हमें नहीं मिलते हैं। दक्षिण भारत में भी मठ–मंदिरों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो गई थी।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

मंदिर निर्माण की शुरूआत गर्भगृह से होती थी, जिसमें देवताओं की मूर्त्ति रखी जाती थी। गर्भगृह तक पहुँचने के लिए एक दालान होता था जिसमें एक सभा से होकर गुजरना पड़ता था। सभा भवन का द्वार ड्योढी में निकलता था। भवन के चारो ओर दीवार युक्त आंगन होता था। इस आंगन में आगे चलकर छोटे–छोटे मंदिरों का निर्माण कर अन्य देवताओं की मूत्तियाँ स्थापित की जाने लगी। इस समय के अधिकांश मंदिरों में शिखर नहीं बनते थे लेकिन शिखर निर्माण की शुरूआत भी इसी समय हो चुकी थी। मंदिर का निर्माण चबुतरे पर किया जाता था। उपर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ बनी होती थीं। मंदिरों के द्वार और स्तंभ सुसज्जित होते थे।

vc vki viu xko@egYys d efnj d ckj e dN crk,A

xIrdky dk IokRd"V efnj >kIh

¼mŸkjin'k½ ftys e nox< dk n'korkj efnj gA ;g वैष्णव धर्म I IcfU/kr okLrdyk dk egRoiw.k mnkgj.k है। b"V मंदिर के fuek.k e xIrdkyhu LFkkiR; dyk dk विकसित रूप दिखाई nrk gA efnj dk f'k[kj 12 ehVj Åpk g जो सम्भवत: मंदिर पर f'k[kj fuek.k dk igyk mngkj.k gA bI efnj e चार मंडप हैं tk pkjk fn'kkvk e gA xHkxg ¼tgk efŸk;k jgrh g½ d द्वार पर fufer LrHk efŸk;k I vyd`r gA

n'korkj efnj

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

,j.k e cjkg vkj fo".kq dk efnj gA xqIrdky e fgUnw efnjk dk vfrfjDr ck) fogkjk] pR;k ,o Lrwik dk fuekZ.k gqvkA lkjukFk e /kkes[k Lrwi dk fuekZ.k bIVk ls gqvk FkkA blds vk/kkj vU; Lrwik dh rjg oxkZdkj u gksdj xksykdkj gA Lrwi dh dqy Å¡pkbZ 128 QqV gA blesa vU; Lrwik dh rjg pcwrjk ugha gA ;g /kjkry ij gh fufeZr gA Lrwi dh nhokjk

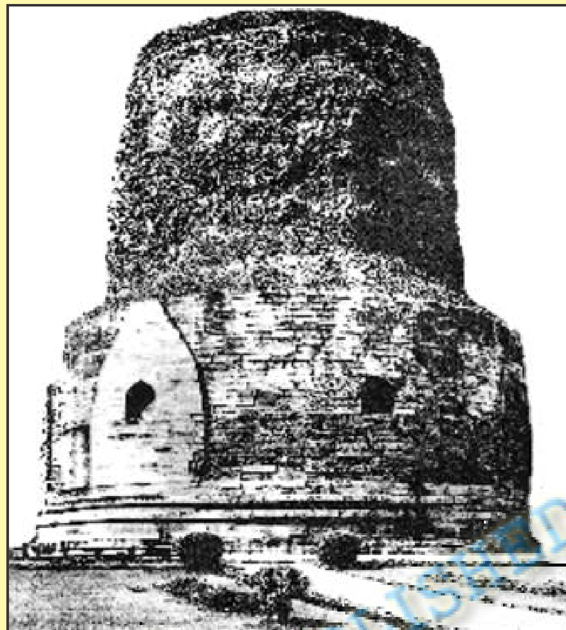

सारनाथ का धमेख स्तूप

ij ck) ifrekvksa,oa j[ku dk fy, LFkान बने हुए हैं। यह कला iuk] vkdkj ,oa l tkoV e mRd"V dkfV की है।

इस काल के गुहामंदिरों का सर्वश्रेष्ठ नमूना उदयगिरि का गुहामंदिर है। इसे चन्द्रगुप्त द्वितीय का सेनापति वीरसेन ने बनवाया था। इसके भीतर एक गर्भगृह तथा उसके सामने मंडप है। इसमें वराह अवतार की विशाल मूर्त्ति उत्कीर्ण है। दीवारों पर अलंकरण एवं पच्चीकारी भी है।

mn;fxfj d xgk efnj

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

बौद्ध गुहा मंदिरों में अजन्ता, बाघ, एवं सितनवासल की गुफाएँ महत्वपूर्ण हैं। ये गुफाएँ काफी लम्बी हैं। पहले के गुफाओं के विपरीत इस काल की गुफाएँ अलंकृत मिलती हैं। गुफा मंदिरों में बौद्ध धर्मावलम्बी पूजा करने के लिए आते थे।

efŸkdyk

मूर्तिकला के क्षेत्र में चौथी से सातवीं सदी के बीच मथुरा, सारनाथ और पाटलिपुत्र महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उभरा। कुषाण कालीन मूर्तियों में जहाँ शरीर के सौंदर्य का निरूपण किया गया था, वहीं गुप्तकाल में मूर्तिकारों ने मोटे वस्त्र सज्जा का प्रदर्शन किया। मूर्तियों के सुसज्जित आभामंडल बनाए गए। देवी–देवताओं को मानव का रूप दिया गया। इस काल की मूर्तिकला पर गंधार शैली की अपेक्षा मथुरा शैली का प्रभाव अधिक दिखता है। इस काल में बुद्ध की प्रतिभाओं के साथ–साथ विष्णु की भी मूर्तियाँ बनाई गईं।

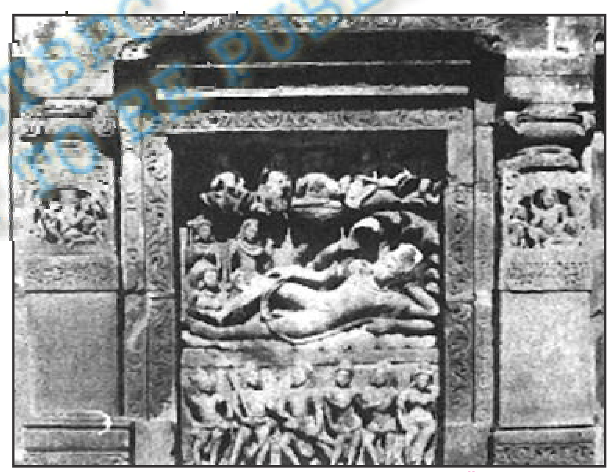
'k"k'kk;h Hkxoku fo".k dh efŸk

विष्णु की यह प्रसिद्ध मूर्ति देवगढ़ के दशावतार मंदिर में है। इस मूर्ति में भगवान विष्णु को शेषनाग की शैय्या पर आराम की मुद्रा में दिखाया गया है। वे कुंडल, मुकुट, माला, हार, कंगन आदि से सुशोभित हैं। इनके एक ओर शिव और इन्द्र की मूर्ति है समीप में दो शस्त्रधारी पुरूष हैं। कार्तिकेय मयूर पर आसीन हैं तथा नाभि से निकले कमल पर चार मुख वाले ब्रह्मा विराजमान हैं। लक्ष्मी पैर दबा रही है। काशी से गोबर्धन पर्वत को गेंद के समान उठाए श्री कृष्ण की भी मूर्ति मिली है।

© RSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

इस काल की बौद्ध मूर्तियों में सजीवता एवं मौलिकता दिखाई देती है। भगवान बुद्ध के मूर्तियों के बाल घुंघराले, उनके आभामंडल अलंकृत एवं मुद्राओं में विविधता है। इस काल की मथुरा संग्रहालय की बुद्ध मूर्ति एवं सुल्तानगंज से प्राप्त ताँबे की मूर्ति जो साढ़े सात फीट ऊँची है, बहुत महत्वपूर्ण है।

fp=dyk

c) dh ifrek ,o fp=कारी के दृश्य

इस काल के चित्रकला का सबसे अच्छा उदहारण अजंता की गुफाओं में मिले भित्ति हैं। इसमें तीन तरह के चित्रों की प्रधनता है। प्रथम गुफा की छत एवं कोने को सजाने के लिए प्राकृतिक सौंदर्य जैसे–वृक्ष, पर्वत, नदी, झरने, पशु–पक्षी तथा रिक्त स्थानों को भरने के लिए अप्सराओं, गंधर्वो एवं यज्ञों का चित्रण किया जाता था। द्वितीय– बुद्ध एवं बोधिसत्व के चित्र, तृतीय– जातक कथाओं में वर्णित दृश्य।

अजंता के चित्रों में रंगों का बड़ा ही सुन्दर मिश्रण देखने को मिलता है। इन चित्रों में अपने बालक के साथ अंधे तपस्वी माता–पिता, मरणासन्न राजकुमारी ज्ञान प्राप्ति के बाद यशोधरा ओर राहुल का मिलन आदि।

ej.kklUu jktdekjh ¼vtUrk dh xQk½

अजंता की चित्रकारी में जहाँ धार्मिक दृश्यों की प्रधानता है, वही बाघ की गुफाओं में सांसारिक (लौकिक) विषयों का चित्रण है। इन चित्रों से उस समय की वेश–भूषा, केश–सज्जा एवं अलंकरण (सजावट) सामग्री की जानकारी मिलती है। यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण चित्र संगीत एवं नृत्य से संबंधित है। भगवान बुद्ध से संबंधित भी कुछ चित्र है लेकिन

© WEBCOPY, NOT TO BE REPUBLISHED

अधिकांश चित्र धार्मिक विषयों से हटकर जैसे नृत्य–गान, राजकीय जूलूस , हाथी–दौड़, शोकाकुल युवती आदि की है।

इन सभी चित्रों को राजकीय संरक्षणमें बनाया गया। जिन शिल्पकारों के द्वारा ये चित्र बनाए गए उनके बारे में हमें जानकारी नहीं मिलती है। इन्हें बनाने में काफी घन खर्च किए गए होंगे। उपरोक्त चित्रों के अतिरिक्त सिक्कों पर भी चित्रकारी की गई है जिन्हें आप पिछले अध्याय में देख चुके हैं। इन सिक्कों में समुद्रगुप्त वीणावादक एवं व्याघ्रपराक्रमांक रूप में दिखाया गया है।

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

ck?k dh xQk dk fp=dkjh dk n';

उस समय के मंदिरों के दरवाजे पर जो स्तंभ हैं उन पर भी देवी–देवता के चित्रों को बड़े सजीव ढंग से उकेरा गया है।

foKku ,oa rduhd

चौथी से सातवीं सदी के बीच विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई। इस समय आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भाष्कर प्रथम एवं ब्रह्मगुप्त जैसे–गणितज्ञ और ज्योतिष विद्या क विद्वान हुए। आर्यभट्ट इस काल के महान वैज्ञानिक थे जिन्होंने शून्य का संख्या के रूप में सबसे पहले प्रयोग किया। इन्होंने यह भी बताया कि पृथ्वी गोल है और यह अपनी धूरी पर

घूमती है। इसका छाया चन्द्रमा पर जब पड़ती है तो 'ग्रहण' लगता है। इनकी रचना आर्यभट्टीय है। इनकी कर्मभूमि बिहार में पटना के नजदीक तारेगना (मसौढ़ी) नामक स्थान पर थी।

आयुर्वेद के विद्वान और चिकित्सक धनवन्तरी चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में थे। इस काल में मनुष्यों के साथ–साथ जानवरों की भी चिकित्सा होती थी। नागार्जुन रासायनशास्त्र एवं धातुविज्ञान के जानकार थे इन्होंने सोना, चांदी, तांबा आदि के प्रयोग से रोगों के इलाज का उपाय बताया।

इस काल में धातु संबंधी ज्ञान की भी अच्छी प्रगति हुई। इस तकनीक के विकास में शिल्प समुदाय का सराहनीय योगदान था। जैसा कि हमने (अध्याय–12 में) देखा है कि धातुकला के मुख्य अवशेष कुतुबमीनार परिसर में मेहरौली का लौह स्तंभ है। इसमें ऐसी तकनीक का प्रयोग हुआ है कि आज तक यह जंग से सुरक्षित है। इसकी जानकारी हमें नहीं है कि उस समय लोगों ने धातुविज्ञान को इतना विकसित कैसे किया। भागलपुर जिले (बिहार) के सुल्तानगंज से प्राप्त बुद्ध की साढ़े सात फीट की प्रतिमा (मूर्त्ति) भी धातु विज्ञान का उत्तम नमूना है। यह लगभग 1 टन की है।

धातु विज्ञान की प्रगति सिक्कों और मोहरों के निर्माण में भी देखने को मिलती है। इसकाल के स्वर्ण सिक्कों में मिलावट की सुन्दर तकनीक का प्रयोग किया गया था। तत्कालीन धातुकला का ज्ञान हमें उस समय कें आभूषणों से भी मिलते हैं।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

vkvk ;kn djsa ¼lgh mÙkj dk pquko½

1. अभिज्ञान शाकुन्तलम् की रचना कालीदास ने की। यह क्या है?

   (क) उपन्यास (ख) नाटक

   (ग) कहानी (घ) कविता

2. मंदिर के महत्वपूर्ण भाग जहां देवताओं की प्रतिमा रखी जाती थी।

   (क) प्रदक्षिणापथ (ख) गोपुरम्

   (ग) गर्भगृह (घ) दालान

3. दशावतार मंदिर में किस देवता की प्रतिमा है?

   (क) विष्णु (ख) शिव

   (ग) बुद्ध (घ) ब्रह्मा

4. इनमें से सबसे पहले किस पुस्तक की रचना हुई?

   (क) ऋगवेद (ख) रामायण

   (ग) महाभारत (घ) पुराण

5. इनमें से तमिल साहित्य कौन है ?

   (क) देवी चंद्रगुप्तम (ख) कुमार संभवम्

   (ग) मृच्छकटिकम (घ) सिलपदिकारम

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

fuEufyf[kr iz'uksa ds mÙkj nsa

1. दिल्ली (मेहरौली) के लौह स्तंभ के बारे में पांच वाक्यों में लिखें ।
2. ऐतिहासिक महत्व के दो इमारतों के बारे में नाम के साथ पांच पंक्तियां लिखें?
3. बौद्ध–विहार से क्या समझते हैं?यह किस धर्म से संबंधित है?

vkvks ppkZ djsa%

4. अपने गांव के मंदिर में जाकर उनकी तुलना किसी प्राचीन मंदिर से करें। इसमें आप अपने परिवार के किसी सदस्य की मदद ले सकते हैं।

5. अजंता की गुपफाएं कहां हैं। शिक्षक की सहायता से इनके महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

6. किसी दो महत्वपूर्ण महाकाव्यों के बारे में अपने घर/विद्यालय में चर्चा करें।

7. किसी जातक कथा के विषय में अपने परिवार के किसी सदस्य या शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें, जो आपको नैतिक शिक्षा प्राप्त करने में मददगार साबित होगा।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय-14

हमारे इतिहासकार

då ihå t;loky] ,å ,lå vYrdj

करीम का सवाल—पटना जिला स्थित मध्य विद्यालय अकबरपुर, के बच्चे पटना में कुम्हरार (मौर्यकालीन अवशेष) घुमने आये हुए थे। कुछ बच्चों की नजर चमकीले लाल—पत्थर के स्तंभ पर गई। एक बच्चे ने अपने शिक्षक से पूछा—सर, क्या यह अशोक का वही स्तंभ है जिसके बारे में हम अध्याय 9 में पढ़ चुके हैं। शिक्षक ने कहा—हाँ, यह खुदाई से निकली है। तपाक से करीम ने पूछा—यह खुदाई किनके द्वारा और क्यों कराई जाती है?शिक्षक ने करीम की जिज्ञासा को शांत करते हुए कहा—इतिहासकार खुदाई में मिले इन्हीं अवशेषों के आधार पर हमारे अतीत (इतिहास) के बारे में जानकारी देते हैं। आप अध्याय—14 में बिहार के दो ऐसे ही महान इतिहासकार के बारे में जानेंगे।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

dk'kh izlkn t;loky ¼1882—1937½

काशी प्रसाद जयसवाल मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। लेकिन इनकी कर्मभूमि पटना थी। ये पेशे से तो अधिवक्ता (वकील) थे लेकिन इनकी ख्याति भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के महान् विद्वान के रूप में ज्यादा हुई। हिन्दू राजतंत्र (प्रचीन भारतीय राजतंत्र) पर इनके विचारों, लेखों एवं पुस्तकों ने इतिहास लेखन में क्रांति ला दी। कई पुराने विचार समाप्त हो गए।

काशी प्रसाद जयसवाल की आर्थिक स्थिति बचपन में अच्छी नहीं थी। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इनके घर पर ही लंदन मिशन (आजकल बाबूलाल जायसवाल) हाई स्कूल में हुई। इनके व्यक्तित्व पर भारतीय स्वाधीनता संग्राम का जबरदस्त प्रभाव पड़ा। इनका मन पैतृक व्यवसाय में नहीं लगा तब इन्होंने 25 वर्ष की आयु में इंग्लैंड जाकर पढ़ने की इच्छा व्यक्त

की। इन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से इतिहास में एम०ए० की डिग्री हासिल की। अगले वर्ष बैरिस्ट्री भी पास की। लंदन में ही इनका सम्पर्क श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, सावरकर आदि से हुआ।

1910 ई0 में स्वदेश लौटकर कलकत्ता में इन्होंने वकालत शुरू किया। आगे चलकर कलकत्ता विश्वविद्यालय में इतिहास पढ़ाने लगे। परन्तु क्रांतिकारी विचारों के कारण इन्हें सरकार ने पद त्याग करने के लिए बाध्य कर दिया। फिर 1919 ई० में इनसे पटना विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग का 'रीडर' बनने का आग्रह किया गया। अंततः पारिवारिक आवश्यकताओं एवं सरकार की गलत नीतियों के कारण उन्हें विश्वविद्यालय छोड़कर वकालत से ही अपनी जीविका चलानी पड़ी। ये 'हिन्दू कानून के मर्मज्ञ' एवं 'आयकर के विशेषज्ञ' वकील थे। अपनी सारी व्यस्तताओं के बावजूद प्राचीन भारतीय इतिहास पर शोधकार्य करते रहे।

जयसवाल साहब पुरालिपि और प्राचीन मुद्रा के ज्ञाता थे। ये अपनी जेब में 'अनपढ़ा प्राचीन सिक्का' भी रखते थे ताकि फुर्सत के क्षण में इसे पढ़ा जा सके। मनु और याज्ञवल्क्य स्मृति पर कई शोधकार्य करके इन्होंने ' हिन्दू कानून पर मर्मज्ञता हासिल की।

जयसवाल साहब बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी के संस्थापक सदस्य थे। इस संस्था द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका के आजीवन सम्पादक भी रहे। पटना संग्रहालय की स्थापना भी इन्हीं के प्रयासों का परिणाम है। इस संग्रहालय का भवन मुगल–राजपुत कला का सुन्दर उदाहरण है। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में बिहार इतिहास परिषद् की भी इन्होंने स्थापना की। ये कई समितियों के सदस्य रहे एवं कई पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। ये काफी निर्भिक और मिलनसार व्यक्ति थे। इनके साथ राहुल सांकृत्यान, रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं रामधारी सिंह दिनकर के काफी नजदीकी संबंध थे। ये कई सम्मेलनों एवं संस्थाओं के सदस्य एवं अध्यक्ष रहे।

1924 में इनकी पुस्तक 'हिन्दू पॉलिटी' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक ने भारतीय इतिहास को देखने के नजरिये में क्रांतिकारी परिर्वतन लाया। इन्होंने भारत के गौरवशाली अतीत को

उजागर करते हुए साबित किया कि भारत में प्रजातांत्रिक व्यवस्था उत्तर वैदिक काल से ही थी। इन्होंने अकाट्य तर्क दिया कि प्रचीन भारत में निरंकुश राजतंत्र नहीं था, बल्कि संवैधानिक एवं उत्तरदायी राजतंत्र था। इस पुस्तक के दो भाग हैं। प्रथम भाग में प्रजातंत्र का विवरण है और दूसरे भाग में राजतंत्र का विवरण है।

के० पी० जयसवाल की एक दूसरी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ इंडिया' (150 ई० से 350 ई० तक) 1930 में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में कुषाण साम्राज्य के अंत और गुप्त साम्राज्य के बीच की अवधि पर प्रकाश डाला गया। इन्होंने साहित्यिक ग्रंथ, अभिलेख एवं सिक्कों के आधार पर गुप्त साम्राज्य के पूर्व नाग एवं वकाटकों के इतिहास पर प्रकाश डाला। 1934 में प्रकाशित 'एन इम्पिरियल हिस्ट्री ऑफ इंडिया' के माध्यम से इन्होंने नेपाल के इतिहास पर भी प्रकाश डाला है।

मुद्रा शास्त्र पर भी इन्होंने कई शोध कार्य किए। 'हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में इन्होंने गंगा घाटी की बहुत सी मुद्राओं का विवेचन किया है। इन्होंने कुछ मुद्राओं का संबंध मौर्यों के साथ स्थापित कर नए विचार का प्रतिपादन किया जो आज भी आलोचनाओं के बावजूद मान्य है।

अभिलेखों के अध्ययन में जयसवाल साहब का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य खारवेल के अभिलेख संबंधी विवाद को सुलझाना है। इसके अतिरिक्त इन्होंने अशोक के अभिलेख एवं राज्यरोहण की तिथि. ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति तथा भुवनेश्वर मंदिर के अभिलेखों का सम्पादन, अयोध्या का शुंग अभिलेख, समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख, मुहरों का अध्ययन तथा अनेक अभिलेखों का तिथिक्रम के अनुसार उसकी व्याख्या प्रस्तुत कर इतिहास लेखन को सुगम बनाया।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

डॉ० जयसवाल परम्परावादी इतिहासकार नहीं थे। इनके अन्दर पाश्चात इतिहासकारों की तरह वैज्ञानिक दृष्टि थी। इनके इतिहास लेखन में अधिवक्ता की पद्धति हावी थी। ये ऐतिहासिक घटनाओं के सभी पक्षों एवं कारणों की समीक्षा के पश्चात् ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचते थे। इन्होंने स्मिथ के विचारों का खण्डन, साक्ष्यों के संतुलित उपयोग के आधार पर किया। ये इतिहास लेखन में स्रोतों के तुलनात्मक अध्ययन क पश्चात ही किसी अंतिम निष्कर्ष पर पहुँचते थे।

काशी प्रसाद जयसवाल के इतिहास लेखन में हिन्दू विचार, दर्शन, धर्म, शासन, गणराज्य एवं सामाजिक व्यवस्था को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इनके इतिहास लेखन में मौलिकता और राष्ट्रीय स्वाभिमान की भी झलक मिलती है, जो भारतीयों को सदैव गौरवान्वित करता रहेगा। इन्होंने विपरित परिस्थिति (परतंत्र भारत) में जितना कार्य इतिहास लखेन के क्षेत्र में किया वह अत्यंत सराहनीय है।

Mkå vur lnkf'ko vYrdj

डॉ० अनंत सदाशिव अल्तेकर महान पुरातत्वविद् एवं इतिहासकार थे। पटना विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के खुलने पर इन्होंने संस्थापक अध्यक्ष के रूप में अपना योगदान दिया। ये काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान के संस्थापक निदेशक एवं राष्ट्रभाषा परिषद् के सदस्य भी थे।

डॉ० अल्तेकर ने पटना वि० वि० में योगदान के पूर्व बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पुरातत्व, मुद्राशास्त्र एवं सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्रशंसनीय कार्य किया। इन्होंने वैशाली के ऐतिहासिक महत्व को उजागर करने के लिए 'वैशाली का अंधकार युग' पर अपना शोध प्रस्तुत किया। इन्होंने वैशाली की खुदाई कर भगवान बुद्ध के शरीरवशेष स्तूप को दुनिया के सामने लाया। अल्तेकर द्वारा किए गए कार्यो का ऐतिहासिक महत्व बढ़ गया।

बिहार के राज्यपाल आर० आर० दिवाकर द्वारा संपादित पुस्तक 'बिहार थ्रू द एजेज' के प्रकाशन में डॉ० अल्तेकर का महत्वपूर्ण योगदान रहा। यह पुस्तक बिहार की गरिमा को रेखांकित करने में काफी सफल रहा। डॉ० अल्तेकर बिहार सरकार के अनुरोध पर बिहार का संपूर्ण इतिहास लिखने की योजना बना रहे थे कि इनका असामयिक निधन हो गया। इनकी योजना को बाद के इतिहासकारों ने पूरा किया।

डॉ0 अल्तेकर पटना विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण करने के बाद के० पी० जयसवाल शोध संस्थान के पूर्णकालिक निदेशक बने और जीवन पर्यन्त रहे। डॉ० अल्तेकर न्यूमिस्मेटिक सोसाइटी सहित कई संस्थाओं के अध्यक्ष एवं सदस्य रहे एवं कई पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। डॉ० योगेन्द्र मिश्र ने अपना शोधग्रंथ 'ऐन अर्ली हिस्ट्री

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

ऑफ वैशाली' उन्हीं को समर्पित किया। न्यूमिस्मेटिक सोसाइटी ने तो अपने भवन का नाम ही 'अल्तेकर भवन' रखा है।

डॉ० अल्तेकर छात्र जीवन से ही प्रतिभा सम्पन्न एवं अत्यंत मेधावी थे। इन्होंने बम्बई विश्वविद्यालय से संस्कृत में 'चांसलर मेडल' प्राप्त किया एवं एल०एल०बी० के लिए लारेन्स जेकिन्स स्कॉलरशिप भी प्राप्त किया। इनकी नियुक्ति बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के भारतीय संस्कृति विभाग में संस्कृत के अध्यापक के रूप में हुई। इन्होंने राष्ट्रकूटों के इतिहास पर डी०आर० बनर्जी के निर्देशन में डी० लिट् की उपाधि प्राप्त की। इनका शोध प्रबंध, पुराभिलेखों और साहित्यिक स्रोतों पर आधारित था। इसके कारण इनकी ख्याति एक इतिहासकार के रूप में फैली। अपने अथक प्रयास से इन्होंने 21 पुस्तक और लगभग 200 शोध पत्र प्रकाशित कराया। मुद्रा शास्त्र में इनकी रूचि एवं विशेषज्ञता ने पटना विश्वविद्यालय को गुप्तकालीन स्वर्णमुद्राओं से समृद्ध कर दिया। स्वतंत्रता के पूर्व इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने इन्हें इनकी पुस्तक 'प्राचीन भारतीय शासन पद्धति' के लिए एक हजार मुद्रा का पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार ग्रहण करते वक्त इन्होंने कहा था, ''मैंने राष्ट्रभाषा समझकर हिन्दी की सेवा की है, आर्थिक लाभ के लिए नहीं।'' राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति इनमें अगाध प्रेम था।

इन्हें 1954 में अमेरिका में अतिथि व्याख्याता के रूप में बुलाया गया। इसी वर्ष भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान देने वेस्टइंडीज भी गए। डॉ० अल्तेकर इतिहास लेखन में किसी वाद से नहीं बंधे हुए थे। ये प्रत्येक क्षण व्यस्त रहने में विश्वास करते थे जिसके कारण इन्हें 'हड़बड़िया' भी कहा गया। इनका मानना था कि जब किसी पुस्तक की पांडुलिपि तैयार हो जाए तो इसे प्रकाशित कर देना चाहिए। इन्हें संवारने का कार्य नए शोध प्रज्ञों पर छोड़ देना चाहिए। अल्तेकर के शोध का आधार मूलतः साहित्यिक स्रोत था लेकिन ये पुराभिलेखों एवं मुद्राशास्त्र के भी ज्ञाता थे। पुरातत्व के क्षेत्र में इन्होंने बिहार में सर्वाधिक कार्य किया।

अल्तेकर रूढ़ीवादी नहीं थे। नारियों के प्रति इनका दृष्टिकोण उदार था। नारियों की दशा पर उनके द्वारा रचित पुस्तक से यह साफ पता चलता है। इनके गाँव में घटित सती की

घटना ने इन्हें काफी प्रेरित किया था। इन्होंने इलाहाबाद के 'लीडर' पत्र में एक लेख छपवाया जिसमें यह साबित किया गया था कि वेद पढ़ने का अधिकार स्त्रियों और शुद्रों को भी है। यह लेख उसी समय प्रकाशित हुआ जब एक शुद्र लड़की बी०एच०यू० के प्राच्य विभाग में अध्ययन करना चाहती थी। इस कारण इस लेख की चर्चा काशी में खूब हुई।

डॉ० अल्तेकर ने पं० राहुल सांकृत्यान द्वारा संगृहीत पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के लिए काफी मेहनत किया। इस कार्य में इन्हें बलदेव मिश्र का अपेक्षित सहयोग मिला।

इनके संबंध में जगदीश चन्द्र माथुर ने अपने संस्मरण में लिखा है कि 'मैं अक्सर ताज्जुब करता था कि डॉ० अल्तेकर ने अपने सभी ग्रंथ भारत में ही क्यों छपवाए, जबकि उनकी इतिहास विषयक रचनाएँ विश्वस्तरीय थीं। क्योंकि इंग्लैंड या अमेरिका में प्रकाशित ग्रंथों की जो प्रतिष्ठा थी, वह भारत में प्रकाशित ग्रंथों की नहीं थी। क्या डॉ० अल्तेकर इस बात को नहीं समझ सके। एक बार पूछने पर उन्होंने कहा—बहुत पहले जब राष्ट्रीयता का दौर आया था तभी मैंने संकल्प लिया था कि इंग्लैंड में अपनी पुस्तकें नहीं छपवाऊँगा। आखिर इतने लोग महँगे विदेशी कपड़ों का बहिष्कार कर क्यों खादी को अपना रहे थे। मैं अपने ग्रंथों को तो देशी रूप दे सकता था। हालांकि अब परिस्थिति बदल गई है लेकिन संकल्प को कैसे तोड़ूँ। डॉ० अल्तेकर राष्ट्र प्रेम से सदैव अभिभूत रहते थे। वे खादी का वस्त्र भी धारण करते थे। इनका जीवन बिल्कुल सादा था। लेकिन शोध कार्य में कभी पीछे नहीं रहते थे।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED